40वाँ 40th
राष्ट्रीय फ़िल्म National
समारोह Film Festival
1993

संपादन
लता अनन्तरामन

EDITOR
LATHA ANANTHARAMAN

हिन्दी आलेख
सुरेंद्र लाल मल्होत्रा

HINDI TEXT
S.L. MALHOTRA

समन्वय
अजीत गुप्ता
रामपाल सिंह, मंजु खन्ना, विनोद बस्सी

Co-ordination
AJIT GUPTA
Rampal Singh, Manju Khanna, Vinod Bassi

Production
G.P. Dhusia
Manoj Ranjan

उत्पादन
जी.पी. धुसिया
मनोज रंजन

विदृप्रनि
davp

फ़िल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित। मुद्रक: तारा आर्ट प्रिंटर्स, नई दिल्ली 110002

Designed and produced for the Directorate of Film Festivals by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, Printed at Tara Art Printers, New Delhi 110002

विषय सूची

CONTENTS

	Page No.	
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	7	DADA SAHEB PHALKE AWARD
निर्णायक मण्डल	10	THE JURIES
कथाचित्र पुरस्कार	13	AWARDS FOR FEATURE FILMS
सर्वोत्तम कथाचित्र	14	Best Feature Film
सर्वोत्तम निर्देशन	16	Best Director
द्वितीय सर्वोत्तम कथाचित्र	18	Second Best Feature Film
निर्देशन के सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	20	Indira Gandhi Award for First Film of a Director
लोकप्रिय एवम् मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार	22	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
सर्वोत्तम पटकथा	24	Best Screenplay
सर्वोत्तम छायांकन	26	Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	28	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	30	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	32	Best Art Direction
सर्वोत्तम संगीत निर्देशना	34	Best Music Direction
सर्वोत्तम वेशभूषा	36	Best Costume Design
सर्वोत्तम अभिनेता	38	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	40	Best Actress
सर्वोत्तम सह-अभिनेता	42	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री	44	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल कलाकार	46	Best Child Artiste
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	48	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	50	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम गीत	52	Best Lyrics
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव	54	Best Special Effects
सर्वोत्तम नृत्य संयोजन	56	Best Choreography
सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र	58	Best Assamese Film
सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र	60	Best Bengali Film
सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र	62	Best Hindi Film
सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र	64	Best Kannada Film
सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र	66	Best Malayalam Film
सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र	68	Best Marathi Film

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र	70	Best Oriya Film
सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र	72	Best Tamil Film
सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र	74	Best Telugu Film
सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र	76	Best English Film
राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार	78	Nargis Dutt Award for Best Film on National Integration
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथाचित्र	80	Best Film on Family Welfare
अन्य सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र	82	Best Film on Social Issues
पर्यावरण पर सर्वोत्तम कथाचित्र	84	Best Film on Environment
सर्वोत्तम बाल कथाचित्र	86	Best Children's Film
निर्णायक मण्डल विशेष पुरस्कार	88	Special Jury Award
विशेष उल्लेख	90	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए और प्रविष्टियां, जो नहीं प्राप्त हुईं	92	Awards Not Given and Entries Not Received
गैर-कथाचित्र पुरस्कार	93	**AWARDS FOR NON-FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र पुरस्कार	94	Best Non-Feature Film
निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम गैर-कथाचित्र पुरस्कार	96	Best First Non-Feature Film of a Director
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानव जातीय फ़िल्म	98	Best Anthropological/Ethnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म	100	Best Biographical Film
सर्वोत्तम कला/संस्कृति फ़िल्म	102	Best Arts/Cultural Film
सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान सहित)	104	Best Scientific (Environment/Ecology) Film
सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिक्षण फ़िल्म	106	Best Environmental/Conservation/Preservation Film
सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म	108	Best Promotional Film
सर्वोत्तम कृषि फ़िल्म	110	Best Agricultural Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	112	Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म	114	Best Educational/Motivational/Instructional Film
सर्वोत्तम गवेषण/साहसी फ़िल्म	116	Best Exploration/Adventure Film
सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म	118	Best Investigative Film
सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म	120	Best Animation Film
निर्णायक मण्डल विशेष पुरस्कार	122	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म	124	Best Short Fiction Film
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म	126	Best Film on Family Welfare
सर्वोत्तम छायांकन	128	Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	130	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	132	Best Editing
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	134	Awards Not Given

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार	135	**AWARDS FOR WRITING ON CINEMA**
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक	136	Best Book on Cinema
सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक	138	Best Film Critic
कथासार : कथाचित्र	141	**SYNOPSES: FEATURE FILMS**
अंगार	142	Angaar
अंकुरम	143	Ankuram
भगवद् गीता	144	Bhagavad Gita
चेलुवी	145	Cheluvi
दामिनी	146	Damini
एक होता विदूषक	147	Ek Hota Vidushak
इलेक्ट्रिक मून	148	Electric Moon
हरकेया कूरि	149	Harakeya Kuri
जीवन चैत्रा	150	Jeevana Chaitra
माया मेमसाब	151	Maya Memsaab
मिस बेटीज़ चिल्ड्रन	152	Miss Beatty's Children
मुझसे दोस्ती करोगे	153	Mujhse Dosti Karoge
नींग नल्ला इरुक्कणम्	154	Neenga Nalla Irukkanum
पदमा नदीर माझी	155	Padma Nadir Majhi
पसंदा पंडित	156	Pasanda Pundit
रेलर-अलिर-दुबारी-बोन	157	Relar Alir Dubari Bon
रोजा	158	Roja
रूदाली	159	Rudali
सद्यम	160	Sadayam
सरगम	161	Sargam
श्वेत पाथरेर थाला	162	Shwet Paatharer Thaala
सूरज का सातवां घोड़ा	163	Suraj Ka Satvan Ghoda
स्वरूपम	164	Swaroopam
तहादेर कथा	165	Tahader Katha
तेवर मगन	166	Thevar Magan
विनया समया	167	Vinya Samaya
कथासार : गैर कथाचित्र	169	**SYNOPSES: NON-FEATURE FILMS**
अगर आप चाहें	170	Agar Aap Chahein
एन्टार्क्टिका—ए साइंटिस्ट पैराडाइज़	171	Antarctica—A Scientists' Paradise

बेर	172	Ber
चूड़ियां	173	Choodiyan
चुनौती	174	Chunauti
गाय की सच्चाई	175	Gaaye Ki Sachai
इन सर्च आफ इण्डियन थियेटर	176	In Search of Indian Theatre
कलरिपयट	177	Kalarippayat
नाक आऊट	178	Knock-Out
लदाख—द फोरबिडन वाइल्डरनेस	179	Ladakh—The Forbidden Wilderness
नट्टअनटीनटे साक्षी	180	Noottantinte Sakshi
पंडित भीमसेन जोशी	181	Pandit Bhimsain Joshi
राम के नाम	182	Ram Ke Naam
द रेक्लूस	183	The Recluse
साऊंड आफ द डाईंग कलरज़	184	Sound of the Dying Colours
सुचित्रा मित्रा	185	Suchitra Mitra
सुनो बहु रानी	186	Suno Bahu Rani
द थ्रेडज़	186	The Threads
टुवर्डस ज्वाय एंड फ्रीडम	187	Towards Joy and Freedom
वांगला—ए गारो फेस्टीवल	188	Wangala—A Garo Festival

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

Dada Saheb Phalke Award

दादा साहेब फ़ाल्के पुरस्कार 1992

भूपेन हज़ारिका

डा. भूपेन हज़ारिका का भारतीय संस्कृति के इतिहास में एक खुला अध्याय है। बहुविध प्रतिभाशाली, वे एक कवि, संगीतकार, गायक, अभिनेता, पत्रकार, लेखक और विख्यात फ़िल्म निर्माता हैं। वे असम फ़िल्म उद्योग के अगुआ हैं।

भूपेन हज़ारिका का जन्म 1926 में सादिया, असम में हुआ। उन्होंने **इन्द्रामालती** (1939) में बाल कलाकार के रूप में अपना फ़िल्मी व्यावसायिक जीवन शुरू किया, जोकि उस समय की बनाए जाने वाली दूसरी टाकी फ़िल्म थी। कला तथा राजनीति शास्त्र का अध्ययन करने के पश्चात् वे संयुक्त राज्य में गए और कोलम्बिया विश्वविद्यालय से सामूहिक-सम्प्रेषण में डाक्टर की उपाधि ली। वे जनजातीय तथा लोक संस्कृति में अपने योगदान के लिए बहुत प्रसिद्ध हो गए थे, जिसके लिए उन्हें इलीनर रूज़वेल्ट से स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

डॉ. हज़ारिका का नाम भारत के प्रख्यात फ़िल्म निर्माताओं में लिया जाता है। उन्होंने असम के अनुभवहीन फ़िल्म उद्योग का संवर्धन किया और बेहतर सिनेमा के लिए आंदोलन का प्रचार किया। उन्होंने **एरावतार सुर** (1964), **लोटीघोटी** (1967), **चिकमिक बजूली** (1971), **मौन प्रजापति** (1978), **स्वीकारोक्ति** (1986) और **सिराज** (1988) जैसी असमिया फ़िल्मों का निर्माण और निर्देशन किया, उनके लिए संगीत दिया तथा गीत गाए।

डा. हज़ारिका ने एक हज़ार से भी अधिक गीतों, लघु कहानियों, निबंधों, यात्रा–वृतांतों, कविताओं तथा बाल–गीतों की पंद्रह से भी अधिक पुस्तकें लिखी हैं। वे पिछली दो दशाब्दियों से सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिकाओं—**अमर प्रतिनिधि** तथा **प्रतिध्वनि** के पत्रकार और संपादक हैं।

डा. हज़ारिका को **शकुन्तला, प्रतिध्वनि** और **लोटीघोटी** के लिए तीन बार सर्वोत्तम फ़िल्म निर्माता का राष्ट्रपति का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। उन्हें सिनेमा तथा संगीत द्वारा जनजातीय कल्याण तथा जनजातीय संस्कृति के उत्थान में उनके योगदान के लिए 1977 में अरुणाचल प्रदेश सरकार का स्वर्ण पदक मिला। 1977 में उन्हें **चमेली मेमसाब** में सर्वोत्तम संगीतकार का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। उसी वर्ष, राष्ट्र ने भारतीय संस्कृति में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए डा. हज़ारिका को पद्मश्री के सर्वोच्च सम्मान से विभूषित किया। 1978 में उन्हें बंगलादेश पत्रकार संघ तथा बंगलादेश फ़िल्म उद्योग से फ़िल्म **सिमाना पेरिये** के सर्वोत्तम संगीत निर्देशक के दो पुरस्कार मिले।

भारतीय संगीत में अपने उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें 1978 में एक स्वर्ण चक्र मिला। 1979 तथा 1980 में उन्हें **मोहुआ सुंदरी** तथा **नागिनी कन्यार काहिनी** नाटकों के सर्वोत्तम संगीत निर्देश के रूप में रितविक घटक पुरस्कार मिले। 1979 में उन्हें भारत में लोक–कला के सर्वोत्तम निष्पादन के लिए अखिल भारतीय समीक्षक संघ पुरस्कार मिला।

1987 में संगीत में उनकी श्रेष्ठता के लिए उन्हें राष्ट्रीय नागरिक पुरस्कार तथा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिले। असम सरकार ने 1987 में असम की संस्कृति में उनके योगदान के लिए उन्हें सर्वोच्च पुरस्कार, 'शंकरदेव पुरस्कार' दिया।

वर्ष 1987 में बंगाल पत्रकार संघ ने डा. हज़ारिका को इंदिरा गांधी स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया तथा 1992 में पश्चिम बंगाल सरकार ने कला–जगत में उनके योगदान के लिए उन्हें सम्मानित किया।

DADA SAHEB PHALKE AWARD 1992

BHUPEN HAZARIKA

Dr. Bhupen Hazarika is a bright chapter in the annals of India's culture. A multi-faceted genius, he is a poet, music composer, singer, actor, journalist, author and filmmaker of the highest repute. He was a pioneer of Assam's film industry.

Bhupen Hazarika was born in 1926 in Sadiya, Assam. He began his career in films as a child actor in **Indramalati** (1939), the second talkie film to be made. He wrote and sang his first song at the age of ten. After studying arts and political science, he went to the United States and completed his doctorate in mass communications at Columbia University. He had already become well known for his contributions to tribal and folk culture, for which he received a Gold Medal.

Dr. Hazarika is ranked among the leading filmmakers of India. He promoted the fledgling Assamese film industry and propagated the movement for better cinema. He produced, directed, composed music for and sang for the Assamese films **Era Batar Sur** (1956), **Shakuntala** (1960), **Pratidhwani** (1964), **Lotighoti** (1967), **Chik Mik Bijuli** (1971), **Mon Projapati** (1978), **Swikarokti** (1986) and **Siraj** (1988).

Dr. Hazarika has to his credit more than one thousand lyrics and more than fifteen books of short stories, essays, travelogues, poems and children's rhymes. He is a journalist and editor for the past two decades of the popular monthlies **Amar Pratinidhi** and **Pratidhwani.**

Dr. Hazarika has won the President's national award for best filmmaker thrice, for **Shakuntala, Pratidhwani** and **Lotighoti.** He won the Arunachal Pradesh Government's Gold Medal in 1977 for his contribution to tribal welfare and upliftment of tribal culture.

In that same year the nation awarded its greatest honour, the Padma Shri, to Dr. Hazarika for his outstanding contribution to Indian culture. In 1978 he won two awards as best music director for the film **Simana Periye,** from the Bangladesh Journalists Association and the Bangladesh film industry.

In 1987 he won the National Citizens' Award and an award from the Sangeet Natak Academy for his excellence in music. The Government of Assam gave him its highest award, the Shankar Dev Award, in 1987 for his contribution to Assam's culture.

The Bengal Journalists Association honoured Dr. Hazarika with the Indira Gandhi Smriti Purashkar in 1987 and in 1992 the Government of West Bengal honoured him for his contribution to the world of arts.

कथाचित्र निर्णायक मण्डल

Jury for Feature Films

बालू महेन्द्रा (अध्यक्ष)
Balu Mahendra (Chairman)

सइं परांजपे
Sai Paranjpye

स्वप्न कुमार घोष
Swapan Kumar Ghosh

के.डी. शोरे
K.D. Shorey

हेमा मेहता
Hema Mehta

डॉ. टी.एस. मोहना
Dr. T.S. Mohana

बिजया जैना
Bijaya Jena

वी.के. पवित्रन्
V.K. Pavithran

बसु चटर्जी
Basu Chatterjee

सुरिंदर सिंह
Surinder Singh

अनिल सारी
Anil Saari

सव्यसाची महापात्र
Sabyasachi Mohapatra

टी.एस. नागभरणा
T.S. Nagabharana

सूर्जया हज़ारिका
Surjya Hazarika

गैर-कथाचित्र निर्णायक मण्डल

Jury for Non-Feature Films

घनश्याम महापात्र
(अध्यक्ष)
Ghanashyam Mohapatra
(Chairman)

सर्वजीत सिंह
Serbjeet Singh

पी.बी. पेंढ़ारकर
P.B. Pendharkar

लेनिन राजेन्द्रन
Lenin Rajendran

सिनेमा लेखन निर्णायक मण्डल

Jury for Writing on Cinema

मृणाल पाण्डे (अध्यक्षा)
Mrinal Pande (Chairwoman)

गौतमन भास्करन्
Gautaman Bhaskaran

सरशेन्दु मुखर्जी
Sirsendhu Mukerjee

कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Feature Films

सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

भगवद् गीता (संस्कृत)

निर्माता: **डॉ. सुब्बारामी रेड्डी** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **जी.वी. अय्यर** को स्वर्ण कमल तथा 25,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार संस्कृत फ़िल्म **भगवद् गीता** को शाश्वत् दर्शन को सशक्त चलचित्रीय भाषा में सफलतापूर्वक रूपान्तरित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM

BHAGAVAD GITA (Sanskrit)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000 to the Producer: **DR. T. SUBBARAMI REDDY**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the Director: **G.V. IYER**

Citation

The Award for the Best Feature Film of 1992 is given to the Sanskrit film **BHAGAVAD GITA** for successfully translating the immortal philosophy of the Bhagavad Gita into a powerful cinematic idiom.

डॉ. टी. सुब्बारामी रेड्डी कई वर्षों से जाने-माने फ़िल्म प्रदर्शक तथा निर्माता रहे हैं। वे एक प्रसिद्ध उद्योगपति और मानवप्रेमी भी हैं। उन्होंने हैदराबाद में जो माहेश्वरी और परमेश्वरी थियेटर बनाए हैं, जो भारत में सर्वोत्तम कलात्मक थियेटर माने जाते हैं। डॉ. रेड्डी ने अनेक हिंदी और तेलुगु फ़िल्मों का निर्माण किया है तथा देश के अनेक भागों में कलाओं और सभ्यता को प्रोत्साहित किया है। वाणिज्यिक फ़िल्मों के अलावा, उन्होंने ऐसी फ़िल्मों का निर्माण किया है जो कलात्मक और आध्यात्मिक संदेश देती हैं। वे अपनी अगली फ़िल्म स्वामी विवेकानंद पर बना रहे हैं।

DR. T. SUBBARAMI REDDY has been a leading film exhibitor and producer for a number of years. He is also a leading industrialist and philanthropist. The theatres Maheshwari and Parameshwari which he has built in Hyderabad are known as the best artistic theatres in India. Dr. Reddy has produced several Hindi and Telugu films and has encouraged arts and culture in various parts of the country. Besides commercial films, he has produced films which hold an artistic and spiritual message. His next planned venture is a film on Swami Vivekananda.

जी. वी. अय्यर एक पर्यटनशील फ़िल्म निर्माता हैं। उन्होंने वाणिज्यिक साहित्य रचना संबंधी कार्यों को छोड़कर अपने सर्जनात्मक अनुभवों को फ़िल्म **हम्सगीते** में उतारा, जिसने भारत तथा विदेशों में तहलका मचा दिया। कई अन्य फ़िल्मों के पश्चात् उन्होंने **आदि शंकराचार्य,** पहली संस्कृत फ़िल्म का निर्माण किया और सेलुलाइड पर दर्शन की व्याख्या का साहसिक प्रयत्न किया। वे अपनी भावी योजना के अंतर्गत माधवाचार्य, रामानुजाचार्य और स्वामी विवेकानंद के जीवन और दर्शन पर फ़िल्म बना रहे हैं।

G.V. IYER, a maverick filmmaker, left behind commercial potboilers to venture into creative experiments with film in **Hamsageethe**, which became a sensation in India and abroad. After several other offbeat films, he made **Adi Shankaracharya**, the first Sanskrit film and a bold attempt to interpret philosophy on celluloid. He plans next to film the lives and philosophies of Madhvacharya, Ramanujacharya and Swami Vivekananda.

सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

गौतम घोष

निर्देशक: **गौतम घोष** को स्वर्ण कमल तथा 50,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम निर्देशन का 1992 का पुरस्कार **गौतम घोष** को **मानिक बन्द्योपाध्याय** के उपन्यास के निर्देशन के लिए दिया गया है जिसमें कथानक का आश्चर्यजनक एवं विश्वासोत्पादक चलचित्रीय निरूपण किया है।

AWARD FOR THE BEST DIRECTION

GOUTAM GHOSE

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000 to the Director: **GOUTAM GHOSE**

Citation

The Award for the Best Direction of 1992 is given to **GOUTAM GHOSE** for his stunningly convincing realisation of Manik Bandopadhyaya's novel into a breathtaking cinematic experience.

गौतम घोष का जन्म 1950 में हुआ था। वे कलकत्ता में बड़े हुए और कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने रंगमंच पर और फोटो पत्रकार के रूप में भी सक्रिय रूप में कार्य किया। 1973 में उन्होंने वृत्तचित्रों का निर्माण शुरु किया। उनके दूसरे वृत्तचित्र **हंगरी आटम** (1974) को ओबरहाऊजन फ़िल्म समारोह में मुख्य पुरस्कार तथा लाइप्लिग में उत्कर्षता का डिप्लोमा मिला। **लैंड आफ सैंड ड्यून्ज़** (1986) को सर्वोत्तम वृत्तचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

घोष के प्रथम कथाचित्र **मा भूमि** को 1980 में सर्वोत्तम तेलुगु फ़िल्म का पुरस्कार मिला। **दखल** को सर्वोत्तम कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला और उसे पुर्तगाल, स्ट्रासबुर्ग तथा केन्निस के फ़िल्म समारोहों में पुरस्कार मिले। **पार** को वीनिस तथा वेरना में पुरस्कार मिले तथा सर्वोत्तम अभिनेता, सर्वोत्तम अभिनेत्री तथा सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार और ताशकंद में ग्रेंड प्रिक्स पुरस्कार मिला। घोष ने तेलुगु, बंगला तथा हिन्दी में फ़िल्में बनाई हैं।

गौतम घोष ने पश्चिम बंगाल फ़िल्म विकास निगम तथा राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम में निदेशक के रूप में कार्य किया है।

GOUTAM GHOSE was born in 1950. He grew up in Calcutta and graduated from Calcutta University. He worked actively in theatre and also as a photo journalist. In 1973 he started making documentaries. His second documentary, **Hungry Autumn** (1974), won the main award at the Oberhausen Film Festival and a diploma of merit at Leipzig. **Land of Sand Dunes** (1986) won the national award for best documentary film.

Ghose's first feature film, **Maa Bhoomi** (Our Land) won the award for best film in Telugu in 1980. **Dakhal** (The Occupation) won the national award for the best feature film and picked up prizes at film festivals at Portugal, Strassburg and Cannes. **Paar** (The Crossing) won awards at Venice and Verna and the national award for best actor, best actress and best Hindi film. **Antarjali Yatra** (The Voyage Beyond) won the national award for best Bengali film and the Grand Prix at Tashkent. Ghose has made films in Telugu, Bengali and Hindi.

Goutam Ghose has worked as Director of the West Bengal Film Development Corporation and the National Film Development Corporation.

द्वितीय सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

पद्मा नदीर माझी (बंगला)

निर्माता: **पश्चिम बंगाल सरकार** को रजत कमल और 30,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **गौतम घोष** को रजत कमल और 15,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

द्वितीय सर्वोत्तम कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार बंगला फ़िल्म **पद्मा नदीर माझी** को पद्मा नदी के मांझियों की दुर्दशा को अविस्मरणीय चलचित्रीय रूप में दर्शाने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE SECOND BEST FEATURE FILM

PADMA NADIR MAJHI (Bengali)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer: **GOVERNMENT OF WEST BENGAL**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **GOUTAM GHOSE**

Citation

The Award for the Second Best Feature Film of 1992 is given to the Bengali film **PADMA NADIR MAJHI** for depicting the plight of the boat people of the river Padma in an unforgettable experience.

गौतम घोष की फ़िल्में

कथाचित्र

मा भूमि (1979)
दखल (1982)
पार (1984)
अंतरजलि यात्रा (1987)
एक घाट की कहानी (लघु, 1987)

प्रमुख वृत्तचित्र

न्यू अर्थ (1973)
हंगरी आटम (1974)
चैन्स आफ बान्डेज़ (1976)
परम्परा (1984)
ट्रिब्यूट टू ओड़िसी (1986)
लैंड आफ सैंड ड्यून्स (1986)
मीटिंग ए माइलस्टोन (1987)

The films of Goutam Ghose

Feature films

Maa Bhoomi (1979)
Dakhal (1982)
Paar (1984)
Antarjali Yatra (1987)
Ek Ghat Ki Kahani (short, 1987)

Major documentaries

New Earth (1973)
Hungry Autumn (1974)
Chains of Bondage (1976)
Parampara (1984)
Tribute to Odissi (1986)
Land of Sand Dunes (1986)
Meeting a Milestone (1989)

निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

मिस बेटीज़ चिल्ड्रन (अंग्रेजी)

निर्माता: **राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम लि., दूरदर्शन तथा रुक्स ए.वी.** को स्वर्ण कमल तथा 25,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **पामेला रुक्स** को स्वर्ण कमल तथा 25,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार फ़िल्म **मिस बेटीज़ चिल्ड्रन** को स्वतंत्रता पूर्व भारत में देवदासी प्रथा के विरुद्ध संघर्षरत ब्रिटिश मिशनरी महिला के अत्यन्त सरल और मर्मस्पर्शी चित्रण के लिए दिया गया है।

INDIRA GANDHI AWARD FOR THE BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

MISS BEATTY'S CHILDREN (English)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the Producer: **NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORP., DOORDARSHAN, ROOKS AV**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000 to the Director: **PAMELA ROOKS**

Citation

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director for the year 1992 is given to the English film **MISS BEATTY'S CHILDREN** for an elegantly simple and sensitive depiction of a British missionary woman who fights the devdasi system in pre-independent India.

पामेला रूक्स का जन्म 1958 में कलकत्ता में हुआ और पढ़ाई जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय में हुई। 1978 में, उनका विवाह फ़िल्म निर्माता कोनार्ड रुक्स से हुआ और उनके साथ यात्रा की तथा कई फ़िल्म परियोजनाओं पर उनके साथ काम किया। एक स्वतंत्र टेलीविजन कम्पनी का कार्य करते हुए उन्होंने कई वृत्त-चित्रों का निर्माण किया तथा भारतीय टेलीविजन के लिए वर्तमान मामलों संबंधी कार्यक्रम तैयार किए। 1987 में, वे एक स्वतंत्र निर्माता बन गईं। उनके वृत्त चित्रों में **चिपको: ए रेस्पोंस टू द फोरेस्ट क्राइसिस, इंडियन वाइल्ड लाइफ: ट्रेड टू एक्सटिन्कशन, गर्ल चाइल्ड: फाइटिंग फार सरवाइवल** तथा **पंजाब: ए ह्यूमन ट्रेजडी** प्रमुख हैं। पामेला रुक्स ने **फाइनल एक्सपोज़र** शीर्षक से एक **काव्य संग्रह** तथा **मिस बेटीज चिल्ड्रन** नामक एक उपन्यास भी प्रकाशित किया है।

PAMELA ROOKS was born in Calcutta in 1958 and studied at Jawaharlal Nehru University. In 1978, she married filmmaker Conrad Rooks and travelled and worked with him on several film projects. While working for an independent television company, she produced documentaries and current affairs programmes for Indian television. In 1987, she became an independent producer. Her documentaries include **Chipko: A Response to the Forest Crisis, Indian Wildlife: Trade to Extinction, Girl Child: Fighting for Survival** and **Punjab: A Human Tragedy.** Pamela Rooks has also published a book of poems entitled **Final Exposure** and a novel, **Miss Beatty's Children.**

लोकप्रिय एवम् स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार

सरगम (मलयालम)

निर्माता: **भवानी** को स्वर्ण कमल तथा 40,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **हरिहरन** को स्वर्ण कमल तथा 20,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

लोकप्रिय एवम् स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाले सर्वोत्तम कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार मलयालम फ़िल्म **सरगम** को एक पारिवारिक कथा को प्रेमभाव जागृत करने वाली आनन्दप्रद संगीतमय फ़िल्म के रूप में प्रदर्शित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT

SARGAM (Malayalam)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 40,000 to the Producer: **BHAVANI**
Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Director: **HARIHARAN**

Citation

The Award for the Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment for 1992 is given to the Malayalam film **SARGAM** for its delightful rendering of a family saga into a heartwarming musical film.

पी.टी. भवानी, एक विज्ञान स्नातक ने वर्ष 1978 में मलयालम फ़िल्म **यगस्वम** में काम करने के साथ फ़िल्म उद्योग में प्रवेश किया, जिसका निर्देशन उनके पति, हरिहरन ने किया था। उन्होंने **पूचसन्यासी** और **नखाक्षतांगल** का निर्माण भी किया है।

P.T. BHAVANI, a graduate in science, entered the film industry in 1978 with **Yagaswam,** a film in Malayalam directed by her husband, Hariharan. She has also produced **Poochasanyasi** and **Nakhakshathangal.**

दक्षिण के कई प्रसिद्ध निर्देशकों के साथ निकटता से काम करने के लिए वर्ष 1965 में फ़िल्म उद्योग में आने से पूर्व **हरिहरन** ने मंच-नायक तथा लेखक और फ़िल्म-समीक्षक के रूप में कार्य किया। निर्देशक के रूप में **लेडीज़ होस्टल** उनका प्रथम प्रयास था। उन्होंने 65 से भी अधिक फ़िल्मों का निर्माण किया है। उनकी फ़िल्में जो भारतीय पैनोरमा के लिए चुनी गईं, वे हैं—**वलर्तु मृगअन्गल, पंचअग्नि** और **ओडू वड़क्कन वीरगाथा** । अंतिम नाम वाली फ़िल्म को राज्य स्तर के आठ पुरस्कार मिले हैं तथा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति भी मिली है।

HARIHARAN worked as a stage actor and writer and film critic before he joined the film industry in 1965 to work closely with many of the well-known directors of the South. His directorial debut was **Ladies' Hostel**, and he has more than 65 films to his credit. Films that have been selected for the Indian Panorama are **Valarthu Mrigangal, Panchagni** and **Oru Vadakkan Veeragaatha.** The last-named film won eight state-level awards as well as national and international acclaim.

सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार

एम.टी. वासुदेवन नायर

पटकथा लेखक: **एम.टी. वासुदेवन नायर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पटकथा का 1992 का पुरस्कार **एम.टी. वासुदेवन नायर** को मलयालम फ़िल्म **सद्यम** में अत्यधिक सुगठित आलेख के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SCREENPLAY

M.T. VASUDEVAN NAIR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Screenplay Writer: **M.T. VASUDEVAN NAIR**

Citation

The Award for the Best Screenplay of 1992 is given to **M.T. VASUDEVAN NAIR** for his work in the Malayalam film **SADAYAM** for an extremely well structured script.

एम.टी. वासुदेवन नायर ने अनेक पुस्तकें, कहानियां और उपन्यास लिखे हैं। उन्हें साहित्य अकादमी सहित अन्य अनेक साहित्यिक पुरस्कार मिले हैं। वे 1966 से फ़िल्मों की पटकथाएं लिख रहे हैं। उनकी कई फ़िल्में उनकी अपनी कहानियों पर आधारित हैं। उनकी प्रथम फ़िल्म **निर्मलायम** को 1973 में राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक मिला। 1991 में, फ़िल्म **कडाबु** को मलयालम में सर्वोत्तम कथाचित्र तथा सर्वोत्तम पटकथा के राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। एम.टी. वासुदेवन नायर ने उस फ़िल्म का निर्माण, निर्देशन और पटकथा लेखन किया था।

M.T. VASUDEVAN NAIR has written books, short stories, and novels and has won numerous literary awards, including the Central Sahitya Akademy Award. He has been a screenplay writer since 1966. Many of his films are based on his own stories. His first film, **Nirmalyam**, won the President's Gold Medal in 1973. In 1991, the film **Kadavu** won the national awards for best feature film in Malayalam as well as best screenplay. M.T. Vasudevan Nair produced, directed and wrote the screenplay for that film.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

वेणु

छायाकार: **वेणु** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

फ़िल्म-प्रोसेसिंग करने वाली प्रयोगशाला: **प्रसाद फ़िल्म लेबोरेट्री, मद्रास** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम छायांकन का 1992 का पुरस्कार **वेणु** को **मिस बेटीज चिल्ड्रन** में उनके उत्कृष्ट कलात्मक कार्य तथा तकनीकी तौर पर शानदार छायांकन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

VENU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Cameraman: **VENU**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the laboratory processing the film: **PRASAD FILM LABORATORY, MADRAS**

Citation

The Award for the Best Cinematography of 1992 is given to **VENU** for his masterly, unobtrusive and technically excellent camera work in **MISS BEATTY'S CHILDREN.**

वेणु ने 1973 में फ़िल्म तथा टेलीविज़न संस्थान, पुणे से छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त किया। वे जी. अरविंदन की **मास्क्स एण्ड मैन**, मणि कौल की **माटी मानस** तथा राजीव विजय राघवन की **सिस्टर डाल्फोंसा** सहित अनेक महत्वपूर्ण वृत्तचित्रों के छायाकार थे। जिन कथाचित्रों में उन्होंने छायाकार के रूप में काम किया है, उनमें के.सी. जॉर्ज की **इराकल** शामिल है। उन्होंने अलन बिर्किन शाह द्वारा निर्देशित दूरदर्शन फ़िल्म **जवाहरलाल नेहरू** पर भी काम किया है।

VENU obtained his diploma in cinematography from the Film and Television Institute, Pune, in 1973. He was the cinematographer for a number of important documentaries, including G. Aravindan's **Masks and Men**, Mani Kaul's **Mati Manas** and Rajiv Vijay Raghavan's **Sister Aplhonsa.** The feature films he has worked on as cinematographer include K.C. George's **Irakal.** He also worked on the Doordarshan film **Jawaharlal Nehru**, directed by Alan Birkinshaw.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

एन. पांडुरंगन

ध्वनि आलेख: **एन. पांडुरंगन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1992 का पुरस्कार **एन. पांडुरंगन** को तमिल फ़िल्म **तेवर मगन** के लिए दिया गया है जिसमें उनकी सर्जनात्मक रिकार्डिंग तथा ध्वनि संयोजन के मिश्रण से तमिल फ़िल्म तेवर मगन में चार चांद लग गए हैं।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

N. PANDURANGAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Audiographer: **N. PANDURANGAN**

Citation

The Award for the Best Audiography of 1992 is given to **N. PANDURANGAN** for his work in the Tamil film **THEVAR MAGAN** for his extremely creative recording and mixing of the sound track, giving the film an added dimension.

एन. पांडुरंगन को फ़िल्म ध्वनि-आलेखन में बत्तीस वर्षों का अनुभव है। उन्हें अपने कार्य के लिए तीन बार कर्नाटक राज्य पुरस्कार, तीन बार आंध्र प्रदेश राज्य पुरस्कार और एक बार तमिलनाडु राज्य पुरस्कार मिला है। 1990 में उन्हें तमिल कथाचित्र **अंजलि** में अपने कार्य के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

N. PANDURANGAN has thirty-two years' experience in film audiography. He has won the Karnataka State Award thrice, the Andhra Pradesh State Award thrice, and the Tamil Nadu State Award once for his work. In 1990, he won a national award for his work in the Tamil feature film **Anjali.**

सर्वोत्तम सम्पादन पुरस्कार

एम.एस. मोनी

सम्पादनः **एम.एस मोनी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सम्पादन का 1992 का पुरस्कार **एम. एस. मोनी** को फ़िल्म **सरगम** की संगीतमय रचना में स्वाभाविक ताल बैठाने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

M.S. MONEY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Editor: **M.S. MONEY**

Citation

The Award for the Best Editing of 1992 is given to **M.S. MONEY** for imparting a natural rhythm to **SARGAM** completely in time with its musical format.

एम.एस. मोनी का जन्म वर्ष 1926 में त्रिवेंद्रम में हुआ। उन्होंने वर्ष 1946 में वौहिनी प्रॉडक्शन के संपादन विभाग से फ़िल्म उद्योग में प्रवेश किया। 1955 में उन्होंने स्वतंत्र रूप में कार्य करना शुरू कर दिया। उन्होंने तेलुगु, तमिल, मलयालम, हिंदी, कन्नड तथा सिंहली की 200 से भी अधिक फ़िल्मों का संपादन किया है।

M.S. MONEY was born in 1926 at Trivandrum. He entered the film industry in 1946 in the editing department of Vauhini Production. After 1955 he began working as a freelancer and has edited more than 200 films in Telugu, Tamil, Malayalam, Hindi, Kannada and Sinhalese.

सर्वोत्तम कला निर्देशन पुरस्कार

समीर चन्दा

कला निर्देशक: **समीर चन्दा** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला निर्देशन का 1992 का पुरस्कार **समीर चन्दा** को दिया गया है जिसमें उन्होंने अति समृद्ध और शानदान, दोनों ही तरह के वास्तुकला संबंधी ढांचों से **रूदाली** के मरू दृश्य में वास्तविक रूप प्रदान किया है।

AWARD FOR THE BEST ART DIRECTION

SAMIR CHANDA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Art Director: **SAMIR CHANDA**

Citation

The Award for the Best Art Direction of 1992 is given to **SAMIR CHANDA** for his realistic recreation of the **RUDALI** desert scape, with its requisite architectural structures, both opulent and humble.

समीर चन्दा ने कला-निर्देशक नितिश राय के सहायक के रूप में फ़िल्मों में कार्य करना प्रारम्भ किया। तब से उन्होंने अकेले ही कई फ़िल्मों के कला निर्देशक के रूप में कार्य किया है। 1991 में उन्हें **रुक्मावती की हवेली** में उनके सर्वोत्तम कला निर्देशन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

SAMIR CHANDA began his career in film as assistant to the art director Nitish Roy. Since then he has worked independently as art director on several films. In 1991 he won the National Award for Best Art Direction for his work on **Rukmavati ki Haveli.**

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

ए.आर. रहमान

संगीत निर्देशक: **ए.आर. रहमान** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का 1992 का पुरस्कार **ए.आर. रहमान** को **रोजा** फ़िल्म के लिए दिया गया है जिसमें उन्होंने परस्पर सहयोग से पश्चिमी तथा कर्नाटक शास्त्रीय संगीत प्रणालियों का सुसंगत मेल बैठाया है और दोनो संगीत-शैलियों की पहचान को बनाए रखा है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

A.R. RAHMAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Music Director: **A.R. RAHMAN**

Citation

The Award for the Best Music Direction of 1992 is given to **A.R. RAHMAN** for the harmonious blend of western and Karnatak classical music in **ROJA**, the separate music systems complementing each other without losing their own identities.

ए. आर. रहमान का संबंध एक संगीत घराने से है। उनके पिता, स्वर्गीय आर.के. शेखर, मलयालम फ़िल्म उद्योग में एक प्रसिद्ध संगीत-निर्देशक थे। रहमान ने टेलीविजन-कार्यक्रमों में अभिनय और रिकार्डिंग का कार्य किया है। उन्होंने एल. शंकर, जाकिर हुसैन, डेविड बर्न और अन्य प्रख्यात कलाकारों के साथ देश-विदेश में कार्य किया है। उन्होंने टेलीविज़न, रेडियो-विज्ञापनों, प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्मों और वृत्त-चित्रों के लिए संगीत दिया है। हाल ही में उन्होंने तमिल तथा मलयालम फ़िल्म निर्देशकों के मुख्य कथाचित्रों में ध्वनि संयोजन और गीतों के लिए काम शुरू किया है।

A.R. RAHMAN hails from a musical family. His father, the late R.K. Shekar, was a well-known music director in the Malayalam film industy. Rahman has played for television programmes and performed in recordings and tours with Dr. L. Shankar, Zakir Hussain, David Byrne and other renowned artists. He has scored music for television and radio advertisements, promotional films and documentaries and has recently begun work in major feature film sound track and songs for Tamil and Malayalam directors.

सर्वोत्तम वेशभूषाकार पुरस्कार

माला डे एवं सिम्पल कपाड़िया

वेशभूषाकार: **माला डे** एवं **सिम्पल कपाड़िया** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वेशभूषाकार का 1992 का पुरस्कार **माला डे** तथा **सिम्पल कपाड़िया** को हिन्दी फ़िल्म **रूदाली** में ऐसे प्रामाणिक डिज़ाइन बनाने के लिए दिया गया है जो राजस्थान के मरु पृष्ठ भूमि से मेल खाते हैं।

AWARD FOR THE BEST COSTUME DESIGNER

MALA DEY and SIMPLE KAPADIA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Costume Designers: **MALA DEY** and **SIMPLE KAPADIA**

Citation

The Award for the Best Costume Designer of 1992 is given to **MALA DEY** and **SIMPLE KAPADIA** for the authentic designs they created for the Hindi film **RUDALI** to blend with the desert backdrop of Rajasthan.

माला डे ने आगरा विश्वविद्यालय से संगीत, संस्कृत, ड्राईंग और पेंटिंग तथा अंग्रेजी विषयों का अध्ययन किया है और दिल्ली विश्वविद्यालय से संगीत में मास्टर डिग्री प्राप्त की है। वे पिछले नौ वर्षों से वेश–भूषा डिज़ाइनर के रूप में कार्य कर रही हैं और उन्होंने लगभग पन्द्रह पूर्णावधि के नाटकों के लिए वेष–भूषाएं डिज़ाइन की हैं। उन्होंने **आघात, तमस, कर्मभूमि, हमराही** तथा अन्य कथाचित्रों तथा टेलीविज़न धारावाहिकों के लिए भी डिज़ाइन तैयार किए हैं।

MALA DEY has studied music, Sanskrit, drawing and painting and English at Agra University and holds a master's degree in music from Delhi University. She has been working as a costume designer for the past nine years and has designed costumes for at least fifteen full-length plays. She has designed for **Aaghat, Tamas, Karm Bhoomi, Hamrahi** and other feature films and television serials.

सिम्पल कपाड़िया ने अभिनेत्री के रूप में अपना प्रथम प्रयास **अनुरोध** में किया। उन्होंने प्रमुख महिला के रूप में लगभग बीस हिन्दी फ़िल्मों में अभिनय किया और बंगला फ़िल्मों में भी काम किया। उन्होंने अब तक साठ फिल्मों पर फ़ैशन डिज़ाइनर के रूप में काम किया है और जैकी श्रॉफ़, सन्नी देओल, डिम्पल कपाड़िया और अन्य सुप्रसिद्ध कलाकारों की वेशभूषाओं के डिज़ाइन तैयार किए हैं। डिम्पल कपाड़िया बम्बई में तन्त्रा के नाम से अपना डिज़ाइनिंग उद्यम चलाती हैं।

SIMPLE KAPADIA made her debut as an actress in **Anurodh**. She acted as leading lady in approximately twenty Hindi films and has also acted in Bengali films. She has worked as fashion designer on sixty films so far and designs costumes for Jackie Shroff, Sunny Deol, Dimple Kapadia and other leading stars. Simple Kapadia runs her own designing enterprise in Bombay, called Tantra.

सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार

मिथुन चक्रवर्ती

अभिनेता: **मिथुन चक्रवर्ती** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेता का 1992 का पुरस्कार, स्वतंत्रता प्राप्ति के तत्काल बाद एक स्वतंत्रता सैनानी की व्यथा को प्रभावी रूप से व्यक्त करने हेतु बंगला फ़िल्म **तहादेर कथा** में **मिथुन चक्रवर्ती** को उनके असामान्य अभिनय के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ACTOR

MITHUN CHAKRABORTY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Actor: **MITHUN CHAKRABORTY**

Citation

The Award for the Best Actor of 1992 is given to **MITHUN CHAKRABORTY** for his work in the Bengali film **TAHADER KATHA** for his innovative performance which effectively captures the agony of a freedom fighter immediately after Independence.

मिथुन चक्रवर्ती का जन्म वर्ष 1950 में कलकत्ता में हुआ। उन्होंने भारतीय फ़िल्म तथा टेलीविज़न संस्थान से विशेष योग्यता में डिप्लोमा लिया। उन्होंने 1976-77 में अपनी प्रथम फ़िल्म **मृगया** में प्रमुख भूमिका का अभिनय किया। उन्होंने 200 से भी अधिक फ़िल्मों में अभिनय किया है और उन्हें वर्ष का सर्वोत्तम अभिनेता का राष्ट्रपति का राष्ट्रीय पुरस्कार, यू.एस.एस.आर. का मयूर पुरस्कार तथा पश्चिम बंगाल पत्रकार संघ से प्रमुख सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार मिला है।

MITHUN CHAKRABORTY was born in Calcutta in 1950. He passed with distinction from the Film and Television Institute of India. He acted in a leading role in his first film, **Mrigayya,** in 1976-77. He has acted in over 200 films and has won the President's National Award for the Best Actor of the Year, the Peacock Award of the USSR and the Best Leading Actor Award from the West Bengal Journalists Association.

सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार

डिम्पल कपाड़िया

अभिनेत्री: **डिम्पल कपाड़िया** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अभिनेत्री का 1992 का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म **रुदाली** में नृशंस समाज द्वारा सताई हुई एक अकेली औरत के दुःख भरे जीवन के सशक्त अभिनय के लिए **डिम्पल कपाड़िया** को दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ACTRESS

DIMPLE KAPADIA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Actress: **DIMPLE KAPADIA**

Citation

The Award for the Best Actress of 1992 is given to **DIMPLE KAPADIA** for her work in the Hindi film **RUDALI** for compelling interpretation of the tribulations of a lonely woman ravaged by a cruel society.

डिम्पल कपाड़िया ने वर्ष 1973 में राजकपूर की फ़िल्म **बॉबी** में पहली बार काम किया। वे 1983 में अभिनय के क्षेत्र में पुनः लौटीं और तब से लोकप्रिय तथा समान्तर सिनेमा के प्रमुख फ़िल्म निर्माताओं की 50 फ़िल्मों में काम किया है। उन्हें चार फ़िल्म फेयर पुरस्कार मिले हैं। उन्हें **बॉबी** (1974), **सागर** (1985), **दृष्टि** (1992), **लेकिन** (1992) तथा **रुदाली** (1993) में सर्वोत्तम अभिनेत्री या अपनी भूमिकाओं के उत्कृष्ट अभिनय के लिए पुरस्कार मिले हैं। इस समय वे मृणाल सेन की फ़िल्म **द कन्फाइन्ड** और कई अन्य फ़िल्मों में काम कर रही हैं।

DIMPLE KAPADIA made her debut in Raj Kapoor's **Bobby** in 1973. She returned to acting in 1983 and has since then appeared in 50 films made by major filmmakers of the popular as well as the parallel cinema. She has won four Filmfare Awards and awards for best actress or outstanding performance for her roles in **Bobby** (1974), **Saagar** (1985), **Drishti** (1992), **Rudali** (1993) and **Lekin** (1992). She is currently working in Mrinal Sen's **The Confined** and several other films.

सर्वोत्तम सह-अभिनेता पुरस्कार

सन्नी देओल

सह-अभिनेता: **सन्नी देओल** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह-अभिनेता का 1992 का पुरस्कार **सन्नी देओल** को हिन्दी फ़िल्म **दामिनी** में अभिनय के लिए दिया गया है जिसमें उन्होंने न्याय की तलाश में नई-नई चुनौतियों को स्वीकार करने वाले कठोर और कुण्ठित वकील के रूप में उत्कृष्ट अभिनय किया है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTOR

SUNNY DEOL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Supporting Actor: **SUNNY DEOL**

Citation

The Award for the Best Supporting Actor of 1992 is given to **SUNNY DEOL** for his work in the Hindi film **DAMINI** for his outstanding portrayal of a hardened and cynical lawyer who takes on new challenges in his quest for justice.

वर्ष 1957 में जन्मे **सन्नी देओल** के बचपन का नाम अजय सिंह देओल था। उन्होंने ओल्ड रेप स्कूल आफ एक्टिंग, बर्मिंघम, यू.के. से डिप्लोमा प्राप्त किया। 1983 में उन्होंने पहली बार फ़िल्म **बेताब** में काम किया और अब तक 30 फ़िल्मों में अभिनय किया है। उन्हें निर्णायक मण्डल का विशेष राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। उन्हें **घायल** (1991) में अपने अभिनय के लिए फ़िल्मफेयर पुरस्कार मिला।

SUNNY DEOL, born Ajay Singh Deol in 1957, holds a diploma from the Old Rep School of Acting in Birmingham, UK. He made his debut in **Betaab** in 1983 and has acted in 30 films so far. He won the National Special Jury Award and the Filmfare Award for his performance in **Ghayal** (1991).

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री पुरस्कार

रेवती मेनन

सह अभिनेत्री: **रेवती मेनन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम सह-अभिनेत्री का 1992 का पुरस्कार **रेवती मेनन** को फ़िल्म **तेवर मगन** में एक सीधी-सादी ग्राम बाला की सहज और स्वाभाविक भूमिका के सशक्त तथा विश्वसनीय अभिनय के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SUPPORTING ACTRESS

REVATHY MENON

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Supporting Actress: **REVATHY MENON**

Citation

The Award for the Best Supporting Actress of 1992 is given to **REVATHY MENON** for a compelling and convincing performance of an innocent village girl in **THEVAR MAGAN**, giving it an effortlessly charming naturalness.

रेवती मेनन ने वर्ष 1983 में अपना फ़िल्मी जीवन, भारती राजा द्वारा निर्देशित सफल तमिल फ़िल्म **मण बासनै** से प्रारंभ किया। उनकी दूसरी फ़िल्म कट्टत्थे किलिक्कूडू बहुत सफल रही और उसे भारतीय पैनोरमा में प्रदर्शित किया गया। उनकी कई फ़िल्मों को भारतीय पैनोरमा तथा विदेशी फ़िल्म समारोहों में दिखाया गया। उन्हें **मण बासनै, कट्टत्थे किलिक्कूडू, मानस वीणा, पुदुमै पैण, सीताम्मा पैनली, रेवती, अंजलि, किडाक्कू वासल, तेवर मगन** और अन्य फ़िल्मों में अपनी भूमिकाओं के लिए पुरस्कार मिले।

REVATHY MENON began her film career in 1983 in the Tamil film hit **Mann Vaasanai**, directed by Bharathi Raja. Her second film **Kattathe Kilikkoodu** was a hit and was screened in the Indian Panorama. Several of her films have been screened in the Indian Panorama and in foreign film festivals. She has won awards for her roles in **Mann Vaasanai, Kattathe Kilikkoodu, Manasa Veena, Pudumai Penn, Seethamma Penli, Revathi, Anjali, Kizhakku Vaasal, Thevar Magan** and other films.

सर्वोत्तम बाल कलाकार पुरस्कार

अमित फाल्के

बाल कलाकार: **अमित फाल्के** को रजत कमल तथा 5,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कलाकार का 1992 का पुरस्कार **मास्टर अमित फाल्के** को हिन्दी फ़िल्म **मुझसे दोस्ती करोगे** में उनके अभिनय के लिए दिया गया है जिसमें उन्होंने एक ऐसे मासूम बच्चे के स्वच्छ उल्लास और उसकी चपलता को बखूबी चित्रित किया है जिसे वह अपनी ख्याली दुनिया में खो चुका था।

AWARD FOR THE BEST CHILD ARTISTE

AMIT PHALKE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000 to the Child Artiste: **AMIT PHALKE**

Citation

The Award for the Best Child Artiste of 1992 is given to Master **AMIT PHALKE** for his work in the Hindi film **MUJHSE DOSTI KAROGE** for the sheer joy and versatility he brings to the portrayal of a lovable lad lost in his own dream world.

अमित चिंतामणि फाल्के का जन्म वर्ष 1979 में पुणे में हुआ। उन्होंने हिंदी तथा मराठी नाटकों के साथ-साथ टेलीविज़न धारावाहिकों तथा **माहेरची साड़ी** और **सूडचक्र** नामक मराठी फ़िल्मों में अभिनय किया। उन्हें अनेक संस्थाओं से कहानी-लेखन, संगीत तथा अभिनय के पुरस्कार मिले हैं। **मुझसे दोस्ती करोगे** में उनके अभिनय के लिए दिया गया सर्वोत्तम बाल कलाकार का पुरस्कार उनका प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार है।

AMIT CHINTAMANI PHALKE was born in 1979 at Pune. He has acted in many Hindi and Marathi dramas and television serials as well as in the Marathi films **Maherchi Sadi** and **Sudachakra.** He has won awards in storytelling, music, and acting from various institutions. The Award for Best Child Artiste for his performance in **Mujhse Dosti Karoge** is his first national award.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक पुरस्कार

डॉ. राजकुमार

पार्श्व गायक: **डॉ. राजकुमार** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायक का 1992 का पुरस्कार **डॉ. राजकुमार** को फ़िल्म **जीवन चैत्रा** में असाधारण राग-प्रस्तुति के लिए दिया गया है जिसमें उन्होंने संगीत की सर्वव्यापी शक्ति को प्रदर्शित किया है।

AWARD FOR THE BEST MALE PLAYBACK SINGER

DR. RAJKUMAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Best Male Playback Singer: **DR. RAJKUMAR**

Citation

The Award for the Best Male Playback Singer of 1992 is given to **DR. RAJKUMAR** for his extraordinary rendering of a raga celebrating the all-pervasive power of music in the film **JEEVANA CHAITRA**.

डॉ. राजकुमार ने व्यावसायिक रंगमंच ग्रुपों में कार्य करने से अपना संगीत-व्यवसाय आरंभ किया। आज वे भारतीय फ़िल्म उद्योग में एक प्रतिष्ठित गायक हैं और जाने-माने अभिनेता भी। **नादमया** उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति है, जिसमें एक शास्त्रीय गीत को हिमालय में फ़िल्माया गया है। अपने भक्तिपरक गीतों और फ़िल्मी संगीत के लिए डॉ. राजकुमार की व्यापक प्रशंसा की जाती है।

DR. RAJKUMAR began his musical career with professional theatre groups. Today he is a singer of stature in the Indian film industry and is well known as an actor also. One of his most famous renderings is 'Nadamaya', a classical song picturised in the Himalayas. Dr. Rajkumar is widely appreciated for his devotional songs as well as his film music.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका पुरस्कार

एस. जानकी

पार्श्व गायिका: **एस. जानकी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का 1992 का पुरस्कार **एस. जानकी** को फ़िल्म **तेवर मगन** में सहज प्रेम गीत के मधुर गायन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

S. JANAKI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Best Female Playback Singer: **S. JANAKI**

Citation

The Award for the Best Female Playback Singer of 1992 is given to **S. JANAKI** for melodious rendering of an innocent love song in the film **THEVAR MAGAN.**

एस. जानकी ने वर्ष 1957 में पार्श्व गायिका के रूप में अपना व्यवसाय प्रारंभ किया। उन्होंने 15 भाषाओं में गीत गाए हैं और आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, केरल तथा उड़ीसा राज्यों से पुरस्कार प्राप्त किए हैं। यह उनका चौथा राष्ट्रीय पुरस्कार है। उन्हें दक्षिण भारतीय फ़िल्मों के स्वर्ण जयंती समारोह के दौरान प्रसिद्ध पार्श्व गायिका के रूप में सम्मानित किया गया।

S. JANAKI began her career as a playback singer in 1957. She has sung songs in 15 languages and has won awards in Andhra Pradesh, Tamil Nadu, Kerala and Orissa. This is her fourth national award. She was honoured as the Veteran Playback Singer during the Golden Jubilee Celebration of South Indian Films.

सर्वोत्तम गीत पुरस्कार

वेरमुथु

गीतकार: **वेरमुथु** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गीत का 1992 का पुरस्कार **वेरमुथु** को फ़िल्म **रोजा** में उनकी सौम्य और सरल कविता के लिए दिया गया है जो तमिलनाडू में प्रत्येक बच्चे की जुबान पर एक नया बाल-गीत बन गया है।

AWARD FOR THE BEST LYRICS

VAIRAMUTHU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Lyricist: **VAIRAMUTHU**

Citation

The Award for the Best Lyrics of 1992 is given to **VAIRAMUTHU** for his work in the Tamil film **ROJA** for his charming, simple poem which has become a new nursery rhyme on the lips of every child in Tamil Nadu.

वैरमुथु ने सुब्रह्मणिय भारतीय तथा भारतीदासन जैसे महान तमिल कवियों से प्रेरणा पाई और एक ऐसी भव्य कवितामय शैली का विकास किया जिससे उन्हें तमिलनाडू और समस्त भारत में प्रसिद्धि प्राप्त हुई। वे प्रथम कवि थे जिन्होंने अपने तमिल महाकाव्य **कविराजन् कथा** में स्वतंत्र पदों का सर्जन किया। जब वे 1980 में फ़िल्म जगत में आए तो उन्होंने फ़िल्मी गीतों को एक नई दिशा प्रदान की तथा गीतों को उच्च साहित्यिक स्तर तक पहुंचाया। उन्हें कई अन्य पुरस्कारों के अलावा 1981 में तमिलनाडू सरकार का सर्वोत्तम गीतकार पुरस्कार तथा 1985 में सर्वोत्तम गीत के लिए राष्ट्रपति का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

VAIRAMUTHU took inspiration from the great Tamil poets Subramania Bharathi and Bharathidasan and developed a superb poetic style that shot him into prominence in Tamil Nadu and in all of India. He was among the first to use free verse in Tamil poetry, in his epic **Kavirajan Katha,** the story of Bharathi. When he entered the world of films in 1980, he gave a new direction and vision to film lyrics and raised the standard of lyrics to high literature. He won the best lyricist award of the Tamil Nadu Government in 1981 and the President's national award for best lyrics in 1985, among many other awards.

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव पुरस्कार

के. शशिलाल नायर

प्रभाव सृजक: **के. शशिलाल नायर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव का 1992 का पुरस्कार **के. शशिलाल नायर** को फ़िल्म **अंगार** में उनके अत्यधिक प्रभावशाली लघुचित्र कार्य के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SPECIAL EFFECTS

K. SASHILAAL NAIR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Creator: **K. SASHILAAL NAIR**

Citation

The Award for the Best Special Effects of 1992 is given to **K. SASHILAAL NAIR** for his absolutely convincing miniature work in the film **ANGAAR.**

के. शशि लाल नायर ने अपना फ़िल्मी जीवन **शंकराभरणम्, सरगम, कामचोर** और अन्य फ़िल्मों में सहायक के रूप में प्रारंभ किया। उन्होंने **बहू की आवाज़** का निर्देशन किया, जोकि दुल्हनों को जलाने तथा दहेज़ पर तीखा प्रहार करती है। इसके बाद उन्होंने **परिवार, क्रोध, फलक** तथा **करमदाता** फ़िल्मों का निर्देशन किया।

K. SASHILAAL NAIR began his career in films as an assistant in the films **Sankarabharanam, Sargam, Kaam Chor** and others. He directed **Bahu ki Awaaz**, a strong comment on bride burning and dowry. This was followed by work on **Parivaar, Kroadh, Falak** and **Karamadatta.**

सर्वोत्तम नृत्य संयोजन पुरस्कार

लक्ष्मी बाई कोल्हापुरकर

नृत्य संयोजक: **लक्ष्मी बाई कोल्हापुरकर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम नृत्य संयोजन का 1992 का पुरस्कार **लक्ष्मीबाई कोल्हापुरकर** को मराठी फ़िल्म **एक होता विदूषक** में सर्वप्रिय परम्परागत लोक रंगमंच रूप को सफलतापूर्वक पर्दे पर उतारने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CHOREOGRAPHY

LAXMIBAI KOLHAPURKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Choreographer: **LAXMIBAI KOLHAPURKAR**

Citation

The Award for the Best Choreography of 1992 is given to **LAXMIBAI KOLHAPURKAR** for successfully adapting a popular traditional folk theatre form to the screen in the Marathi film **EK HOTA VIDUSHAK.**

लक्ष्मी कोल्हापुरकर ने सात वर्ष की आयु में नृत्य करना प्रारम्भ किया। बिन्नी भैया और गुलाम हुसैन कुरेशी के मार्गदर्शन में कत्थक शैली में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उन्होंने अपनी माता के तमाशा दल, हंस मंजुला कोल्हापुरकर पार्टी में काम करना शुरु किया। उन्होंने तमाशा समारोहों में महत्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त किए हैं। वर्तमान में वे नए कलाकारों के लिए तमाशा रंगमंच कार्यशालाओं का आयोजन करती हैं। **एक होता विदूषक** उनकी पहली फ़िल्म है, जिसमें उन्होंने नृत्य किया है।

LAKSHMI KOLHAPURKAR started dancing at the age of seven. After getting trained in Kathak style under Bini Bhaiya and Gulam Hussain Khureishi, she took over her mother's tamasha troupe, the Hansa Manjula Kolhapurkar Party. She has won prestigious awards in tamasha festivals. Currently she conducts tamasha theatre workshops for newcomers. **Ek Hota Vidushak** is the first film she has choreographed.

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र पुरस्कार

रेलार-अलिर-दुबारी-बोन

निर्माता: **पुलक गोगोई** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **पुलक गोगोई** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम असमिया कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार असमिया फ़िल्म **रेलार-अलिर-दुबानी-बोन** को शोषित निर्धनों की त्रासदी को नए ढंग से प्रस्तुत करने और उनकी व्यथा तथा लाचारी का मार्मिक चित्रण करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ASSAMESE

RELAR-ALIR-DUBARI-BON

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **PULAK GOGOI**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **PULAK GOGOI**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Assamese of 1992 is given to **RELAR-ALIR-DUBARI-BON** for its innovative style in putting across the tragedy of the exploited poor and portraying their agony and helplessness in a poignant manner.

पुलक गोगोई ने पेन्टर तथा कार्टूनिस्ट के रूप में अपना व्यावसायिक जीवन शुरू किया। उनके कार्यों को भारत तथा विदेश में प्रदर्शित किया गया। उन्होंने अपना फ़िल्मी जीवन 1973 में **खोज** से प्रारंभ किया। उनकी अन्य फ़िल्में **श्रीमती महिमामाई** (1979), **सदारी** (1982) **सेंदूर** (1984), **सूरज** (1985) हैं तथा असम के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अनेक वृत्तचित्र हैं। वे लेखों तथा लघु कहानियों के लेखक भी हैं और उन्होंने **हेमान्तिका** उपन्यास भी प्रकाशित किया है।

PULAK GOGOI began his career as a painter and cartoonist and his works have been exhibited in India and abroad. He began his film career in 1973 with **Khoj**. His other films are **Smt Mahimamayee** (1979), **Sadari** (1982), **Sendur** (1984), **Suruj** (1985) and several documentaries on various aspects of Assamese life. He is also a writer of articles and short stories and has published a novel, **Haimantika**.

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र पुरस्कार

तहादेर कथा

निर्माता: **राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम लि.** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **बुद्धदेब दासगुप्ता** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बंगला कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार **तहादेर कथा** को दिया गया है जिसमें सर्वथा वास्तविक सामाजिक-राजनैतिक समस्या का असामान्य तथा चुनौतीपूर्ण विवेचन लाक्षणिक भाषा में किया गया है—एक स्वतंत्रता सेनानी जब परदेस से लौटता है तो अपने देश को पूर्णरूपेण बदला हुआ पाता है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN BENGALI

TAHADER KATHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORP.**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **BUDDHADEB DASGUPTA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Bengali of 1992 is given to **TAHADER KATHA** for its most unusual and daring treatment of a very real socio-political issue in a metaphoric manner—the alienation of a freedom fighter from his country, now changed beyond recognition.

बुद्धदेव दासगुप्ता का जन्म 1944 में हुआ था। .वे कलकत्ता विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के प्राध्यापक थे और एक सुप्रसिद्ध कवि हो गए। उनके कार्यों को पत्र–पत्रिकाओं तथा संग्रहों में प्रकाशित किया गया और उन्हें अंग्रेजी, फ्रांसीसी, ग्रीक तथा अन्य विदेशी भाषाओं के अलावा कई भारतीय भाषाओं में अनूदित किया गया है।

अपने काव्य का विस्तार सिनेमा तक करने के उद्देश्य से उन्होंने अपने विद्योचित पद को छोड़ दिया। अपनी काव्यात्मक संवेदनशीलता तथा शहरी रागात्मक वास्तविकता के लिए उनकी प्रारम्भिक फ़िल्मों की अत्यधिक सराहना की गई। उनकी तीन फ़िल्में—**दुरात्वा, गृहयुद्ध** और **अंधी गली** के पूरा होने से वे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हो गए। **फेरा** में व्यक्ति के संकट का पता लगाने के लिए वे भारतीय सिनेमा की सुधारवादी साहित्यिक परम्परा से मुड़ गए।

BUDDHADEB DASGUPTA was born in 1944 in Bengal. He was a lecturer in economics at Calcutta University and became widely known as a poet. His works have been published in journals and anthologies and have been translated into many Indian languages as well as English, French, Greek and other foreign languages.

He gave up his academic post to extend his poetry to cinema. His early films were highly praised for their poetic sensibility and urban lyrical realism. With the completion of his trilogy, **Dooratwa, Grihajuddha** and **Andhigali,** he became internationally famous. In **Phera,** he turned from the reformist literary tradition of Indian cinema to explore the crisis of the individual.

सर्वोत्तम हिन्दी कथाचित्र पुरस्कार

सूरज का सातवां घोड़ा

निर्माता: **राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम लि.** एवं **दूरदर्शन** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **श्याम बेनेगल** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म **सूरज का सातवां घोड़ा** को दिया गया है जिसमें प्रेम के भाव तथा अर्थ को कवित्वमय रूप में अभिव्यक्त किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN HINDI

SURAJ KA SATVAN GHODA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producers: **NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORP.** and **DOORDARSHAN**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **SHYAM BENEGAL**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Hindi of 1992 is given to **SURAJ KA SATVAN GHODA** for its poetically charming enquiry into the nature and meaning of love.

निर्देशन के क्षेत्र में वर्ष 1974 में फ़िल्म **अंकुर** का निर्देशन करने से पूर्व **श्याम बेनेगल** का विज्ञापन में लंबा व्यावसायिक अनुभव रहा है। तब से, उन्होंने टेलीविज़न धारावाहिकों तथा वृत्तचित्रों के अलावा 20 कथाचित्रों का निर्माण किया है। उनकी फ़िल्मों में **निशान्त** (1975), **मंथन** (1976), **भूमिका** (1977), **जुनून** (1978), **कलयुग** (1980), **आरोहण** (1982), **सत्यजीत रे** (1984) और **अन्तर्नाद** (1992) प्रमुख हैं। उन्हें पद्मश्री और पद्म विभूषण, भारत के दो सर्वाधिक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

SHYAM BENEGAL had a long career in advertising before his directorial debut with the film **Ankur** in 1974. Since then, he has made 20 feature films, in addition to television serials and documentaries. Among his films are **Nishant** (1975), **Manthan** (1976), **Bhumika** (1977), **Junoon** (1978), **Kalyug** (1981), **Arohan** (1982), **Satyajit Ray** (1984) and **Antarnaad** (1992). He has received the Padma Shri and the Padma Bhushan, two of India's most prestigious awards.

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र पुरस्कार

हरकेया कुरि

निर्माता: **बी.बी. राधा** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **ललिता रवि (के.एस.एल. स्वामे)** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कन्नड़ कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार **हरकेया कुरि** को दिया गया है जिसमें वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों को राजनैतिक व्यंग्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है और भोले-भाले नागरिकों को राजनीतिज्ञों के निजी स्वार्थों के लिए उनके हाथों का मोहरा दिखाया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN KANNADA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **B.V. RADHA**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **LALITHA RAVEE (K.S.L. SWAME)**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Kannada of 1992 is given to **HARAKEYA KURI** for its political satire depicting the present-day social situation wherein the innocent citizens are made pawns in the hands of politicians with vested interests.

बी.बी. राधा 25 वर्षों से भी अधिक समय से सिनेमा के क्षेत्र से जुड़ी हुई हैं। उन्होंने कन्नड़, तेलुगु और तमिल की 150 से भी अधिक फ़िल्मों में अभिनय किया है। उन्हें अपने अभिनय के लिए कई पुरस्कार मिले हैं। उन्होंने राधा रवि चित्रा के सहयोग से चार कन्नड़ फ़िल्मों का निर्माण किया है। वे **हरकेया कुरि** की सह-निर्माता है।

B.V. RADHA has been in the field of cinema for over 25 years and : as acted in more than 150 films in Kannada, Telugu, and Tamil. She has won many awards for her acting.

She produced four Kannada films under the banner of Radha Ravi Chitra and she is the co-producer of **Harakeya Kuri.**

ललिता रवि (के.एस.एल. स्वामे) जो रवि के नाम से प्रसिद्ध हैं, कन्नड़ सिनेमा के जाने-माने निर्देशकों में से एक हैं। उन्होंने सामाजिक, पौराणिक, लोककथा, जीवनियों, वन्य-जीवन विषयों पर फ़िल्मों तथा साहसिक नाटकों सहित चालीस फ़िल्मों का निर्देशन किया है। उन्होंने अपनी कुछेक फ़िल्मों में अभिनय भी किया है और गीत भी गाए हैं। उन्होंने फ़िल्म-क्राफ्ट में जी.वी. अय्यर से प्रशिक्षण लिया और 1966 में एक स्वतंत्र निर्देशक के रूप में पहली बार फ़िल्म **तोगुदीपा** का निर्देशन किया। उनकी पुरस्कार पाने वाली फ़िल्मों में **मलय मारुता** को संगीत में सुर सिंगर संसद पुरस्कार तथा **जम्बू सवारी** को वर्ष 1990 में राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में स्वर्ण कमल मिला।

LALITHA RAVEE (K.S.L. SWAME), popularly known as Ravee, is one of the most renowned directors of Kannada cinema and has directed forty films including socials, mythologicals, folklore, biographicals, wildlife films and adventure dramas. He has acted and sung in some of his films. He trained in filmcraft with G.V. Iyer and made his debut as an independent director in 1966 with **Thogudeepa.** His award-winning films are **Malaya Maarutha,** which won the Sur Singar Sansad award for music, and **Jamboo Savaari**, which won the Swarna Kamal in the National Film Festival in 1990.

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र पुरस्कार

स्वरूपम

निर्माता: **पी.टी.के. मोहम्मद** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **के.आर. मोहनन्** को रजत पदक तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मलयालम कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार **स्वरूपम** को दिया गया है जिसमें उसकी मौलिक संकल्पना तथा प्रतिदिन के जीवन की कटु यथार्थता से पलायन कर अपने रहस्यमय अतीत में आश्रय पाने वाले व्यक्ति के मनोविज्ञान का गहन अध्ययन किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

SWAROOPAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **P.T.K. MOHAMMED**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **K.R. MOHANAN**

Citation
The Award for the Best Feature Film in Malayalam of 1992 is given to **SWAROOPAM** for its original concept and in-depth exploration of the psyche of a man who escapes into the mystic past to flee from the harsh reality of everyday life.

पी.टी.के. मोहम्मद ने **अश्वथामा, पुरुषार्थम** और **स्वरूपम** का निर्माण किया है और वे मलयालम कथाचित्र **मगरिब** का निर्देशन कर रहे हैं। उन्होंने **उप्पू** में मुख्य भूमिका निभाई, जिसे 1986 में सर्वोत्तम कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

P.T. KUNHI MOHAMMED produced **Aswatthama, Purushartham** and **Swaroopam** and is now directing **Magrib**, a feature film in Malayalam. He played the main role in **Uppu**, which won the national award for the best feature film in 1986.

के.आर. मोहनन् ने फ़िल्म तथा टेलीविज़न संस्थान, पुणे में फ़िल्म निर्देशन का अध्ययन किया। उनके प्रथम कथाचित्र **अश्वथामा** (1978) और **पुरुषार्थम** (1988) को सर्वोत्तम मलयालम फ़िल्म का केरल राज्य पुरस्कार मिला। मोहनन् ने केरल सरकार के विभिन्न विभागों के लिए 25 से भी अधिक वृत्तचित्रों का आलेखन तथा निर्देशन किया। आजकल वे केरल राज्य फ़िल्म विकास निगम में कार्यरत हैं।

K.R. MOHANAN studied film direction at the Film and Television Institute, Pune. His first feature films, **Aswatthama** (1978) and **Purushartham** (1988), won the Kerala State Award for the Best Malayalam Film. The latter also won the national award for the best Malayalam film. Mohanan has scripted and directed more than 25 documentaries for various departments of the Government of Kerala. He is now working in the Kerala State Film Development Corporation.

सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र पुरस्कार

एक होता विदूषक

निर्माता: **राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम लि.** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **डॉ. जब्बार पटेल** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मराठी कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार **एक होता विदूषक** को दिया गया है जिसमें चकाचौंधपूर्ण सिने जगत तथा राजनीतिज्ञों द्वारा शोषित सीधे-सादे तमाशा विदूषक के मानवता भरे चरित्र का निरूपण किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN MARATHI

EK HOTA VIDUSHAK

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Director: **NATIONAL FILM DEVELOPMENT CORP.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **DR. JABBAR PATEL**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Marathi of 1992 is given to **EK HOTA VIDUSHAK** for its humane portrait of a simple tamash clown sucked in by the glittering world of show business and exploited by politicians.

डॉ.जब्बार पटेल ने 1974 में फ़िल्म **सामना** के निर्देशक के रूप में अपने प्रथम प्रयास से पूर्व **घासी राम कोतवाल, थ्री पैनी ओपरा** तथा **पदगाम** नाटकों का निर्देशन किया और राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की। तब से, उन्होंने **जैत रे जैत** (1978), **सिंहासन** (1979), **उम्बरता** (1981), **सुबह** (1982), **मुसाफिर** (1985) तथा **एक होता बिदूषक** (1992) और अनेक वृत्तचित्रों का निर्देशन किया। उनकी कई फ़िल्में अंतराष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में प्रदर्शित हुई और उनकी बहुत प्रशंसा की गई।

DR. JABBAR PATEL directed the plays **Ghasiram Kotwal, Three Penny Opera** and **Padgam** and became well-known at a national level before he made his debut as a film director with **Saamna** in 1974. Since then, he has directed **Jait re Jait** (1978), **Simhasan** (1979), **Umbartha** (1981), **Subah** (1982), **Musafir** (1985) and **Ek Hota Vidushak** (1992), as well as a number of documentaries. Several of his films have been screened at international film festivals and have won critical acclaim.

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र पुरस्कार

विनया समया

निर्माता: **शंकर गोप** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **मनमोहन महापात्र** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम उड़िया कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार फ़िल्म **विनया समया** को दिया गया है जिसमें धन दौलत के चक्कर में पड़े आधुनिक युवा वर्ग के भ्रष्टाचार का सशक्त प्रतिपादन किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ORIYA

VINYA SAMAYA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **SHANKAR GOPE**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **MANMOHAN MAHAPATRA**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Oriya of 1992 is given to **VINYA SAMAYA** for its competent treatment of the corruption of modern youth in search of illusive wealth.

शंकर गोप ने व्यापार में अपने लंबे और सफल जीवन के पश्चात् 1989 में फ़िल्म और रंगमंच के क्षेत्र में प्रवेश किया। उन्होंने चार बंगला तथा दो उड़िया फ़िल्मों का निर्माण किया। **श्वेत पाथरेर थाला** (बंगला) और **विनया समया** (उड़िया) राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित हैं।

SHANKAR GOPE entered the field of film and theatre in 1989 after a long and successful career in business. He has produced four Bengali films and two Oriya films. **Shwet Paatharer Thaala** (Bengali) and **Vinya Samaya** (Oriya) are national award winners.

मनमोहन महापात्र ने भारतीय फ़िल्म तथा टेलीविज़न संस्थान, पुणे से स्नातक की डिग्री प्राप्त की और 1976 में अपनी प्रथम फ़िल्म **सीता राती** का निर्देशन किया। तब से, उन्होंने चार वृत्तचित्रों तथा नौ कथाचित्रों का निर्माण किया जिनमें से अधिकांश को पुरस्कार प्राप्त हुए। इस समय वे **मिस्ट बिआंड द होरिजन** नामक फ़िल्म बना रहे हैं। महापात्र ने कथा-लेखन किया है और वे **नीरब झाड़ा माझी पहाचा, किच्ची स्मृति, किच्ची अनुभूति** और कई अन्य फ़िल्मों का कला निर्देशन किया है। निशिधा स्वप्ना को 1988 में कला-निर्देशन का राज्य पुरस्कार मिला।

MANMOHAN MAHAPATRA graduated from the Film and Television Institute of India, Pune, and directed his first film, **Seeta Raati,** in 1976. Since then, he has made four documentaries and nine feature films, most of which have won awards. He is currently filming **Mist beyond the Horizon.** Mahapatra wrote the script and was associated with the art direction of **Neeraba Jhada, Majhi Pahacha, Kichhi Smruti, Kichhi Anubhuti** and several other feature films. **Nisidhha Swapna** won a state award for art direction in 1988.

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र पुरस्कार

तेवर मगन

निर्माता: **कमल हासन** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **भरतन्** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तमिल कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार **तेवर मगन** को दिया गया है जिसमें एक ऐसे सुशिक्षित युवक की गतिशील भूमिका का चित्रण किया गया है जो अन्याय से लड़ने के लिए गांव को लौट आता है तथा इस प्रक्रिया के दौरान उसके अन्दर की पाश्विक वृतियां जाग उठती हैं ।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TAMIL

THEVAR MAGAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **KAMAL HAASAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **BHARATHAN**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Tamil of 1992 is given to **THEVAR MAGAN** for its dynamic depiction of an educated youth who returns to his roots to fight injustice and in the process is forced to unleash the animal within him.

कमल हासन को चार वर्ष की आयु में **कालातुर कन्नम्मा** में अपने कार्य के लिए राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक मिला। छोटी आयु में ही वे एक रंगमंच ग्रुप में जा मिले और शास्त्री नृत्य तथा संगीत सीखा। कमल हासन ने तमिल, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़, हिंदी और अंग्रेजी की 150 से भी अधिक फ़िल्मों में अभिनय किया। **नायकन्, चाणक्यन, पुष्पक, गुना** और **तेवर मगन** उनकी कुछेक प्रयोगात्मक फ़िल्में हैं। उनकी चार फ़िल्मों को अमेरिकी ऑस्कर पुरस्कार के लिए भारतीय प्रविष्टि के रूप में नामित किया गया है। फ़िल्म **नायकन्** (1988) और **मुंडराम् पिरै** (1982) में उन्हें सर्वोत्तम अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

KAMAL HAASAN won the President's Gold Medal at the age of four for his performance in **Kalathur Kannamma.** At an early age he joined a theatre group and learned classical dance and music. Kamal Haasan has acted in more than 150 films in Tamil, Malayalam, Telugu, Kannada, Hindi and English. **Nayakan, Chanakyan, Pushpak, Gunaa** and **Thevar Magan** are some of his experimental films. Four of his films have been nominated as India's entry for the American Oscar. He won the national award for the best actor for his performances in **Nayakan** (1988) and **Mundram Pirai** (1982)

भरतन् मलयालम और तमिल के सुप्रसिद्ध फ़िल्म निर्माता हैं। उन्होंने 1975 में अपनी पहली फ़िल्म **प्रयाणम** बनाई। इसके पश्चात उन्होंने कई फ़िल्मों का निर्माण किया जिन्हें पुरस्कार प्रदान किए गए। भरतन् ने पैंतीस फ़िल्मों का निर्देशन किया जिनमें आठ को भारतीय पैनोरमा के लिए चुना गया और अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में प्रदर्शित किया गया। उन्हें निर्देशक और कला-निर्देशक के रूप में पुरस्कार मिले हैं और उन्होंने कई फ़िल्मों का सम्पादन किया, उनके लिए संगीत तैयार किया और गीत लिखे। उनकी सुप्रसिद्ध फ़िल्में **तकरा, रतिनिरवेदम, लॉरी, वैशाली, अमरम्** और **वेंगलम्** हैं।

BHARATHAN is a well-known film maker in Malayalam and Tamil. He made his first film, **Prayanam,** in 1975. It was followed by several award-winning films. Bharathan has directed thirty-five films, of which eight were selected for the Indian Panorama and screened at the International Film Festival. He has won awards as director and art director and has edited, scored music for and written lyrics for several films. Among his noteworthy films are **Thakara, Rathinirvedam, Lorry, Vaishali, Amaram** and **Vengalam.**

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र पुरस्कार

अंकुरम

निर्माता: **के.वी. सुरेश कुमार** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **सी. उमामहेश्वर राव** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम तेलुगु कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार तेलुगु फ़िल्म **अंकुरम** को एक ऐसी साधारण गृहिणी के संघर्ष के लिए दिया गया है जो अकेले ही दमनकारी व्यवस्था के विरोध में उठ खड़ी होती है और उसे इस कार्य में सफलता मिलती है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN TELUGU

ANKURAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **K.V. SURESH KUMAR**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **C. UMAMAHESWARA RAO**

Citation

The Award for the Best Feature Film in Telugu of 1992 is given to **ANKURAM** for the struggle of a simple housewife who fights an oppressive system single-handed and succeeds in making a dent.

के.बी. सुरेश कुमार का जन्म 1955 में हुआ। उन्होंने कला में स्नातक की डिग्री प्राप्त की और व्यापार–जगत में प्रवेश किया। **अंकुरम** उनकी पहली फ़िल्म है जिसकी लोगों ने बहुत सराहना की है।

K.V. SURESH KUMAR was born in 1955. He graduated in arts and entered the world of business. **Ankuram** is his first film venture and it has drawn a good response from the public.

सी. उमामहेश्वर राव कई वर्षों तक फ़िल्म उद्योग से जुड़े रहे और उन्होंने फ़िल्म निर्माण के सभी पहलुओं पर कार्य किया है। **अंकुरम** उनकी तीसरी ऐसी फ़िल्म है जिसका निर्देशन उन्होंने अकेले ही किया। उन्होंने तेलुगु में दो बहुत ही लोकप्रिय टेलीविज़न धारावाहिकों और महिलाओं के कल्याण पर कुछ लघु फ़िल्मों का भी निर्देशन किया है। वर्तमान में वे एक उच्च बजट की तेलुगु फ़िल्म पर कार्य कर रहे हैं।

C. UMAMAHESWARA RAO has been in the film industry for many years and has worked in all aspects of film-making. **Ankuram** is the third feature film he has directed independently. He has also directed two very popular television serials in Telugu and some short films on women's welfare. He is presently working on a high budget Telugu film.

सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र पुरस्कार (संविधान की आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भाषाओं के अलावा प्रत्येक भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार)

इलेक्ट्रिक मून

निर्माता: **एस.एस. बेदी** को रजत कमल तथा 20,000/- रुपए का नकद पुरस्कार
निर्देशक: **प्रदीप कृष्ण** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम अंग्रेजी कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार **इलेक्ट्रिक मून** को दिया गया है जिसमें एक जीर्ण-शीर्ण राजघराने की व्यंग्यपूर्ण पैरोडी प्रस्तुत की गई है और एक लुप्त हो रहे जीवन ढंग का हास्यपूर्ण एवं करुणामय चित्रण किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM IN ENGLISH (Best Feature Film in a Language other than those specified in Schedule VIII of the Constitution)

ELECTRIC MOON

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 to the Producer: **S.S. BEDI**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **PRADIP KRISHEN**

Citation

The Award for the Best Feature Film in English of 1992 is given to **ELECTRIC MOON** for its tongue-in-cheek parody of royalty gone to seed. A humorous depiction of a decaying way of life, not without its tragic undertones.

संदीप एस. बेदी ने वर्ष 1984 में स्वतंत्र रूप से टेली फ़िल्मों का निर्माण शुरू किया। उन्होंने दूरदर्शन के लिए तेरह भागों में बच्चों के धारावाहिक **टेलीफन** का निर्माण किया। उन्होंने **विल ऑफ स्टील** तथा **इन्विजिबल हैन्ड्स** का भी निर्माण किया। 1989 में वे पुरस्कार प्राप्त टेलीविज़न कथाचित्र **इन विच एनी गिवज़ इट दोज़ बन्ज** के कार्यकारी निर्माता थे।

SANDEEP SINGH BEDI started independent television productions in 1984. In 1985, he produced **Telefun,** a thirteen-part children's series for Doordarshan. He also produced **Will of Steel** and **Invisible Hands.** In 1989, he was executive producer for the award-winning television feature film, **In Which Annie Gives It Those Ones.**

प्रदीप कृष्ण ने मानव जातीय वृत्तचित्रों का निर्माण करने के लिए एक स्वतंत्र निर्माण कंपनी के रूप में 1980 में ग्रेपवाइन मीडिया की स्थापना की। 1983 में उन्होंने अपनी पहली फ़िल्म **मैसी साहिब** का निर्देशन किया, जो उनकी अपनी पुरस्कार पाने वाली पटकथा पर आधारित थी। फ़िल्म को वीनिस फ़िल्म समारोह में समीक्षक-पुरस्कार और भारतीय निर्देशक संघ की ओर से सर्वोत्तम निर्देशक का पुरस्कार मिला। कृष्ण की दूसरी कल्पित फ़िल्म **इन विच एनी गिवज़ इट दोज़ बन्ज** थी, जिसे दो राष्ट्रीय पुरस्कार मिले।

PRADIP KRISHEN set up Grapevine Media in 1980 as an independent production company making ethnographic documentaries. In 1983 he directed his first feature film, **Massey Sahib,** which was based on his own prize-winning script. The film won a Critic's Award at the Venice Film Festival and the Best Director Award from the Indian Director's Association. Krishen's second fictional film was **In Which Annie Gives It Those Ones,** which won two national awards.

राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

रोजा (तमिल)

निर्माता: **कवितालय प्रॉडक्शंस (प्रा.) लि.** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **मणि रत्नम्** को रजत कमल तथा 15,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार तमिल फ़िल्म **रोजा** को दिया गया है जिसमें समाज विरोधी गतिविधियों को अन्ततोगत्वा निरर्थक समझ लेने वाली स्वःकथित मुक्ति सेना द्वारा एक भारतीय वैज्ञानिक के अपहरण का रोमांचक ड्रामा प्रस्तुत किया गया है।

NARGIS DUTT AWARD FOR THE BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION

ROJA (Tamil)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer: **KAVITHALAYAA PRODUCTIONS (P) LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **MANI RATNAM**

Citation

The Award for the Best Feature Film on National Integration of 1992 is given to the Tamil film **ROJA** for presenting a thrilling drama of the abduction of an Indian scientist by a self-proclaimed liberation army which later realises the futility of its anti-social activities.

निर्देशक के रूप में **मणि रत्नम्** की पहली फ़िल्म **पल्लवी अनुपल्वी** (कन्नड़) थी, जिसे 1983 में सर्वोत्तम पटकथा के लिए कर्नाटक राज्य पुरस्कार मिला। **मौन रागम्** (1986), **नायकन्** (1987), **अग्नि नटचत्रम्** (1988), **गीतांजी** (1989), **दलापति** (1091) और **रोजा** (1992) पुरस्कार पाने वाली अन्य फ़िल्में हैं। **अंजलि** (1990) को ऑस्कर पुरस्कार के लिए भारत की प्रविष्टि के रूप में नामित किया गया। **मणि रत्मन्** ने अपनी कई प्रारंभिक फ़िल्मों के लिए पटकथाएं लिखीं।

MANI RATNAM's first directorial venture was **Pallavi Anupallavi** (Kannada), which won the Karnataka State Award for Best Screenplay in 1983. His other award-winning films are **Mouna Ragam** (1986), **Nayakan** (1987), **Agni Natchatram** (1988), **Gitanjali** (1989), **Dalapathi** (1991) and **Roja** (1992). **Anjali** (1990) was entered from India for the Oscar. Mani Ratnam has written the screenplay for many of his earlier films.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

श्वेत पाथरेर थाला (बंगला)

निर्माता: **शंकर गोप** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **प्रभात राय** को रजत कमल तथा 15,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार बंगला फ़िल्म **श्वेत पाथरेर थाला** को कुप्रथा का विरोध करने वाली एक विधवा के साहसपूर्ण चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

SHWET PAATHARER THAALA (Bengali)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer: **SHANKAR GOPE**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Producer: **PRABHAT ROY**

Citation

The Award for the Best Film on Family Welfare of 1992 is given to the Bengali film **SHWET PAATHARER THAALA** for its bold depiction of a widow who defies tradition.

शंकर गोप ने व्यापार में अपने लंबे और सफल जीवन के पश्चात् 1989 में फ़िल्म और रंगमंच के क्षेत्र में प्रवेश किया। उन्होंने चार बंगला तथा दो उड़िया फ़िल्मों का निर्माण किया। **श्वेत पाथरेर थाला** (बंगला) और **विनया समया** (उड़िया) राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित हैं।

SHANKAR GOPE entered the field of film and theatre in 1989 after a long and successful career in business. He has produced four Bengali films and two Oriya films. **Shwet Patharer Thala** (Bengali) and **Vinya Samaya** (Oriya) are national award winners.

प्रभात राय ने अपनी फ़िल्मों का निर्देशन करने से पूर्व शक्ति सामंत, प्रमोद चक्रवर्ती, असित सेन और तरुण मजूमदार जैसे निर्देशकों के साथ बारह वर्ष तक कार्य किया। उनकी प्रथम बंगला फ़िल्म **प्रतिदान** को बहुत सफलता मिली। तभी से उन्होंने **प्रतिकार, प्रतीक, पापी** और **अनुताप** सहित आठ सफल बंगला फ़िल्मों और तीन हिंदी फ़िल्मों का निर्माण किया है। उनके पटकथा लेखन तथा तकनीकी कार्य की भी व्यापक प्रशंसा की जाती है।

PRABHAT ROY worked with the directors Shakti Samanta, Promod Chakravorty, Asit Sen and Tarun Majumdar for twelve years before directing his own films. His first Bengali film, **Pratidaan,** was a hit. Since then, he has directed eight Bengali hits including **Pratikaar, Prateek, Paapi** and **Anutap,** as well as three Hindi films. His scripting and technical work are also widely appreciated.

सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार

नींग नल्ला इरुक्कणम (तमिल)

निर्माता: **जी.वी. फिल्म्स लि.** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **विशु** को रजत कमल तथा 15,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

मद्य निषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज विरोध, नशीली दवाओं के सेवन आदि जैसे अन्य सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार तमिल फ़िल्म **नींग नल्ला इरुक्कणम** को मद्य निषेध के मुद्दे को प्रभावी एवं उद्देश्यपूर्ण ढंग से प्रतिपादित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES

NEENGA NALLA IRUKKANUM (Tamil)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer: **G.V. FILMS LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **VISU**

Citation

The Award for the Best Film on Social Issues such as Prohibition, Women and Child Welfare, Anti-Dowry and Drug Abuse of 1992 is given to the Tamil film **NEENGA NALLA IRUKKANUM** for its effective and purposeful plea for prohibition.

एम. आर. विश्वनाथन, जो विशु के नाम से जाने जाते हैं, ने अपना व्यावसायिक जीवन 1969 में रंगमंच कलाकार के रूप में शुरु किया। उन्होंने कई नाटक भी लिखे। उसके बाद से उन्होंने **कुडुम्बम ओरु कदम्बम** में पटकथा लेखक तथा अभिनेता के रूप में फ़िल्म उद्योग में प्रवेश किया जिसे तमिलनाडू में अत्यधिक सफलता मिली। तब से उन्होंने **मणल कयिरू, कनमणि पूंगा, डोरी कल्याणम्** और कई अन्य लोकप्रिय फ़िल्मों में अभिनय और निर्देशन किया।

M.R. VISWANATHAN, popularly known as Visu, began as a stage actor in 1969 and also wrote several plays. He then entered the film industry as a script writer and actor in **Kudumbam Oru Kadambam,** which was a tremendous success in Tamil Nadu. Since then, he has acted in and directed **Manal Kayiru, Kanmani Poonga, Dowry Kalyanam** and several other popular films.

पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम पुरस्कार

चेलुवी (हिन्दी)

निर्माता: **सादिर मीडिया प्रा. लि.** को रजत कमल तथा 30,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **गिरीश कर्नाड** को रजत कमल तथा 15,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म **चेलुवी** को वनों के नाश की गंभीर समस्या को प्रत्यक्ष एवं प्रभावी रूप से निरूपित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON ENVIRONMENT/CONSERVATION/PRESERVATION

CHELUVI (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer: **SADIR MEDIA PVT. LTD.**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **GIRISH KARNAD**

Citation

The Award for the Best Film on Environment/ Conservation/ Preservation of 1992 is given to the Hindi film **CHELUVI** for its direct and effective communication of a threatening problem—deforestation.

गिरिश कर्नाड ने कर्नाटक विश्वविद्यालय और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अध्ययन किया । वे भारतीय फ़िल्म टेलीविज़न संस्थान, पुणे के निदेशक थे । उन्होंने 1970 में अपनी पहली फ़िल्म **संस्कार** की पटकथा लिखी और उसमें अभिनय किया । तबसे उन्होंने छः कथाचित्रों और कई वृत्त चित्रों का निर्देशन किया । उनके नाटकों के लिए उन्हें संगीत नाटक अकादमी और नाट्य संघ कमला देवी पुरस्कार मिले । उन्हें 1988 में संगीत नाटक अकादमी का अध्यक्ष नियुक्त किया गया । उन्हें 1974 में पद्मश्री तथा 1992 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया ।

GIRISH KARNAD studied at Karnatak University and Oxford University. He was Director of the Film and Television Institute of India, Pune. He scripted and acted in his first film **Samskara** in 1970. Since then, he has directed six feature films and several documentaries. His plays have won him the Sangeet Natak Akademi and the Natya Sangha's Kamaladevi Awards. He was appointed chairman of the Sangeet Natak Akademi in 1988. He was awarded the Padma Shri in 1974 and the Padma Bhushan in 1992.

सर्वोत्तम बाल कथाचित्र पुरस्कार

मुझसे दोस्ती करोगे (हिन्दी)

निर्माता: **राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केन्द्र** को स्वर्ण कमल तथा 30,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **गोपी देसाई** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम बाल कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म **मुझसे दोस्ती करोगे** को रोमांच एवं साहस की अपनी ही ख्याली दुनिया में खोए रहने वाले एक बच्चे के सहज और सस्नेह चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CHILDREN'S FILM

MUJHSE DOSTI KAROGE (Hindi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer: **NATIONAL CENTRE OF FILMS FOR CHILDREN AND YOUNG PEOPLE**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **GOPI DESAI**

Citation

The Award for the Best Children's Film of 1992 is given to the Hindi film **MUJHSE DOSTI KAROGE** for its gentle handling of a child who has exciting adventures in his own social dream world.

गोपी देसाई ने नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, नई दिल्ली से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने जाह्नु बरुआ, केतन मेहता, महेश भट्ट और रमेश सिप्पी द्वारा निर्देशित फ़िल्मों में अभिनय किया। उन्हें सर्वोत्तम अभिनेत्री के लिए तीन बार गुजरात राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने नाटकों और दूरदर्शन धारावाहिकों में भी अभिनय किया है। अनेक लघु फ़िल्मों की पटकथाएं लिखने और उनका निर्देशन करने के पश्चात्, उन्होंने अपना प्रथम कथाचित्र **मुझसे दोस्ती करोगे** का निर्माण कार्य पूरा किया। उनका दूसरा कथाचित्र **गन्तव्य** निर्माणाधीन है।

GOPI DESAI is a graduate from the National School of Drama, New Delhi. She has acted in films directed by Jahnu Barua, Ketan Mehta, Mahesh Bhatt and Ramesh Sippy and has thrice won the Gujarat State Award for best actress. She has also acted in plays and television serials. After having written and directed several short films, she completed her first feature film, **Mujhse Dosti Karoge**. Her second feature film, **Gantavya,** is under production.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

शिवाजी गणेशन् तथा केतन मेहता

शिवाजी गणेशन् को रजत कमल तथा 5,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

केतन मेहता को रजत कमल तथा 5,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्णायक मण्डल **तेवर मगन** के लिए अभिनेता **शिवाजी गणेशन्** को निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार प्रदान करता है।

निर्णायक मण्डल फ़िल्म **माया मेमसाब** के लिए **केतन मेहता** को भी निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार प्रदान करता है।

SPECIAL JURY AWARD

SIVAJI GANESAN and KETAN MEHTA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000 to **SIVAJI GANESAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000 to **KETAN MEHTA**

Citation

The Jury wishes to confer a Special Jury Award on thespian **SIVAJI GANESAN** for **THEVAR MAGAN.**

The Jury also wishes to confer a Special Jury Award on **KETAN MEHTA** for his film **MAYA MEMSAAB.**

शिवाजी गणेशन् का जन्म विल्लुपुरम में हुआ और उनका नाम चिन्नियापिल्लै गणेशन् था। 1946 में एक नाटक में एक मराठा योद्धा के रूप में अभिनय करते हुए रंगमंच पर उनका यह नाम हो गया। 1952 में अपनी प्रथम फ़िल्म **परशक्ति** से अब तक शिवाजी गणेशन् ने 250 से भी अधिक फ़िल्मों में अभिनय किया है। वे **बागपिरिविनै** (1959) में एक देहाती थे, **कप्पलोटिया तमिलन** (1961) में एक देशभक्त थे, **तिरुविलयाडल** (1965) में भगवान शिव थे और **पालुम पलमुम** (1961) में एक डाक्टर थे। **देव मगन** (1969) को ऑस्कर के लिए नामित किया गया था। सिनेमा में उनकी अभूतपूर्व सफलताओं के बावजूद भी उन्होंने ड्रामा में अपने आधार को नहीं छोड़ा और शिवाजी नाटक मनरम् को वित्तीय सहायता देना जारी रखा।

SIVAJI GANESAN, born Villupuram Chinniahpillai Ganesan, acquired his stage name when he acted as the Maratha warrior in a drama in 1946. Since his first film, **Parasakthi**, in 1952, Sivaji Ganesan has acted in more than 250 films. He was a rustic in **Bagapirivinai** (1959), a patriot in **Kappalottiya Tamizhan** (1961), Lord Shiva in **Tiruvilayadal** (1965), a doctor in **Paalum Pazhamum** (1961). **Deva Magan** (1969) was nominated for an Oscar. In spite of his roaring cinematic successes, he has not forgotten his roots in drama and continues to finance the Sivaji Nataka Manram.

केतन मेहता ने फ़िल्म तथा टेलीविज़न संस्थान, पुणे से फ़िल्म निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। 1972 से उन्होंने अनेक लघु फ़िल्मों, वृत्तचित्रों और टेलीविजन–कार्यक्रमों का निर्देशन तथा निर्माण किया है। उनकी कुछ पुरस्कार–प्राप्त फिल्में हैं – **भावनी भावै** (1979–80), **होली** (1983–84) और **मिर्च मसाला** (1985–86), केतन मेहता की अन्य प्रसिद्ध फ़िल्में **हीरो हीरालाल** (1987–88) और **मि० योगी** (1988) – तेरह भागों में टेलीविज़न धारावाहिक है।

KETAN MEHTA holds a diploma in film direction from the Film and Television Institute, Pune. Since 1972 he has directed and produced numerous short films, documentaries and television programmes. Some of his award-winning films are **Bhavni Bhavai** (1979-80), **Holi** (1983-84) and **Mirch Masala** (1985-86). Other notable films by Ketan Mehta are **Hero Hiralal** (1987-88) and **Mr. Yogi** (1988), a thirteen-episode television serial.

विशेष उल्लेख

सिब प्रसाद सेन

प्रशस्ति

विशेष उल्लेख का 1992 का पुरस्कार **सिब प्रसाद सेन** को फ़िल्म **पसन्दा पंडित** में उनके निर्देशन के क्षेत्र में उनके अभिनव प्रयास के लिए दिया गया है।

SPECIAL MENTION

SIBAPRASAD SEN

Citation

The Special Mention for 1992 is given to **SIBAPRASAD SEN** for his refreshing directorial debut in the film **PASANDA PUNDIT.**

सिबप्रसाद सेन एक बहु राष्ट्रीय कम्पनी के वरिष्ठ कार्यपालक हैं। उन्होंने जनतीय लोगों पर अनुसंधान किया है। अपने फ़िल्म कार्य में वे फ़िल्म निर्माता रितविक घटक से प्रभावित हुए हैं। सेन की पहली फ़िल्म **नागमति** को 1983 में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था। उन्होंने **पसंदा पंडित** की पटकथा भी लिखी है।

SIBAPRASAD SEN is a senior executive of a multinational company and has done research on tribal peoples. In his film work he has been influenced by the filmmaker Ritwik Ghatak. Sen's maiden film **Naagmati** won a national award in 1983. He has also written the screenplay for **Pasanda Pundit.**

पुरस्कार जो नहीं दिए गए

कथाचित्र निर्णायक मण्डल ने निम्नलिखित पुरस्कार नहीं दिया:

सर्वोत्तम पंजाबी कथाचित्र

निम्नलिखित भाषाओं की फ़िल्मों की प्रविष्टियां प्राप्त नहीं हुईं:–

1. गुजराती
2. कश्मीरी
3. सिंधी
4. उर्दू

AWARD NOT GIVEN

The Feature Film Jury did not give the following award:
Best Film in Punjabi

ENTRIES NOT RECEIVED IN THE FOLLOWING LANGUAGES:

1. Gujarati
2. Kashmiri
3. Sindhi
4. Urdu

ग़ैर-कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Non-Feature Films

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार

इन सर्च ऑफ इण्डियन थियेटर (अंग्रेजी)

निर्माता: **अरुणधति चटर्जी** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **अभिजीत चट्टोपाध्याय** को स्वर्ण कमल तथा 15,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार अंग्रेजी फ़िल्म **इन सर्च ऑफ इण्डियन थियेटर** को एक गहरी तथा संवेदनशील अन्तर्दृष्टि को समकालीन भारतीय थियेटर में निरूपित करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

IN SEARCH OF INDIAN THEATRE (English)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Producer: **ARUNDHATI CHATTERJEE**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000 to the Director: **ABHIJIT CHATTOPADHYAY**

Citation

The Award for the Best Non-Feature Film of 1992 is given to **IN SEARCH OF INDIAN THEATRE** for a deep and sensitive insight into contemporary Indian theatre.

अरुणधति चटर्जी व्यवसाय से शिक्षक हैं और कलकत्ता की प्रसिद्ध सामाजिक संस्थाओं—नारी सेवा संघ और विश्वविद्यालय महिला संघ की सक्रिय सदस्या हैं।

ARUNDHATI CHATTERJEE is a teacher by profession and is an active member of the well-known social organisations Nari Seva Sangha and University Women's Association of Calcutta.

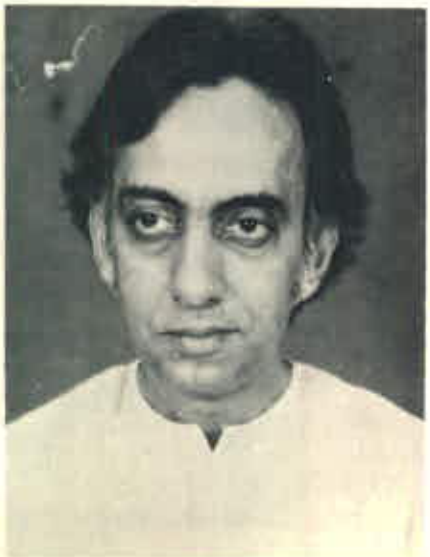

अभिजीत चट्टोपाध्याय को **छपकहानर बांगला हारफ़** और **ग्रेबन इमेज़** वृत्तचित्रों में उनके कार्य के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। उन्होंने 1989 में रवीन्द्रनाथ टैगोर के कार्य पर आधारित एक बंगला टेलीविज़न धारावाहिक **गोरा** की पटकथा लिखी, जिसे 1989 में टेलीविज़न पर दिखाया गया। उन्होंने हिन्दी टेलीविज़न धारावाहिक **प्रथम प्रतिश्रुति** में कला निर्देशक के रूप में काम किया, जिसे 1987 में टेलीविज़न पर दिखाया गया।

ABHIJIT CHATTOPADHYAY has won national awards for his work in the documentaries **Chhapakhanar Bangla Hàraf** and **Graven Image.** He wrote the script for **Gora,** a Bengali television serial based on the work of Rabindranath Tagore and telecast in 1989, and worked as art director in the Hindi television serial **Pratham Pratishrati,** telecast in 1987.

निर्देशक का सर्वोत्तम गैर-कथाचित्र पुरस्कार

नॉक आऊट (तमिल)

निर्माता: **बुद्धा पिक्चर्स, बी. लेनिन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **बी. लेनिन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम गैर-कथाचित्र का पुरस्कार **नॉक आऊट** को दिया गया है। निर्देशक ने घोर संकट स्थिति का सामना करने वाले मानव-मस्तिष्क की भुलभुलैया का प्रभावशाली सूक्ष्म चित्रण किया है।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

KNOCK-OUT (Tamil)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers: **BUDDHA PICTURES, B. LENIN**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **B. LENIN**

Citation

The Award for the Best First Non-Feature Film of a Director is given to **KNOCK-OUT.** The director has given us a powerful insight into the labyrinth of the human mind faced with a disaster situation.

बी.लेनिन एक अनुभवी फ़िल्म संपादक और निर्देशक हैं। उन्होंने मलयालम, तमिल और तेलुगु फ़िल्मों पर कार्य किया है और उन्हें तमिलनाडू तथा केरल से राज्य पुरस्कार मिले हैं। **हृतु बेदम, अमरम्, गीताजंली, नायकन, अंजलि** और **कडावु** ऐसी पुरस्कार-प्राप्त फ़िल्में हैं जिनसे वे सहयोजित रहे हैं। उन्होंने **यत्तनै कोणम् यत्तनै पारवै** तथा टेलीविज़न धारावाहिक **सोलड़ी शिवशक्ति** का निर्देशन किया।

B. LENIN is an experienced film editor and director. He has worked on films in Malayalam, Tamil and Telugu and has won State Awards in Tamil Nadu and Kerala. Among the award-winning films with which he has been associated are **Hridhu Bedham, Amaram, Geethanjali, Nayakan, Anjali** and **Kadavu.** He directed **Etthanai Konam Etthanai Paarvai** and the television serial **Solladi Sivasakthi.**

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फ़िल्म पुरस्कार

बांगला - ए गारो फेस्टीवल (अंग्रेजी)

निर्माता: **बप्पा रे** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **बप्पा रे** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय कथाचित्र का 1992 का पुरस्कार **बांगला - ए गारो फेस्टीवल** को दिया गया है जिसमें मेघालय के गारो समुदाय के जीवन-ढंग को बखूबी प्रस्तुत किया गया है।

AWARD FOR THE BEST ANTHROPOLOGICAL/ ETHNOGRAPHIC FILM

WANGALA—A GARO FESTIVAL (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **BAPPA RAY**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **BAPPA RAY**

Citation

The Award for the Best Anthropological/Ethnographic Film of 1992 is given to **WANGALA—A GARO FESTIVAL** for competently presenting the life-style of the Garo community of Meghalaya.

बप्पा रे वृत्तचित्र निर्माता हैं और जनजाति तथा जनजातीय विकास में उनकी व्यापक रुचि है। उनके कार्य में महाराष्ट्र के यायावरों और गुजरात, मेघालय, केरल तथा लदाख की जनजातियों पर फ़िल्में शामिल हैं। उन्होंने शिक्षा मंत्रालय के लिए **इम्पेक्ट आफ एडल्ट एजुकेशन इन द नार्थ ईस्ट स्टेट्स** का भी निर्माण किया है।

BAPPA RAY is a documentary filmmaker with a keen interest in tribes and tribal development. His work includes films on the nomads of Maharashtra, and on tribes in Gujarat, Meghalaya, Kerala and Ladakh. He has also made **Impact of Adult Education in the North East States** for the Ministry of Education.

सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म पुरस्कार

पंडित भीमसेन जोशी (हिन्दी)

निर्माता: **गुलज़ार** को (फ़िल्म प्रभाग के लिए) रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **गुलज़ार** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म का 1992 का पुरस्कार **पंडित भीमसेन जोशी** को महान रागाचार्य के जीवन का हृदयस्पर्शी चित्रण करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST BIOGRAPHICAL FILM

PANDIT BHIMSAIN JOSHI (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **GULZAR** for Films Division

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **GULZAR**

Citation

The Award for the Best Biographical Film of 1992 is given to **PANDIT BHIMSAIN JOSHI** for a moving rendering of the life of a great master of ragas.

गुलज़ार, व्यवसाय से गीतकार, पटकथाकार और निर्देशक, मूल रूप में आधुनिक संवेदनशीलता के कवि रहे हैं। वे 19वीं शताब्दी के पांचवे दशक में प्रगतिशील लेखक–आन्दोलन से सहयोजित रहे हैं। उन्होंने **आंधी, कोशिश, अचानक, किताब, मीरा, अंगूर** और **इज़ाज़त** फ़िल्मों की पटकथाएं लिखीं और निर्देशन किया। उन्हें **मौसम** के सर्वोत्तम निर्देशक का पुरस्कार, **इज़ाज़त** के सर्वोत्तम पटकथा लेखक का पुरस्कार, **उस्ताद अमजद अली खां** के लिए निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार तथा **लेकिन** के लिए सर्वोत्तम गीतकार का पुरस्कार मिला। गुलज़ार कविताओं, लघु कहानियों और एक उपन्यास के लेखक हैं।

GULZAR, a lyricist, scriptwriter and director by profession, has been basically a poet of modern sensitivity and was closely associated with the progressive writer's movement in the 1940s. He has written and directed **Aandhi, Koshish, Achanak, Kitab, Meera, Angoor** and **Ijaazat**. He won the award for the best director for **Mausam**, the award for best screenplay writer for **Ijaazat**, a special jury award for **Ustad Amjad Ali Khan** and the best lyricist award for **Lekin**. Gulzar is the author of poems, short stories and a novelette.

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म पुरस्कार

द रेक्लूस (हिन्दी) तथा सुचित्रा मित्रा (बंगला)

निर्माता: **अरविन्द सिन्हा** (द रेक्लूस) तथा **सैलेन सेठ** (सुचित्रा मित्रा) को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **अरविन्द सिन्हा** (द रेक्लूस) तथा **राजा सेन** (सुचित्रा मित्रा) को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म का 1992 का पुरस्कार **द रेक्लूस** को ध्रुपद के एक महान जीवित उस्ताद - उस्ताद अमीनुद्दीन डागर के उत्कृष्ट तथा प्रभावशाली योगदान के लिए दिया गया है।

सर्वोत्तम कला/सांस्कृतिक फ़िल्म का 1992 का पुरस्कार रवीन्द्र संगीत के सर्वश्रेष्ठ जीवित प्रतिपादक के प्रति चलचित्रीय सम्मान प्रदर्शित करने के लिए फ़िल्म **सुचित्रा मित्रा** को भी दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ARTS/CULTURAL FILM

THE RECLUSE (Hindi) and SUCHITRA MITRA (Bengali)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **ARVIND SINHA** (The Recluse) and **SAILEN SETH** (Suchitra Mitra)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **ARVIND SINHA** (The Recluse) and **RAJA SEN** (Suchitra Mitra)

Citation

The Award for the Best Arts/Cultural Film of 1992 is given to **THE RECLUSE** for a fine and moving tribute to one of the great living masters of Dhrupad—Ustad Aminuddin Dagar.

The Award for the Best Arts/Cultural Film of 1992 is also given to **SUCHITRA MITRA** for a cinematic tribute to the greatest living exponent of Rabindra sangeet.

अरविंद सिन्हा कलकत्ता विश्वविद्यालय से विज्ञान के स्नातक हैं। वे स्वतः शिक्षित फ़िल्म निर्माता हैं। उनका प्रथम वृत्तचित्र **चाऊः मास्क डांस आफ सेराईकेल्ला** था। इस फ़िल्म को बहुत अधिक पसंद किया गया और इसे लाइप्सिग अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में आमंत्रित किया गया। **रेक्लूज़** उनकी दूसरी फ़िल्म है।

ARVIND SINHA is a graduate in science from Calcutta University. He is a self-taught filmmaker. His first documentary film was **Chau: Mask Dance of Seraikella.** The film was highly acclaimed and was invited to the Leipzig International Film Festival.

सैलेन सेठ ने नाटक में विशेष विषय लेकर रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय से आनर्स-स्नातक की डिग्री प्राप्त की है। वे एक प्रसिद्ध कवि और गीतकार हैं तथा उन्होंने बंगला कविताओं की कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं। कला तथा सांस्कृतिक कार्यों के प्रचार में लगी हुई कम्पनी, रूपोकर (इंडिया) प्रा. लि. के प्रबंध निदेशक के रूप में सुचित्रा मित्रा उनकी प्रथम फ़िल्म है।

SAILEN SETH is an honours graduate from Rabindra Bharati University with drama as his special subject. He is an eminent poet and lyricist and has published several books of Bengali poems. **Suchitra Mitra** is his first film venture as managing director of Rupokar (India) Pvt. Ltd., a company engaged in propagation of arts and cultural activities.

राजा सेन ने समाज के सभी वर्गों के लिए दूरदर्शन पर राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय दोनों ही प्रसारणों के लिए फ़िल्में बनाई हैं। उन्होंने बंगला में टेलीविज़न नाटकों, धारावाहिकों तथा वृत्तचित्रों का निर्देशन किया है। उन्हें टेलीविज़न धारावाहिक **सुबर्णलता** में अपने कार्य के लिए आजकाल टेलीविज़न पुरस्कार, किशोर कुमार पुरस्कार, प्रोमोतेश बरुआ पुरस्कार तथा लायन्स क्लब पुरस्कार मिला।

RAJA SEN has created films for both national and regional telecast on Doordarshan to communicate with all strata of society. He has directed Bengali television dramas, serials and documentaries. He won the Aajkaal Television Award, the Kishore Kumar Award, the Promotesh Barua Award and the Lions Club Award for his work in the television serial **Subarnalata.**

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म पुरस्कार

चुनौती (मराठी)

निर्माता: **महानिदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क, महाराष्ट्र सरकार** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **दिनकर चौधरी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म का 1992 का पुरस्कार (पर्यावरण तथा परिस्थिति विज्ञान संबंधी फ़िल्मों सहित) फ़िल्म **चुनौती** को दिया गया है जिसमें वर्तमान युग की खतरनाक बीमारी - एड्स का समुचित ढंग से साहसिक प्रस्तुतिकरण किया गया है।

AWARD FOR THE BEST SCIENTIFIC FILM

CHUNAUTI (Marathi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **D.G. INFORMATION AND PUBLIC RELATIONS, GOVT. OF MAHARASHTRA**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **DINKAR CHOWDHARY**

Citation

The Award for the Best Scientific Film,including Environment and Ecology Film) of 1992 is given to the film **CHUNAUTI** for its daring presentation in a befitting manner of the most dangerous disease of present times—AIDS.

दिनकर चौधरी ने फ़िल्म तथा टेलीविज़न संस्थान, पुणे से पटकथा लेखन और निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया है। उन्होंने अनेक वृत्तचित्रों तथा **अकांक्षा, खजुराहो के पार** और **गिरोह** कथाचित्रों का निर्देशन किया है। फ़िल्मों से संबंधित कई संस्थाओं से उनका संबंध है और वे एक प्रसिद्ध कवि भी हैं।

DINKAR CHOWDHARY holds a diploma in screenplay writing and direction from the Film and Television Institute, Pune. He has directed a large number of documentaries and the feature films **Akanksha, Khajuraho Ke Paar** and **Girho**. He is involved in several film-related organisations and is also well known as a Hindi poet.

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण फ़िल्म पुरस्कार

लदाख - द फारबिडन वाइल्डरनेस (अंग्रेजी)

निर्माता: **बेदी फ़िल्म्स** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **नरेश बेदी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम पर्यावरण/संरक्षण/परिरक्षण का 1992 का पुरस्कार **लदाख - द फारबिडन वाइल्डरनेस** को विश्व में सबसे अधिक ऊंचाई पर बसी सभ्यता और वन्य-जीवन की प्रामाणिक व्याख्या करने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST ENVIRONMENT/ CONSERVATION/PRESERVATION FILM

LADAKH—THE FORBIDDEN WILDERNESS (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **BEDI FILMS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **NARESH BEDI**

Citation

The Award for the Best Environment/Conservation/Preservation Film of 1992 is given to **LADAKH—THE FORBIDDEN WILDERNESS** for an authentic rendition of civilisation and wildlife on the roof of the world.

नरेश बेदी एक पुरस्कार विजेता निर्देशक और छायाकार हैं। वे वन्य-जीवों से संबंधित फ़िल्मों के जाने–माने निर्माता हैं। वे ब्रिस्टल में वाइल्डस्क्रीन 84 में वर्ष के सर्वोत्तम वन्य-जीव छायाकार माने गए हैं। **सेविंग द टाईगर** को वर्ष 1987 में एम्मी पुरस्कार और ब्रिटिश फ़िल्म तथा टेलीविज़न कला अकादमी पुरस्कार के लिए नामित किया गया था। बेदी को हाथी, मानवखोर चीते, एशियाई शेर और सांप पर अपनी फ़िल्मों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिली। वे अब लदाख क्षेत्र के दुर्लभ वन्य-जीवों पर तीन वर्षीय अध्ययन पूरा कर रहे हैं।

NARESH BEDI is an award-winning director and cameraman and a leading maker of wildlife films. He was adjudged the best wildlife cameraman of the year at Wildscreen 84 in Bristol. **Saving the Tiger** was nominated in 1987 for the Emmy Award and for the British Academy of Film and Television Arts award. Bedi has won international acclaim for his films on the elephant, the man-eating tiger, the Asiatic lion and the snake. He is now completing a three-year study on rare wildlife of the Ladakh region.

सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म का पुरस्कार

साऊंड ऑफ द डाईंग कलरस (असमिया)

निर्माता: **पारन बार बरूआ, बी.बी. प्रॉडक्शन्स** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **शेर चौधरी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म (पर्यटन, निर्यात, क्राफ्ट्स, उद्योग आदि क्षेत्रों सहित) का 1992 का पुरस्कार **साऊंड ऑफ द डाईंग कलरस** फ़िल्म को दिया गया है क्योंकि फ़िल्म में ऐसी विलुप्त हो रही कलाओं के संरक्षण के विषय को उजागर किया गया है जो शताब्दियों से अनेक जनजातीय समुदायों में विद्यमान थीं।

AWARD FOR THE BEST PROMOTIONAL FILM

SOUND OF THE DYING COLOURS (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **PARAN BARBAROOAH, B.B. PRODUCTIONS**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **SHER CHOUDHURY**

Citation

The Award for the Best Promotional Film (to cover tourism, exports, crafts, industry, etc.) of 1992 is given to the film **SOUND OF THE DYING COLOURS** as the film makes out a good case for preserving the arts of dyeing that have existed in many tribal communities for centuries.

खिलाड़ी के रूप में प्रसिद्ध **पारन बार बरुआ** ने वर्ष 1985 में पूर्णावधि के कथाचित्र **सुरूज** के साथ सिनेमा–जगत में प्रवेश किया , जिसे वाणिज्यिक सफलता मिली। उन्होंने **ब्रिकुदार बरुआर बिया** तथा **मोन अरण्य** टेलीविज़न धारावाहिकों का निर्माण किया। **साऊन्ड आफ द डाईंग कलरज,** उत्तर–पूर्व पर उनके द्वारा निर्मित दो फ़िल्मों में से पहली फ़िल्म है।

PARAN BARBAROOAH, well-known as a sportsman, entered the world of cinema in 1985 with the full-length feature film **Surooj**, which became a commercial success. He has produced the television serials **Brikudar Baruar Biya** and **Mon Aranya. Sound of the Dying Colours** is the first of the two documentaries he has produced on the North East.

संगीत में पारंगत **शेर चौधरी** धीरु भुयान की फ़िल्म **प्रथम रागिनी** (1987) में संगीत निर्देशक तथा मुख्य सहायक के रूप में फ़िल्मों में आए। उन्हें पूर्वी भारत चलचित्र संघ समारोहों में दो बार सर्वोत्तम संगीत निर्देशक का पुरस्कार तथा फ़िल्म **बोसोबिपो** में सर्वोत्तम संगीत निर्देशन के लिए सर्वोत्तम राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्होंने **सन्स आफ़ अबोटनी** में मुख्य सहायक तथा संगीत निर्देशक के रूप में कार्य किया और **हलधर** के लिए संगीत दिया। दोनों ही फ़िल्मों को वर्ष 1991 में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

SHER CHOUDHURY, a man of music, entered films in Dhiru Bhuyan's **Pratham Ragini** (1987) as music director and chief assistant. He has twice received the best music director's award in the Eastern India Motion Pictures Association Festivals, and the national award for best music direction in the film **Wosobipo**. He worked as chief assistant and music director in **Sons of Abotani** and scored music for **Haladhar**. Both films were national award-winners in 1991.

सर्वोत्तम कृषि फ़िल्म पुरस्कार

बेर (अंग्रेजी)

निर्माता: **ओम प्रकाश शर्मा, फ़िल्म्स प्रभाग** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **राजगोपाल राव** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कृषि फ़िल्म का 1992 का पुरस्कार भारत में शुष्क क्षेत्रों में बेर की खेती की प्रक्रिया के कुशल प्रस्तुतीकरण के लिए फ़िल्म **बेर** को दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AGRICULTURAL FILM

BER (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **OMPRAKASH SHARMA, FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **RAJGOPAL RAO**

Citation

The Award for the Best Agricultural Film (to include related and allied subjects such as animal husbandry and dairying) of 1992 is given to the film **BER** for a skilful rendition of the process in the cultivation of ber in the arid zones of India.

ओमप्रकाश शर्मा ने वर्ष 1960 से फ़िल्म प्रभाग में कार्य किया है। उन्होंने 20 से भी अधिक लघु फ़िल्मों का निर्माण तथा निर्देशन किया है और तीस से भी अधिक अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं। **मार्कफ़ेड मार्चिंज़ अहेड, इरेडिकेटिंग रिंडरपेस्ट, डेजर्ट रीक्लामेशन, प्रोस्पेरिटी इन ड्राटप्रोन एरियाज़, संदेश, मेरीकल्चर, हाईड्रम, क्राफ्ट चाराक्कु** तथा **लछमी** उनकी कुछ प्रसिद्ध फ़िल्में हैं।

OMPRAKASH SHARMA, who has worked with the Films Division since 1960, has produced and directed more than 200 short films and has won over thirty international and national awards. Some of his notable films are **Markfed Marches Ahead, Eradicating Rinderpest, Desert Reclamation, Prosperity in Drought-Prone Areas, Sandesh, Mariculture, Hydrum, Craft Charakku** and **Lachhmi.**

राजगोपाल राव ने मैसूर में प्रीमियर स्टूडियों के कैमरा विभाग में कार्य किया है। उन्होंने वर्ष 1974 में सहायक कैमरामैन के रूप में फ़िल्म प्रभाग में कार्य ग्रहण किया है। कैमरामैन के रूप में उन्होंने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों का छायांकन किया है उन्होंने तीस से भी अधिक लघु वृत्तचित्रों का निर्माण तथा निर्देशन किया है। उनमें से **एरिड होर्टिकल्चर, डक्स आऊट आफ वाटर** तथा **टेक्नीक आफ़ सीड प्रॉडक्शन** को पुरस्कार मिले हैं।

RAJGOPAL RAO worked in the camera department of Premier Studio in Mysore and joined the Films Division in 1974 as assistant cameraman. As a cameraman he covered national and international events. He directed and produced more than thirty short documentary films. Among them, **Arid Horticulture, Ducks Out of Water** and **Technique of Seed Production** have won awards.

सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

चूड़ियां (हिन्दी)

निर्माता: **सई परांजपे** (फ़िल्म्स प्रभाग के लिए) को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **सई परांजपे** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

मद्यनिषेध, महिलाओं, बाल-कल्याण, दहेज-विरोध, नशीले पदार्थों, विकलांग-कल्याण आदि जैसे सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म का 1992 का पुरस्कार फ़िल्म **चूड़ियां** को दिया गया है जिसमें अपने समुदाय के पुरुष वर्ग में शराबनोशी का विरोध करने वाले औरतों के साहस का सजीव चित्रण किया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES

CHOODIYAN (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **SAI PARANJPYE** for Films Division

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **SAI PARANJPYE**

Citation

The Award for the Best Film on Social Issues such as Prohibition, Women and Child Welfare, Anti-dowry, Drug Abuse and Welfare of the Handicapped of 1992 is given to **CHOODIYAN** for portraying the courage of women in fighting alcoholism among the menfolk of the community.

सई परांजपे ने दिल्ली तथा बम्बई टेलीविज़न और बी.बी.सी. के लिए फ़िल्में बनाई हैं। उन्होंने **अंगूठा छाप, रैन बसेरा, द्राखी** तथा **द हेल्पिंग हैंड** (अंतिम नाम वाली फ़िल्म बी.बी.सी. के लिए) टेलीफ़िल्मों और **छोटे–बड़ा** तथा **ऐडोस पैडोस** धारावाहिकों का निर्देशन किया। परांजपे ने कथाचित्र **स्पर्श** (1978–79) का निर्देशन, पटकथा तथा संवाद–लेखन किया, जिसके लिए उन्हें राष्ट्रपति का स्वर्ण–पदक, दो राष्ट्रीय पुरस्कार तथा तीन फ़िल्मफेयर पुरस्कार मिले। **कथा** (1990–91) को सर्वोत्तम हिंदी फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। **दिशा** (1990–91) को भारतीय पैनोरमा के लिए चुना गया और उसे मान्ट्रियल, लंदन, फ़ुकुओका, ताईवान, केन्निस, मिलवेली, सिडनी और गोथनबर्ग में अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में प्रदर्शित किया गया तथा जापान, यू.के., आस्ट्रेलिया और बेल्ज़ियम में टेलीविज़न पर दिखाया गया। फ़िल्म को केन्निस में दो पुरस्कार मिले। परांजपे ने बच्चों की फ़िल्मों और वृत्तचित्रों का भी निर्देशन किया है। उनके नाटकों को, जिनमें बच्चों के कई नाटक शामिल हैं, राष्ट्रीय और राज्य स्तर के पुरस्कार मिले हैं ।

SAI PARANJPYE has made films for Delhi and Bombay television as well as the BBC. She directed the telefilms **Angootha Chhaap, Rainbasera, Drakhi** and **The Helping Hand** (the last-named film for the BBC) and the serials **Chhote-Bada** and **Ados Pados**. The feature film **Sparsh** (1978-79), which Paranjpye directed and wrote the screenplay and dialogues for, won the President's Gold Medal, two national awards and three Filmfare awards. **Katha** (1983-84) won the national award for the best Hindi Film. **Disha** (1990-91) was selected for the Indian Panorama, was screened at international film festivals in Montreal, London, Fukuoka, Taiwan, Cannes, Mill Valley, Sydney and Gothenburg and was telecast in Japan, the United Kingdom, Australia and Belgium. The film won two awards at Cannes. Paranjpye has also directed children's films and documentaries. Her plays, including several children's plays, have won national and state awards.

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म पुरस्कार

कलरिपयट (अंग्रेजी) तथा **टुवर्डज ज्वाय एंड फ्रीडम** (अंग्रेजी)

निर्माता: **पी. अशोक कुमार** (कलरिपयट) तथा **हेमन्ती बनर्जी, एच.बी. प्रॉडक्शन्स** (टुवर्डज ज्वाय एंड फ्रीडम) को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार
निर्देशक: **पी. अशोक कुमार** (कलरिपयट) तथा **हेमन्ती बनर्जी** (टुवर्डज ज्वाय एंड फ्रीडम) को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म का 1992 का पुरस्कार केरल की युद्धकला का अद्वितीय चित्रण करने के लिए फ़िल्म **कलरिपयट** को दिया गया है।
सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फ़िल्म का 1992 का पुरस्कार रवीन्द्र नाथ टैगोर के शांति निकेतन में प्रचलित शिक्षा पद्धति का निरूपण करने के लिए फ़िल्म **टुवर्डज ज्वाय एंड फ्रीडम** को दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDUCATIONAL/ MOTIVATIONAL/INSTRUCTIONAL FILM

KALARIPPAYAT (English) and TOWARDS JOY AND FREEDOM (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **P. ASHOK KUMAR** (Kalarippayat) and **HAIMANTI BANERJEE, H.B. Production** (Towards Joy and Freedom)
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **P. ASHOK KUMAR** (Kalarippayat) and **HAIMANTI BANERJEE** (Towards Joy and Freedom)

Citation

The Award for the Best Educational/Motivational/Instructional Film of 1992 is given to **KALARIPPAYAT** for a unique picturisation of the martial art of Kerala.
The Award for the Best Educational/Motivational/Instructional Film of 1992 is also given to **TOWARDS JOY AND FREEDOM** for insight into the system of education being practised at Rabindranath Tagore's Shantiniketan.

पी. अशोक कुमार की अपने कालेज के दिनों से ही नाटक तथा सिनेमा में बहुत रुचि रही है। वे कैम्पस थियेटर में बहुत सक्रिय थे और उन्होंने मंच पर अभिनय भी किया। वे फ़िल्म निर्माण के कार्य में बारह वर्षों तक जुड़े रहे। **कलरिपयट** के निर्माण की तैयारी में उन्होंने कला का अध्ययन किया और केरल में व्यापक भ्रमण किया। फ़िल्म को अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह, 1993 में शामिल करने हेतु भारतीय पैनोरमा के लिए चुना गया है।

P. ASHOK KUMAR showed a keen interest in drama and cinema from his college years. He was active in campus theatre and went on to act on stage. He was associated with filmmaking for twelve years. In preparation for the making of **Kalarippayat** he studie the art and travelled extensively in Kerala. The film was selected for the Indian Panorama of the 1993 international film festival.

हेमन्ती बनर्जी ने दृश्य–श्रव्य सम्प्रेषण का शिक्षण दिया है और रितविक घटक तथा सत्यजीत रे की फ़िल्मों पर भाषण दिए हैं। उन्होंने रितविक घटक पर एक मोनोग्राफ प्रकाशित किया है। 1988 से उन्होंने छः शिक्षाप्रद कार्यक्रमों तथा **गंगुते** (1990) और **यल्लमा, द मदर आफ आल** (1991) का निर्माण किया है। हेमन्ती बनर्जी ने शांति निकेतन में शिक्षा ग्रहण की है।

HAIMANTI BANERJEE has taught audiovisual communication and lectured on the films of Ritwik Ghatak and Satyajit Ray. She has published a monograph on Ritwik Ghatak. Since 1988 she has produced six educational programmes and the documentaries **Gangutai** (1990) and **Yellama, The Mother of All** (1991). Haimanti Banerjee was educated at Shantiniketan.

सर्वोत्तम गवेषण/साहसी फ़िल्म पुरस्कार

एन्टार्क्टिका - ए सांइटिस्ट पैराडाइज (अंग्रेजी) (न्यूज़ मैगजीन नं. 231)

निर्माता: **आर कृष्ण मोहन, फ़िल्म्स प्रभाग** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार
निर्देशक: **ए. उदयशंकर** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम गवेषण/साहसी फ़िल्म (खेलों सहित) का 1992 का पुरस्कार एन्टार्क्टिका के बर्फ से जमे महाद्वीप में हमारे वैज्ञानिकों के चित्रांकन के प्रभावशाली रिकार्ड के लिए **एन्टार्क्टिका - ए सांइटिस्ट पैराडाइज** को दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EXPLORATION/ ADVENTURE FILM

ANTARCTICA—A SCIENTISTS' PARADISE (English) (News Magazine No. 321)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **R. KRISHNA MOHAN, FILMS DIVISION**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **A. UDAYASHANKAR**

Citation

The Award for the Best Exploration/Adventure Film (to include sports) of 1992 is given to **ANTARCTICA—A SCIENTISTS' PARADISE** for an impressive pictorial record of achievements of our scientists on the frozen continent of Antarctica.

आर. कृष्ण मोहन ने फ़िल्म प्रभाग में कथा लेखक के रूप में फ़िल्मों में अपना सक्रिय व्यावसायिक जीवन शुरु किया। उन्होंने 1982 में फ़िल्मों का निर्देशन करना शुरु किया। उन्होंने चालीस से भी अधिक फ़िल्में बनाईं तथा साठ से भी अधिक वृत्त–चित्रों का निर्माण किया। उनकी संगीतमय फ़िल्म **त्यागब्रह्मम्** को 1990 में लघु फ़िल्मों के लिए बम्बई में हुए प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में दिखाया गया। फ़िल्म प्रभाग में संयुक्त मुख्य निर्माता (न्यूज़रील) के रूप में आर. कृष्ण मोहन समाचार पर आधारित वृत्तचित्रों का निर्माण तथा निर्देशन करते हैं। **क्राइसिस इन श्रीलंका, गिव पीस ए चांस, टीयर्स एण्ड स्माइल्स** तथा **हम कौन हैं** उनकी कुछ अन्य फ़िल्में हैं।

R. KRISHNA MOHAN began his active career in films as a script writer in the Films Division. He began directing films in 1982. He has made over forty films and produced over sixty news documentaries. His musical film **Thyagabrahmam** was screened in the First Bombay International Film Festival for Short Films in 1990. As Joint Chief Producer (Newsreel) at the Films Division, R. Krishna Mohan produces and directs news-based documentaries. Some of his other films are **Crisis in Sri Lanka, Give Peace a Chance, Tears and Smiles** and **Hum Kaun Hai.**

ए. उदयशंकर ने छायांकन में डिप्लोमा लिया हुआ है और उन्होंने फ़िल्म प्रभाग में कैमरामैन और बाद में न्यूज़रील अधिकारी के रूप में कार्य किया है। उन्हें समाचार कवर करने का व्यापक अनुभव है। उन्हें 1983 तथा 1986 में दो बार सर्वोत्तम न्यूज़रील कैमरामैन का पुरस्कार दिया गया है।

A. UDAYASHANKAR hold a diploma in cinematography and has worked in the Films Division as cameraman and later as newsreel officer. He has wide experience in news coverage and has won the Best Newsreel Cameraman Award twice, in 1983 and in 1986.

सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म पुरस्कार

राम के नाम (हिन्दी)

निर्माता: **आनन्द पटवर्धन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **आनन्द पटवर्धन** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम खोजी फ़िल्म का 1992 का पुरस्कार **राम के नाम** को वर्तमान प्रमुख समस्या—सामुदायिक भेदभाव पर फ़िल्म के कुशल निर्माण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST INVESTIGATIVE FILM

RAM KE NAAM (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **ANAND PATWARDHAN**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **ANAND PATWARDHAN**

Citation

The Award for the Best Investigative Film of 1992 is given to **RAM KE NAAM**, a skilfully made film on a major problem of the times—the communal divide.

आनन्द पटवर्धन ने बंगला देश के शरणार्थियों के लिए धन इकट्ठा करने, बिहार में गांव–स्तर पर प्रजातंत्र, 1975–77 की आपात–कालीन स्थिति के राजनैतिक कैदियों, कनाडा में फार्म श्रमिक संघ, बम्बई की गंदी बस्तियों में रहने वाले लोगों, पंजाब में रुढ़िवादी आतंक और राज्य के दमन पर वृत्तचित्र बनाए हैं। **प्रिजनर्स आफ कांशिएंस** (1979) को टाइन पुरस्कार (यू.के.) मिला। **ए टाईम टू राइज़** (1981) को सिल्वर डोव (लाइप्सिग) और टाइन पुरस्कार मिले। **बोम्बे अवर सिटी** (1985) को पेरिस में सिनेमा दु रील समारोह में निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार, सर्वोत्तम गैर कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार और फ़िल्म फेयर पुरस्कार मिला। **इन मेमोरी आफ फ्रेन्ड्स** (1990) को बम्बई में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय वृत्तचित्र समारोह में रजत शंख मिला।

ANAND PATWARDHAN has made documentaries on fund raising for Bangladesh refugees, grassroots democracy in Bihar, political prisoners of the 1975-77 Emergency, a farm workers' union in Canada, slum-dwellers of Bombay, and fundamentalist terrorism and state repression in Punjab. **Prisoners of Conscience** (1979) won the Tyne Award (UK), **A Time to Rise** (1981) won the Silver Dove (Leipzig) and the Tyne Award, **Bombay Our City** (1985) won the Special Jury Prize at the Cinema du Reel in Paris (1986), the national award for best non-feature film, and the Filmfare Award, and **In Memory of Friends** (1990) won the Silver Conch at the Bombay International Documentary Film Festival.

सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म पुरस्कार

गाय की सच्चाई (हिन्दी) तथा द थ्रेडज

निर्माता: **क्लाईंब फ़िल्म्स एण्ड एन.सी.वाई.पी.** (गाय की सच्चाई) तथा **बी.आर. शेंडगे, फ़िल्म्स प्रभाग** (द थ्रेडज) को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **भीमसेन** (गाय की सच्चाई) तथा **गिरीश राव** (द थ्रेडज) को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

कार्टूनिस्ट: **भीम सेन** (गाय की सच्चाई) और **गिरीश राव** (द थ्रेडज) को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म का 1992 का पुरस्कार **गाय की सच्चाई** को दिया गया है जिसमें नैतिक मूल्यों को प्रदर्शित करने के लिए रूपक का आश्रय लेकर सकुशल कथा-चित्रण किया गया है।

सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म का 1992 का पुरस्कार **द थ्रेडज** को भी दिया गया है, जो एकता को प्रदर्शित करने वाली एक कार्टून फ़िल्म है।

AWARD FOR THE BEST ANIMATION FILM

GAAYE KI SACHAI (Hindi) and THE THREADS

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producers: **CLIMB FILMS & N'CYP** (Gaaye ki Sachai) and **B.R. SHENDGE, FILMS DIVISION** (The Threads)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **BHIMSAIN** (Gaaye ki Sachai) and **GIRISH RAO** (The Threads)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Animators: **BHIMSAIN** (Gaaye ki Sachai) and **GIRISH RAO** (The Threads)

Citation

The Award for the Best Animation Film of 1992 is given to **GAAYE KI SACHAI** for an allegorical story skilfully told about moral values.

The Award for the Best Animation Film of 1992 is also given to **THE THREADS**, an innovative film on the theme of unity.

बी.आर. शेंडगे फिल्म प्रभाग, बम्बई में निर्माता हैं और उन्होंने विभिन्न प्रकार की लघु कार्टून फ़िल्मों की पटकथा लिखी है, उनके लिए कार्टून बनाए हैं, उनका निर्देशन किया है तथा निर्माण किया है। इस वर्ष के पुरस्कार के अलावा उन्हें दस राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं। उनकी अनेक फ़िल्मों को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति भी प्राप्त हुई है।

B.R. SHENDGE is a producer at the Films Division, Bombay, and has scripted, animated, directed and produced various types of animated short films. He has received ten national awards in addition to this year's award. Many of his films have also won international recognition.

भीमसेन ने पार्श्व कलाकार के रूप में और उसके पश्चात फ़िल्म प्रभाग में अभिन्यास कलाकार के रूप में काम किया है तथा अनेक पुरस्कार–प्राप्त वृत्तचित्रों में अपना सहयोग दिया है। जब वे प्रसाद प्रॉडक्शन्स में थे, तब उन्होंने **द क्लाइम्ब** का निर्माण किया जिसे शिकागो फ़िल्म समारोह में रजत ह्यूगो पुरस्कार मिला। उन्होंने विज्ञापन फ़िल्मों, शिक्षाप्रद फ़िल्मों, लघु फ़िल्मों तथा कथाचित्रों का निर्माण किया है।

BHIMSAIN worked as a background artist and then as a layout artist with the Films Division and contributed to several award-winning documentaries. While working with Prasad Productions, he made the film **The Climb**, which won the Silver Hugo Award at the Chicago International Film Festival. He has made ad films, educational films, short films and feature films.

गिरीश राव ने 1978 में कलाकार के रूप में फ़िल्म प्रभाग में कार्य ग्रहण करने से पूर्व प्रसिद्ध कार्टूनकार राम मोहन और भीमसेन के साथ काम किया था। उन्होंने विभिन्न विज्ञापन तथा कार्टून वृत्तचित्रों में काम किया है। उन्होंने **द लास्ट पफ़, हर्ट टू हर्ट** और **द ब्रेडज़** का निर्देशन किया और उनके लिए कार्टून बनाए।

GIRISH RAO worked with the well-known animators Ram Mohan and Bhimsain before he joined the Films Division in 1978 as an artist. He worked on various ad and animated documentary films. He has directed and animated **The Last Puff, Heart to Heart** and **The Threads.**

निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार

नूट्टअनटीनटे साक्षी (मलयालम)

निर्माता: **सलम करस्सेरी** तथा निर्देशक: **शशि भूषण** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 1992 का निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार फ़िल्म **नूट्टअनटीनटे साक्षी** को कालीकट, करेल के साहसी तथा देशभक्त शतवर्षीय महिदु मौलवी के हृदयस्पर्शी चित्रण के लिए दिया गया है।

SPECIAL JURY AWARD

NOOTTANTINTE SAKSHI (Malayalam)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer **SALAM KARASSERY** and the Director **SASIBHUSHAN**

Citation

The Special Jury Award for 1992 is given to **NOOTTANTINTE SAKSHI** for a moving narrative about the courageous Maulvi patriot and centenarian Moidu Maulvi of Calicut, Kerala.

सलम करस्सेरी ने भारतीय सिनेमा और नाटक पर पांच पुस्तकें प्रकाशित की हैं। वे केरल में सुप्रसिद्ध मंच अभिनेता हैं और उन्होंने **चूहि, क्रिमनल्स, चुवन्न वितुकल, संग गानम्** और **पदिनालाम् रावु** कथाचित्रों का निर्माण किया है। **चुवन्न वितुकल** और **संग गानम्** को अनेक पुरस्कार मिले और उन्हें भारतीय पैनोरमा में तथा दूरदर्शन राष्ट्रीय नेटवर्क में दिखाया गया। **नूट्टअनटीनटे साक्षी** उनका प्रथम वृत्तचित्र है।

SALAM KARASSERY has published five books on Indian cinema and drama, is a well-known stage actor in Kerala and has acted in five Malayalam films. He produced the feature films **Chuzhi, Criminals, Chuvanna Vithukal, Sangh Ganam** and **Pathinalam Ravu. Chuvanna Vithukal** and **Sangha Ganam** won several awards and were screened in the Indian Panorama and on the national network of Doordarshan. **Noottantinte Sakshi** is his first documentary film.

शशि भूषण ने सम्प्रेषण तथा पत्रकारिता विषयों का अध्ययन किया और फुलब्राइट फैलोशिप के आधार पर साइराक्यूज़ विश्वविद्यालय (यू.एस.ए.) से टेलीविज़न फ़िल्म निर्माण में इन्टर्नशिप की परीक्षा पूरी की है। उन्होंने दूरदर्शन केंद्र, त्रिवेन्द्रम के लिए अनेक कार्यक्रमों की पटकथा लिखी और उनका प्रस्तुतीकरण किया। **नूट्टअनटीनटे साक्षी** उनकी पहली फ़िल्म है।

SASIBUSHAN studied communication and journalism and completed an internship in television production in Syracuse Univesity (USA) on a Fulbright Fellowship. He has scripted and presented several programmes for Doordarshan Kendra of Trivandrum. **Noottantinte Sakshi** is his maiden film venture.

लघु कल्पित सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

अगर आप चाहें (हिन्दी)

निर्माता: **शहनाज़ रहीम, फ़िल्म्स प्रभाग** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **मजाहिर रहीम** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

लघु कल्पित सर्वोत्तम फ़िल्म (70 मिनट से कम समय की) का 1992 का पुरस्कार एक ऐसे ग्रामीण समुदाय की मर्मस्पर्शी कहानी के लिए **अगर आप चाहें** को दिया गया है जिसे एक कृषि विकास बैंक द्वारा समय पर दी गई प्रदत्त सहायता से नगर प्रवास-गमन के लिए रोका जा सका।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

AGAR AAP CHAHEIN (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **SHAHNAZ RAHIM, FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **MAZAHIR RAHIM**

Citation

The Award for the Best Short Fiction Film (not exceeding 70 minutes) of 1992 is given to **AGAR AAP CHAHEIN** for a moving story of a village community which has been saved from migration to a city by timely help from a bank for agricultural development.

शहनाज़ रहीम ने फ़िल्म प्रभाग के वृत्त चित्र **हैरिटेज आफ़ ज़िंक** के कार्यकारी निर्माता के रूप में अपना फ़िल्मी व्यावसायिक जीवन शुरू किया। उसके पश्चात् उन्होंने **ए जर्नी थ्रू आर्ट** तथा **इक्विपमेंट मैनेज़मेंट** का निर्माण किया। उन्होंने **और भी हैं राहें** (1987), **ताने-बाने** (1988) और **मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद** (1989) जैसे दूरदर्शन कार्यक्रमों तथा **जीना इसी का नाम है** (1990) के निर्माता और सहयोगी के रूप में कार्य किया है।

SHAHNAZ RAHIM started her film career as an executive producer for a Films Division documentary, **Heritage of Zinc.** She then produced **A Journey through Art** and **Equipment Management.** She has worked as producer and partner for the Doordarshan programmes **Aur Bhi Hain Raahen** (1987), **Tane-Bane** (1988) and **Maulana Abul Kalam Azad** (1989) as well as the telefilm **Jeena Isi Ka Naam Hain** (1990).

मजाहिर रहीम फ़िल्म तथा टेलीविज़न संस्थान, पुणे से सिनेमा में स्नातक हैं। उन्होंने फ़िल्म प्रभाग, भारत सरकार तथा अन्य संगठनों के चालीस वृत्तचित्रों की पटकथा लिखी है और उसका निर्देशन किया है। उन्होंने **और भी हैं राहें, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, ताने-बाने** और **द स्वार्ड आफ टीपू सुल्तान** सहित छः प्रमुख टेलीविज़न धारावाहिकों का निर्माण, संपादन और निर्देशन किया है।

MAZAHIR RAHIM is a graduate in cinema from the Film and Television Institute, Pune. He has scripted and directed forty documentaries for the Films Division, the Government of India and other organisations. He has produced, edited and directed six major television serials, including **Aur Bhi Hain Raahen, Maulana Abul Kalam Azad, Tane-Bane** and **The Sword of Tipu Sultan.**

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म पुरस्कार

सुनो बहुरानी (हिन्दी)

निर्माता: **ओमप्रकाश शर्मा, फ़िल्म्स प्रभाग** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

निर्देशक: **के. के. कपिल** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म का 1992 का पुरस्कार कठपुतलियों की सहायता से परिवार-कल्याण विषय पर कुशल कथा-चित्रण के लिए **सुनो बहुरानी** को दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

SUNO BAHU RANI (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Producer: **OMPRAKASH SHARMA, FILMS DIVISION**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Director: **K.K. KAPIL**

Citation

The Award for the Best Film on Family Welfare of 1992 is given to **SUNO BAHU RANI** as it is a deftly made film with the aid of puppets on the theme of family welfare.

ओमप्रकाश शर्मा ने वर्ष 1960 से फ़िल्म प्रभाग में कार्य किया है। उन्होंने 20 से भी अधिक लघु फ़िल्मों का निर्माण तथा निर्देशन किया है और तीस से भी अधिक अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं। **मार्कफ़ेड मार्चिंज़ अहेड, इरेडिकेटिंग रिंडरपेस्ट, डेजर्ट रीक्लामेशन, प्रोस्पेरिटी इन ड्राटप्रोन एरियाज़, संदेश, मेरीकल्चर, हाईड्रम, क्राफ्ट चाराक्कु** तथा **लछमी** उनकी कुछ प्रसिद्ध फ़िल्में हैं।

OMPRAKASH SHARMA, who has worked with the Films Division since 1960, has produced and directed more than 200 short films and has won over thirty international and national awards. Some of his notable films are **Markfed Marches Ahead, Eradicating Rinderpest, Desert Reclamation, Prosperity in Drought-Prone Areas, Sandesh, Mariculture, Hydrum, Craft Charakku** and **Lachhmi.**

के. के. कपिल ने फ़िल्म प्रभाग में बत्तीस वर्षों तक विभिन्न पदों पर कार्य किया और वे संयुक्त मुख्य निर्माता के रूप में सेवानिवृत्त हुए। उस अवधि के दौरान उन्हें निर्देशक और/या निर्माता के रूप में कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। उन्होंने **एन एनकाऊंटर विद फोर्सिस** का निर्माण किया, जिसे चलचित्र, कला एवं विज्ञान अकादमी द्वारा ऑस्कर पुरस्कार के लिए नामित किया गया। अब वे एक स्वतंत्र निर्माता के रूप में वृत्तचित्रों का निर्माण कर रहे हैं।

K.K. KAPIL worked in the Films Division in various capacities for over thirty-two years and retired as its Joint Chief Producer. During that time he received a number of national and international awards as director and/or producer. He produced **An Encounter with Faces,** which was nominated for an Oscar Award by the Academy of Motion Picture Arts and Sciences. He is now producing documentary films as an independent producer.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

सौमेन्दु रे

छायाकार: **सौमेन्दु रे** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

फ़िल्म लेबोरेट्री प्रोसेसिंग: **एड-लेब बम्बई** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर कथाचित्र में सर्वोत्तम छायांकन 1992 का पुरस्कार **सौमेन्दु रे** को बंगाल के भू-दृश्य के बहुरूपों तथा प्रसिद्ध गायिका सुमित्रा मित्रा के फ़िल्म चित्रांकन के लिए फ़िल्म **सुचित्रा मित्रा** में उनके कार्य के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

SOUMENDU RAY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Cameraman: **SOUMENDU RAY**

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the laboratory processing the film: **AD-LAB BOMBAY**

Citation

The Award for the Best Cinematography for a non-feature film of 1992 is given to **SOUMENDU RAY** for his work in the film **SUCHITRA MITRA** for capturing on celluloid the many moods of the Bengal landscape and picturisation of the famous singer Suchitra Mitra.

सौमेन्दु रे ने 1960 से 1984 तक सत्यजीत रे के साथ छायाकार के रूप में काम किया। उन्होंने तपन सिन्हा, तरुण मजूमदार, अर्पणा सेन और अन्य प्रसिद्ध फ़िल्म निर्देशकों के साथ भी काम किया है। इससे पूर्ण उन्हें तीन बार **अशानी संकेत, सोनार केला** तथा **शतरंज के खिलाड़ी** के लिए सर्वोत्तम छायाकार का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है।

SOUMENDU RAY worked with Satyajit Ray as cinematographer from 1960 to 1984. He also worked with Tapan Sinha, Tarun Majumdar, Aparna Sen and other eminent film directors. He has thrice before received the National Award for Best Cinematography, for **Ashani Sanket, Sonar Kella** and **Satranj ke Khelari.**

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

संजय चटर्जी

ध्वनि आलेखक: **संजय चटर्जी** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर कथाचित्र में सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का 1992 का पुरस्कार **संजय चटर्जी** को फ़िल्म की गुणवत्ता को सुसमृद्ध करने वाले दुर्गम स्थलों के उच्चस्तरीय ध्वनि संयोजन के लिए फ़िल्म **बांगला - ए गारो फेस्टीबल** में उनके कार्य के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

SANJOY CHATTERJEE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Audiographer: **SANJOY CHATTERJEE**

Citation

The Award for the Best Audiography in a non-feature film of 1992 is given to **SANJOY CHATTERJEE** for his work in the film **WANGALA—A GARO FESTIVAL** for a sustained standard of sound recording on difficult locations which enriches the quality of this film.

संजय चटर्जी का जन्म 1967 में कलकत्ता में हुआ था। वे युवावस्था से ही फ़िल्म निर्माण के कार्य से सहयोजित रहे हैं। उन्होंने गौतम घोष की **मोहर** पर सह ध्वनि आलेखक के रूप में कार्य किया है, जिसे सर्वोत्तम ध्वनि संयोजन का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। वे **ग्रेवन इमेज़, इन सर्च साफ इण्डियन थियेटर** तथा **पद्मा नदीर माझी**, सभी पुरस्कार-प्राप्त फ़िल्मों के ध्वनि आलेखक थे।

SANJOY CHATTERJEE was born in 1967 in Calcutta. He has been associated with filmmaking from a young age. He worked as associate recordist on Goutam Ghose's **Mohor,** which won the national award for best audiography. He was recordist for **Graven Image, In Search of Indian Theatre** and **Padma Nadir Majhi,** all award-winning films.

सर्वोत्तम सम्पादन पुरस्कार

के.आर. बोस

सम्पादक: **के.आर. बोस** को रजत कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

गैर कथाचित्र में सर्वोत्तम सम्पादन का 1992 का पुरस्कार **के.आर. बोस** को फ़िल्म **कलरिपयट** में लय और गीत के कुशल संयोजन तथा कठिन दृश्य-क्रमों के कुशल सम्पादन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

K.R. BOSE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Editor: **K.R. BOSE**

Citation

The Award for the Best Editing of a non-feature film of 1992 is given to **K.R. BOSE** for his work in the film **KALARIPPAYAT** for deft cutting of difficult sequence which makes it possible to maintain the rhythm and tempo of the film.

के. आर. बोस ने जी. अरविंदन द्वारा निर्मित पांच कथाचित्रों तथा ग्यारह वृत्तचित्रों का संपादन किया है। उन्होंने जिन अन्य पुरस्कार-प्राप्त फ़िल्मों का संपादन किया है, उनके नाम हैं—**रिवरज़ आफ़ केरला, कलामण्डलम कृष्णन नायर, पंचवाद्यम, देवगृह्म** और **कलामण्डलम कृष्णमूर्ति पोडुवाल**। उन्होंने **अर्पणा, ग्रीष्मम्, अमणम्किली** और **सम्वल सरन्गल** कथाचित्रों का भी संपादन किया है।

K.R. BOSE has edited five feature films and eleven documentaries made by G. Aravindan, many of which have won awards. Other award-winning documentaries he has edited are **Rivers of Kerala, Kalamandalam Krishnan Nair, Panchavadyam, Devagriham** and **Kalamandalam Krishnankutty Poduval.** He has also edited the feature films **Aparna, Greeshmam, Savidham, Ammanamkili** and **Samvalsarangal.**

पुरस्कार जो नहीं दिए गए

गैर कथाचित्र निर्णायक मण्डल ने सर्वोत्तम एतिहासिक पुनर्निर्माण/संकलन फ़िल्म का पुरस्कार नहीं दिया।

AWARD NOT GIVEN

The Non-Feature Film Jury did not give the award for the Best Historical Reconstruction/Compilation Film

सिनेमा लेखन पुरस्कार

Awards for Writing on Cinema

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक पुरस्कार

आवारा (अंग्रेजी)

लेखिका: **गायत्री चटर्जी** को स्वर्ण कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार
प्रकाशक: **विले ईस्टर्न लि.** को स्वर्ण कमल तथा 10,000/- रुपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सिनेमा पर वर्ष 1992 का सर्वोत्तम पुस्तक पुरस्कार **गायत्री चटर्जी** को उनकी पुस्तक **आवारा** के लिए दिया गया है। उनकी यह रचना व्यक्तिगत तथा सामाजिक दोनों स्तरों पर फ़िल्म आवारा की व्याख्या का एक अनूठा प्रयास है। पुस्तक के माध्यम से हमें नए स्वतंत्र भारत के सामाजिक तथा आर्थिक ताने-बाने की एक सटीक झांकी मिलती है। इस दृष्टि से इस प्रयास को राजकपूर की कलात्मक संवेदना का सहज विस्तार कहा जा सकता है।

AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA

AWARA (English)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Author: **GAYATRI CHATTERJEE**
Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Publisher: **WILEY EASTERN LTD.**

Citation

The Award for the Best Book on Cinema of 1992 is given to **AWARA** by Gayatri Chatterjee. Her work is a novel experiment, which analyses the film in depth both at a personal and at a social level. What emerges is a clear reflection of the socio-economic fabric of a newly independent India. The book can be rightly termed an extension of Raj Kapoor's artistic sensibilities.

1986 में एन.एफ.ए.आई. संकाय का सदस्य बनने से पूर्व **गायत्री चटर्जी** ने कई वर्षों तक फ़िल्म तथा फ़िल्म-स्तुति की शिक्षा ग्रहण की। वे विस्कान्सिन विश्वविद्यालय (यू.एस.ए.) में अतिथि संकाय सदस्य भी बनीं और सारे देश में पाठ्यक्रमों की शिक्षा दी। उन्होंने हार्वर्ड फ़िल्म विद्यालय में काम किया जहां उन्होंने रितविक घटक की फ़िल्मों पर एक पुस्तक तैयार की तथा दक्षिणी कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कली में भाषण दिए। **आवारा**, विली ईस्टर्न द्वारा तैयार किए गए तीन मोनोग्राफों में से प्रथम है।

GAYATRI CHATTERJEE studied film and film appreciation for several years before she became a member of the NFAI faculty in 1986. She also became a guest faculty member at the University of Wisconsin (USA) and taught courses all over the country. She worked at the Harvard Film School preparing a book on the films of Ritwik Ghatak and lectured at the University of Southern California and at Berkeley. **Awara** is the first of three one-film monographs commissioned by Wiley Eastern.

दिलीप कश्यप ने ब्लैकी एण्ड सन (इंडिया) लि. में आठ वर्ष कार्य किया और 1984 में उन्होंने विली ईस्टर्न लि. में संवर्धन अधिकारी के रूप में कार्य ग्रहण किया। अब वे विशेष परियोजना प्रभाग के संपादक तथा मंडल प्रबंधक हैं जिसमें शैक्षिक वीडियो फ़िल्मों, क्षेत्रीय भाषाओं में साक्षरता-उपरांत सामग्री, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम तथा सिनेमा संगीत और अभिनय संबंधी कलाओं की साहित्यिक सामग्री के वितरण का कार्य किया जाता है। **आवारा** उस श्रृंखला का एक भाग है जिसे विली लोकप्रिय साहित्य के रूप में भारतीय सिनेमा की मुख्य धारा को बढ़ावा देने के लिए विकसित कर रहा है।

DILIP KASHYAP worked with Blackie and Son (India) Ltd. for eight years and joined Wiley Eastern Ltd. as promotional manager in 1984. He is now Editor and Divisional Manager of the Special Projects Division, which looks after the distribution of educational video films, post-literacy material in regional languages, material for the Adult Education Programme and literature on cinema, music and the performing arts. **Awara** is part of a series Wiley is developing to promote popular literature on Indian mainstream cinema.

सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक पुरस्कार

सुधीर बोस

समीक्षकः **सुधीर बोस** को स्वर्ण कमल तथा 10,000/- रूपए का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 1992 का सर्वोत्तम फ़िल्म समीक्षक पुरस्कार **सुधीर बोस** को दिया गया है। श्री बोस का लेखन समाचार पत्रों या पत्रिकाओं की समीक्षा के सामान्य दायरों के परे है। उनके विश्वासों की दृढ़ता उनके फ़िल्म लेखन में भारत ही नहीं विश्व सिनेमा में भी प्रांतीय और जातीय आयामों की गहराइयां मापने में सहायक है। वे भारतीय सिनेमा पर लिखें अथवा हंगारियन या अमेरिका सिनेमा पर, श्री बोस के लेखों में एक दुलर्भ अनुभूति का बोध होता है।

AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC

SUDHIR BOSE

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to the Critic: **SUDHIR BOSE**

Citation

The Award for the Best Film Critic of 1992 is given to **SUDHIR BOSE.** His writings go beyond newspaper or magazine journalism. His courage of conviction helps him to reflect most authentically the regional and ethnic sensibilities of cinema across the globe. Whether it be Indian cinema or Hungarian or even American, Mr. Bose's articles portray a rare kind of perception.

सुधीर बोस एक ऐसे स्वतंत्र फ़िल्म समीक्षक हैं जिन्होंने राष्ट्रीय समाचारपत्रों तथा प्रतिष्ठित फ़िल्म पत्रिकाओं के लिए लिखा है। उन्होंने एक फ़िल्म पत्रिका का सम्पादन, प्रकाशन और मुद्रण किया है। वे केंद्रीय फ़िल्म प्रमाणीकरण बोर्ड के दिल्ली सलाहकार पैनल और शैक्षिक फ़िल्मों के मूल्यांकन के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग पैनल के सदस्य हैं। बोस को ब्रिटिश परिषद और फ्रांस सरकार की छात्रवृत्तियां प्राप्त हुईं और संयुक्त राष्ट्र अध्यापन-कार्य मिला। वे दिल्ली विश्वविद्यालय के शहीद भगत सिंह कालेज में अंग्रेजी के रीडर हैं।

SUDHIR BOSE is a freelance film critic who has written for national newspapers and prestigious film periodicals. He has edited, published and printed a film journal and has sat on the Delhi Advisory Panel of Central Board of Film Certification and the UGC panel for evaluating educational films. Bose has held British Council and French Government scholarships and a United Nations teaching assignment. He is Reader in English at the Shaheed Bhagat Singh College, University of Delhi.

कथासार: कथाचित्र

Synopses: Feature Films

अंगार

हिंदी/रंगीन/160 मिनट

निर्माता/निर्देशक: के. शशिलाल नायर **पटकथा लेखक:** सुनीत सेन **मुख्य अभिनेता:** जैकी श्रॉफ **मुख्य अभिनेत्री:** डिम्पल कपाड़िया **सह-अभिनेता:** नाना पाटेकर **सह-अभिनेत्री:** नीना गुप्ता **बाल कलाकार:** आशीर्वाद शिंदे **छायाकार:** ईश्वर बिरदी **ध्वनि आलेखक:** विजय भोपे **संपादक:** वाहन गुरु : **कला निर्देशक:** आर. वर्मन **संगीत निर्देशक:** लक्ष्मीकांत प्यारे लाल **पार्श्व गायक:** एस.पी. बालासुब्रह्मणियम **पार्श्व गायिका:** लता मंगेशकर **गीत:** आनंद बख्शी **नृत्य कलाकार:** चिन्नी प्रकाश, कमल, फरहा खान **वेश-भूषा डिज़ाइनर:** अन्ना सिंह **विशेष प्रभाव:** के. शशिलाल नायर

जग्गू एक बेरोज़गार स्नातक है जो बम्बई में अपने मध्यवर्गीय माता-पिता के साथ रहता है। माजिद खान, जो एक अपराधी वर्ग के सरगना का बेटा है, उस जायदाद को हथियाना चाहता है, जिसपर जग्गू का घर बना हुआ है। घेटो के नवयुवक संगठित हो जाने और अपने घर बचाने का फैसला करते हैं। खान और उसके आदमी जग्गू और उसके दोस्तों पर काबू पा लेते हैं और उन्हें वापिस भेज देते हैं, परन्तु जग्गू अपना बदला लेने के लिए वापिस आता है।

ANGAAR

Hindi/colour/160 min.

Producer/Director: K. Sashilaal Nair **Screenplay Writer:** Sujit Sen **Leading Actor:** Jackie Shroff **Leading Actress:** Dimple Kapadia **Supporting Actor:** Nana Patekar **Supporting Actress:** Neena Gupta **Child Artiste:** Ashirwad Shinde **Cinematographer:** Ishwar Bidri **Audiographer:** Vijay Bhope **Editor:** Wahan Guru **Art Director:** R. Varman **Music Director:** Laxmikant Pyarelal **Male Playback Singer:** S.P. Balasubramaniam **Female Playback Singer:** Lata Mangeshkar **Lyrics:** Anand Bakshi **Choreographers:** Chinny Prakash, Kamal, Farha Khan **Costume Designer:** Anna Singh **Special Effects:** K. Sashilaal Nair

Jaggu is an unemployed graduate living in Bombay with his middle-class parents. Majid Khan, son of an underworld don, wants to acquire the property on which Jaggu's ghetto stands. The ghetto youths decide to unite and fight to keep their home. The Khans overcome Jaggu and his friends and manage to send him away, but Jaggu returns to take his revenge.

अंकुरम

तेलुगु/रंगीन/30 मिनट
निर्माता: के. वी सुरेश कुमार **निर्माता/पटकथा लेखक:** सी. उमामहेश्वर राव **मुख्य अभिनेता:** शरत बाबू **मुख्य अभिनेत्री:** रेवती **सह-अभिनेता:** बलोआ, ओमपुरी **सह-अभिनेत्री:** माधुरी **ध्वनि आलेखक:** मधु अम्बत **संपादक:** के. रवीन्द्र बाबू **कला निर्देशक:** रमन **संगीत निर्देशक:** हंसलेखा **पार्श्व गायक:** एस.पी. बालासुब्रह्मणियम **पार्श्व गायिका:** चित्रा **गीत:** श्रीवेल्ला सीताराम शास्त्री **वेश-भूषा डिज़ाइनर:** कौंडिया **नृत्य कलाकार:** शिवा सुब्रह्मणियम **विशेष प्रभाव:** हज़ीम

ससुराल जाते समय ट्रेन-यात्रा में सिंदूरा को सत्यम् एक बेबी को उठाने के लिए कहता है और वह रेलवे स्टेशन से ही गायब हो जाता है। जब उसके गंतव्य स्थान पर उसका पति रघु उससे मिलता है तो बच्चे को देखकर हैरान हो जाता है। उसकी मां बच्चे को वापिस लौटा देने पर दबाव डालती है। सिंदूरा और रघु, सत्यम् की तलाश करते हैं। उन्हें पुलिस तथा अन्य अधिकारियों द्वारा रोका जाता है जो सत्यम् की गलत गिरफ़्तारी तथा उस पर किए गए जुल्म को छिपाना चाहते हैं।

रघु, सिंदूरा को तलाक देना चाहता है, जो अपने पिता के घर लौटती है और उसे उनका समर्थन मिलता है। उसके पिता तथा उसका वकील सत्यम् की खोज में निकलते हैं और इस बात का पता लगा लेते हैं कि वह अपने गांव से क्यों भागा था—उसकी पत्नी की हत्या तथा पुलिस अधिकारियों द्वारा उसको तंग करना। अंत में उनकी सहायता करने के लिए एक ऐसा व्यक्ति सामने आता है जिसने अपनी बेटी को गुंडों द्वारा जिंदा जलाते हुए देखा था और जिसके लिए अपराधियों के खिलाफ गवाही देने के लिए कोई भी व्यक्ति आगे नहीं आया था।

ANKURAM

Telugu/colour/130 min.

Producer: K.V. Suresh Kumar **Director/Screenplay Writer:** C. Umamaheshwara Rao **Leading Actor:** Sarat Babu **Leading Actress:** Revathi **Supporting Actors:** Balaoah, Om Puri **Supporting Actress:** Madhuri **Child Artiste:** Maghana **Cinematographer:** Madhu Ambat **Editor:** K. Ravindrababu **Art Director:** Ramana **Music Director:** Hamsalekha **Male Playback Singer:** S.P. Balasubramaniam **Female Playback Singer:** Chitra **Lyrics:** Sirivella Seetarama Sastry **Costume Designer:** Kondiah **Choreographer:** Siva Subrahmanyam **Special Effects:** Hazeem

Sindhura, on her train journey to her in-laws' house, is given a baby to hold by Satyam, who disappears in a railway station. When her husband Raghu meets her at her destination he is surprised to see the child. His mother insists that the child be returned. Sindhura and Raghu start on a search for Satyam. They are hampered by police and other officials who are covering up the wrongful arrest and torture of Satyam.

Raghu seeks to divorce Sindhura, who returns to her father and wins his support. Her father and her lawyer track down Satyam and discover what made him flee his village—the murder of his wife and harassment from police officials. They are finally helped in their case by an official who has seen his daughter burnt alive by hooligans and no one come forward to bear witness against the criminals.

भगवद् गीता

संस्कृत/रंगीन/150 मिनट
निर्माता: टी. सुब्बारामी रेड्डी **निर्देशक/पटकथा लेखक:** जी. वी. अय्यर **मुख्य अभिनेता:** राघवेन्द्र **मुख्य अभिनेत्री:** नीना गुप्ता **सह-अभिनेता:** गोपी मनोहर **सह-अभिनेत्री:** मीना राव **छायाकार:** मधु अम्बत **ध्वनि आलेखक:** के. एस कृष्णमूर्ति **संपादक:** नौजुंडा स्वामी **कला निर्देशक:** पी. कृष्णमूर्ति **संगीत निर्देशक/पार्श्व गायक:** बालामुरली कृष्ण **पार्श्व गायिका:** वाणी जयरमन **गीत:** बन्नांजे गोविंदाचार्य **वेश-भूषा डिज़ाइनर:** कल्पना अय्यर **विशेष प्रभाव:** वेन्की

भगवद् गीता कुरुक्षेत्र की रणभूमि में कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया संदेश है।

फ़िल्म में एतिहासिक कौरव-पात्रों और उनके साथियों की इच्छा, क्रोध, लालच, सम्मोहन, घमण्ड, प्रतिशोध तथा पांचों ज्ञानेंद्रियों के गुणों का चित्रण किया गया है। उनके विपरीत पांडवों के गुण-धर्मपरायणता, शक्ति, एकाग्रता, सच्चाई और धैर्य आदि संतुलित हैं। द्रोपदी एक ऐसी अकेली शक्ति है जो उन्हें अपने संघर्ष में मार्गदर्शन देती है और कृष्ण ब्राह्मंडीय शक्ति हैं।

फ़िल्म में नश्वर मानव की यात्रा को स्वतः बोध के अंतिम उद्देश्य की ओर ले जाने का सफल प्रयास किया गया है। उस बोध से, अर्जुन जो पहले भय की बेचैनी से निश्चल थे, पुनः कार्यवाही के लिए सक्रिय हो जाते हैं।

BHAGAVAD GITA

Sanskrit/colour/150 min.

Producer: T. Subbarami Reddi **Director/Screenplay Writer:** G.V. Iyer **Leading Actor:** Raghavendra **Leading Actress:** Neena Gupta **Supporting Actor:** Gopi Manohar **Supporting Actress:** Meena Rao **Cinematographer:** Madhu Ambat **Audiographer:** K.S. Krishna Murthy **Editor:** Naujunda Swamy **Art Director:** P. Krishnamurthy **Music Director/Male Playback Singer:** Balamurali Krishna **Female Playback Singer:** Vani Jayaraman **Lyrics:** Bannanje Govindacharya **Costume Designer:** Kalpana Iyer **Special Effects:** Venki

The Bhagavad Gita is the message of Krishna to Arjuna on the battlefield of Kurukshetra.

The film depicts the historical Kaurava characters and their allies as the qualities of desire, anger, greed, fascination, pride, revenge and the five senses. Balanced against them are the qualities represented by the Pandavas—righteousness, strength, concentration, truth and equanimity. Draupadi is the individual energy that guides them in their struggle, and Krishna is the cosmic energy. The film traces the mortal being's travel towards the ultimate goal of self-realisation. With that realisation, Arjuna, who was at first immobilised by anxiety and fear, swings back into action.

चेलुवी

हिंदी/रंगीन/102 मिनट

निर्माता: सादिर मीडिया प्रा. लि. **निर्देशक/पटकथा लेखक:** गिरीश कर्नाड **मुख्य अभिनेता:** प्रशांत राव **मुख्य अभिनेत्री:** सोनाली कुलकर्णी **सह-अभिनेत्री:** गार्गी याक्कुंडी **छायाकार:** राजीव मेनन **ध्वनि आलेखक:** एस.पी. रामनाधन **संपादक:** सुरेश उर्स : **कला निर्देशक/विशेष प्रभाव:** जायू नचिकेत, साबु सिरील **संगीत निर्देशक:** भास्कर चंदावरकर **पार्श्व गायक:** सुरेश वाडकर **पार्श्व गायिका:** कविता कृष्णामूर्ति **गीत:** वसंत देव **वेश-भूषा डिज़ाइनर:** जायू नचिकेत

चेलुवी एक ग्रामीण बाला है जो अपने आपको एक फूलों के वृक्ष में बदल सकती है। जब वह वृक्ष बन जाती है, तो उसकी बहन फूल इक्ट्ठे कर लेती है और उसके बाद उसे पुन: मानव शरीर में बदलने के लिए उस पर पानी छिड़कती है। उसके पश्चात् वे दोनों फूल बेचती हैं और इस प्रकार अपना जीवन बसर करती हैं। कुमार चेलुवी से शादी करता है और उसके रहस्य का पता लगा लेता है।

कुमार की बहन श्यामा को भी फूलों की जिज्ञासा होती है और वह चेलुवी को वृक्ष में बदल जाने के लिए बाध्य करती है। श्यामा और उसकी सभी सहेलियां फूल तोड़ लेती हैं परंतु वे वृक्ष की शाखाएं भी तोड़ देती हैं। चेलुवी आधी मानव और आधी वृक्ष की ठूंठ रह जाती है। बाद में कुमार को वृक्ष की ठूंठ मिल जाती है, जो चेलुवी को लेकर पुन: जंगल में जाता है ताकि टूटी और गायब शाखाएं उसे वापिस मिल सकें। परंतु उन्हें यह देखकर बड़ी हैरानी हुई कि सारा जंगल काटकर उस की जगह एक महल बना दिया गया है।

CHELUVI

Hindi/colour/102 min.

Producer: Sadir Media Pvt. Ltd. **Director/Screenplay Writer:** Girish Karnad **Leading Actor:** Prashant Rao **Leading Actress:** Sonali Kulkarni **Supporting Actress:** Gargi Yakkundi **Cinematographer:** Rajiv Menon **Audiographer:** S.P. Ramanadhan **Editor:** Suresh Urs **Art Directors/Special Effects:** Jayoo Nachiket, Sabu Cyril **Music Director:** Bhaskar Chandavarkar **Male Playback Singer:** Suresh Wadkar **Female Playback Singer:** Kavita Krishnamoorthy **Lyrics:** Vasant Dev **Costume Designer:** Jayoo Nachiket

Cheluvi can turn into a flowering tree. When she becomes a tree, her sister gathers the flowers and then makes her human again. They sell the flowers and make a living. Kumar marries Cheluvi and worms her secret out of her. His sister Shyama is also curious about the flowers and forces Cheluvi to turn herself into a tree. Shyama and all her friends pluck the flowers, but they also break the branches of the tree. Cheluvi becomes a half-human tree stump.

The stump is eventually found by Kumar, who goes back to the woods with Cheluvi to recover the broken and missing branches. But they find that the whole forest has been cleared to build a palace.

दामिनी

हिंदी/रंगीन/168 मिनट

निर्माता: सिने युग **निर्देशक/पटकथा लेखक:** राजकुमार संतोषी **मुख्य अभिनेता:** ऋषि कपूर **मुख्य अभिनेत्री:** मीनाक्षी शेषाद्री **सह-अभिनेता:** सन्नी देओल **छायाकार:** ईश्वर बिरदी **ध्वनि आलेखक:** राकेश रंजन **संपादक:** वी. एन मायेकर : **कला निर्देशक:** बिजोन दास गुप्ता **संगीत निर्देशक:** नदीम श्रवण **पार्श्व गायक:** कुमार शानु **पार्श्व गायिका:** साधना सरगम, अल्का यान्निक **नृत्य कलाकार:** रवीन्द्र अति बद्धि, पप्पू खन्ना

शेखर एक शक्तिशाली उद्योगपति का बेटा है जो दामिनी से शादी करता है, जो एक सत्यनिष्ठ महिला है। उसका अपने ससुराल के लोगों द्वारा अक्सर अनादर किया जाता है। वह परिवार में एक अपराध होते हुए देखती है और अपनी अंर्तात्मा तथा अपने पति के प्रति अपने लगाव में से किसी एक को चुनने का संघर्ष करती है। इस संघर्ष में उसकी अंर्तात्मा की जीत होती है और वह अपना घर छोड़ देती है। दामिनी अपने पति के परिवार और उनके व्यापारिक दुश्मनों के बीच शक्ति के गंदे खेल में फंस जाती है। वकील, गोविंद जो स्वयं भी भ्रष्टाचार का शिकार है, दामिनी से सहानुभूति करता है और न्याय के लिए उसके साथ संघर्ष में शामिल हो जाता है।

DAMINI

Hindi/colour/168 min.

Producer: Cineyug **Director/Screenplay Writer:** Raj Kumar Santoshi **Leading Actor:** Rishi Kapoor **Leading Actress:** Meenakshi Sheshadri **Supporting Actor:** Sunny Deol **Cinematographer:** Ishwar Bidri **Audiographer:** Rakesh Ranjan **Editor:** V.N. Mayekar **Art Director:** Bijon Das Gupta **Music Director:** Nadeem Shravan **Male Playback Singer:** Kumar Shanu **Female Playback Singers:** Sadhna Sargam, Alka Yagnik **Lyrics:** Sameer **Choreographers:** Rabindra Atibudhi, Pappu Khanna

Shekhar, son of a business tycoon, marries Damini, a woman of integrity. She is often belittled by her in-laws. She witnesses a crime in the family and struggles to choose between her conscience and her attachment to her husband. Her conscience wins and she leaves his house. Damini gets caught in a messy power game between her husband's family and their business rivals. The lawyer Govind, himself tainted by corruption, sympathises with Damini and joins her fight for justice.

एक होता विदूषक

मराठी/रंगीन/145 मिनट
निर्माताः एन.एफ.डी.सी. **निर्देशकः** जब्बार पटेल **पटकथा लेखकः** पी. एल. देशपांडे **मुख्य अभिनेताः** लक्ष्मीकांत बर्डे **मुख्य अभिनेत्रीः** मधु कंबिकर **सह-अभिनेताः** दिलीप प्रभावलकर, नीलू फुले **सह-अभिनेत्रीः** वर्षा उसगांवकर **बाल कलाकारः** असीम देशपांडे, हीमानी पाध्ये **छायाकारः** हरीश जोशी **ध्वनि आलेखक/पार्श्व गायकः** रवीन्द्र साठे **संपादकः** अनिल विश्वास **कला निर्देशकः** सुधीर सासे **संगीत निर्देशकः** आनन्द मोडक **पार्श्व गायिकाः** आशा भौंसले **गीतः** एन. डी. महानोर **नृत्यकारः** लक्ष्मीबाई कोल्हापुरकर **वेश-भूषा डिज़ाइनरः** संजय पवार

अब्बूराव लोक रंगमंच के एक लोकप्रिय विदूषक हैं जिसका मज़ाक अक्सर शक्तिशाली लोगों के खिलाफ़ होता है। वह अभिनेत्री मेनका को मिलता है और सुभद्रा को पीछे छोड़कर, सिनेमा-जगत में चला जाता है। अब्बूराव के स्कूल का पुराना दोस्त गुणवंत, जो अब मुख्यमंत्री बन गया है, उसका शोषण करता है। वह तब तक गुणवंत के राजनैतिक खेल में फंसा रहता है जब तक कि एक दिन उसका पुराना परामर्शदाता उसे यह याद नहीं कराता कि वह कहां से आया है और वह अपने पीछे क्या छोड़ आया है।

अब्बू राव सुभद्रा को ढूंढने वापिस जाता है और अपनी पुत्री जय को मिलता है। यह बच्चा, एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो उसके मसखरेपन से नहीं हंसता। उसकी मुस्कान पाने के लिए, वह हंसी-खुशी के सामान्य व्यवसाय में लौट आता है।

EK HOTA VIDUSHAK

Marathi/colour/145 min.

Producer: NFDC **Director:** Jabbar Patel **Screenplay Writer:** P.L. Deshpande **Leading Actor:** Laxmikant Berde **Leading Actress:** Madhu Kambikar **Supporting Actors:** Dilip Prabhawalkar, Neelu Phule **Supporting Actress:** Varsha Usgaonkar **Child Artistes:** Aseem Deshpande, Heemani Padhye **Cinematographer:** Harish Joshi **Audiographer/Male Playback Singer:** Ravindra Sathe **Editor:** Anil Vishwas **Art Director:** Sudhir Sase **Music Director:** Anand Modak **Female Playback Singer:** Asha Bhosle **Lyrics:** N.D. Mahanor **Choreographer:** Laxmibai Kolharpurkar **Costume Designer:** Sanjay Pawar

Aburao is a popular clown of the folk theatre whose humour is often directed against the powerful. He meets the actress Menaka and turns to the world of cinema, leaving behind Subadra. Aburao is exploited by his old schoolmate Gunwant, who has become chief minister. He is drawn into Gunwant's political games until one day his old mentor reminds him where he came from and what he has left behind.

Aburao goes back to find Subadra and meets their daughter Jai. The child is the only one who does not smile at his antics. In winning a smile from her, he pursues a simpler form of happiness.

इलेक्ट्रिक मून

अंग्रेजी/रंगीन/101 मिनट
निर्माता: एस. एस. बेदी **निर्देशक/संपादक:** प्रदीप कृष्ण **पटकथा लेखक/कला निर्देशक:** अरुणधति राय **मुख्य अभिनेता:** रोशन सेठ **मुख्य अभिनेत्री:** लीला नायडू **सह-अभिनेता:** नसीरुद्दीन शाह

मध्य भारत में किसी जंगल में एक लॉज में, तात्कालिक भारतीय अनुभव देखने को मिलता है। आसानी से निगल ली जाने वाली एक खुराक को आसवित किया जाता है। यहां पर पैसे वाले पर्यटक, असली परंतु प्रबंध देखने वाले महाराजा और उसके परिकरों से मेलजोल बढ़ा सकते हैं और फ़ीस चुका कर एक शक्तिशाली राजपूत रक्षक के साथ चीतों की खोज कर सकते हैं और उनकी तस्वीरें खींच सकते हैं। राजा जीवन-यापन के लिए अपनी कुल परंपरा तथा अपने आपको (सदा के लिए, उस औरत को जो उसके टेन्ट में आती है) बेच देता है।

इस प्रकरण में रामभुज गोस्वामी प्रकट होते हैं जो चिकने, भ्रष्टाचारी और मध्य वर्ग से संबंध रखते हैं। वे नए पार्क निदेशक हैं और कुछ वृक्ष बेचना चाहते हैं। वे भी राजा के प्रतिशोधी बन जाते हैं।

ELECTRIC MOON

English/colour/101 min.

Producer: S.S. Bedi **Director/Editor:** Pradip Krishen **Screenplay Writer/Art Director:** Arundhati Roy **Leading Actor:** Roshan Seth **Leading Actress:** Leela Naidu **Supporting Actor:** Naseeruddin Shah

In a jungle lodge in Central India, the instant Indian experience is available, distilled into one easy-to-swallow dose. Here the moneyed tourists can hobnob with a genuine though impoverished maharaja and his retinue, track tigers, and have their picture taken, for a fee, with a giant Rajput guard. The raja sells his heritage and himself (literally, at times, to the women who visit him in his tent) to make a living.

Into this parade storms Rambhuj Goswami, oily, corrupt and middle class. He is the new park director and he wants to sell some trees. He also turns out to be the raja's nemesis.

हरकेया कुरि

कन्नड़/रंगीन/135 मिनट

निर्माता/वेशभूषा डिज़ाइनर: बी. वी. राधा **निर्देशक:** ललिता रवि **पटकथा लेखक:** सुरेशा बी. **मुख्य अभिनेता:** प्रकाश राय **मुख्य अभिनेत्री:** गीता **सह-अभिनेता:** एच. जी. सोमशेखर राव **छायाकार:** के. एस. कृष्णमूर्ति **संपादक:** सुरेश उर्स **कला निर्देशक:** जान देवराज **संगीत निर्देशक:** विजया भास्कर **पार्श्व गायक:** आनन्त वेद्यनाथन **गीत:** सुरेशा बी, चन्द्रशेखर काम्बरा

सरोजा और प्रकाश एक मध्यवर्गीय पत्नी-पति हैं, दोनों कामकाज़ी हैं, जो एक निर्जन स्थान पर बने घर में रहते हैं और एक दूसरे को बहुत चाहते हैं। उस घर का इस्तेमाल, विरोधी दल के नेता, रुद्रप्प भी करते हैं, जोकि अपने ही दल के एक नेता की हत्या करा देते हैं ताकि उससे वह सहानुभूति की हवा को अपने पक्ष में कर सकें। सिडलिंगु हत्यारा है और वह प्रकाश के घर में उस समय शरण लेता है जब सरोजा घर में अकेली होती है। वह सरोजा को सारी घृणित कहानी बताता है।

धीरे-धीरे सरोजा और प्रकाश को रुद्रप्पा के दूरगामी भ्रष्टाचार से अपना संतोषजनक और सुखी जीवन दूषित नज़र आने लगा।

HARAKEYA KURI

Kannada/colour/135 min.

Producer/Costume Designer: B.V. Radha **Director:** Lalitha Ravee **Screenplay Writer:** Suresha B. **Leading Actor:** Prakash Rai **Leading Actress:** Geetha **Supporting Actor:** H.G. Somashekhara Rao **Cinematographer:** R. Manjunatha **Audiographer:** K.S. Krishna Murthy **Editor:** Suresh Urs **Art Director:** John Devraj **Music Director:** Vijaya Bhaskar **Male Playback Singer:** Ananth Vaidyanathan **Lyrics:** Suresha B., Chandrashekhara Kambara

Saroja and Prakash are a middle-class couple, both working, who live in an isolated house, absorbed in each other. The same house is used by Rudrappa, a political leader of the opposition, who stages the assassination of a leader of his own party so that he can exploit the sympathy wave that follows. Sidlingu is the assassin, and he takes shelter in Prakash's house when only Saroja is at home. He tells Saroja the whole sordid story.

Gradually Saroja and Prakash find their contented, insulated life infected by Rudrappa's far-reaching corruption.

जीवन चैत्रा

कन्नड़/रंगीन/165 मिनट
निर्माता: परवतम्मा राजकुमार **निर्देशक:** बी. दोरैराज, एस. के. भगवान **पटकथा लेखक/गीत:** उदयशंकर **मुख्य अभिनेता/ पार्श्व गायक:** डा. राजकुमार **मुख्य अभिनेत्री:** माधवी **सह-अभिनेता:** के.एस.अस्वत **सह-अभिनेत्री:** पंडारी बाई **छायाकार:** एस.वी. श्रीकान्त **ध्वनि आलेखक:** मेनन **संपादक:** भक्तवत्सलम **कला निर्देशक:** नसीर **संगीत निर्देशक:** उपेन्द्र कुमार **पार्श्व गायिका:** मंजुला गुरुराज **नृत्य कलाकार:** उडिपि बी. जयराम **वेशभूषा डिज़ाइनर:** पुनीत राजकुमार

जोदीदार विश्वनाथ ने अपने गांव और आस-पास के गांवों का एक आदर्श समुदाय बनाया। उसकी पत्नी मीनाक्षी उसके विचारों का समर्थन करती है। उनके तीन बेटे हैं जो अपने माता-पिता के मूल्यों का आदर नहीं करते। मीनाक्षी इस गम से मर जाती है और विश्वनाथ, मानसिक संतुलन खो बैठता है, और तीर्थयात्रा पर चला जाता है।

जब वह लौटता है वह देखता है कि उसने जो अच्छे काम किए थे उसके पुत्रों ने उन्हें बिगाड़ दिया है। वह उन्हें फटकारता है और उन्हें अपनी गलती सुधारने के लिए कहता है, परन्तु एक शराबी सामंत और उसके साथी उसका विरोध करते हैं। वह उनसे निपटता है और गांव में सुख-समृद्धि पुन: वापिस लाता है।

JEEVANA CHAITRA

Kannada/colour/165 min.

Producer: Parvathamma Rajkumar **Directors:** B. Dorairaj, S.K. Bhagwan **Screenplay Writer/Lyrics:** Udayashankar **Leading Actor/Male Playback Singer:** Dr. Rajkumar **Leading Actress:** Madhavi **Supporting Actor:** K.S. Aswath **Supporting Actress:** Pandari Bai **Cinematographer:** S.V. Srikanth **Audiographer:** Menon **Editor:** P. Bhakthavathsalam **Art Director:** Naseer **Music Director:** Upendra Kumar **Female Playback Singer:** Manjula Gururaj **Choreographer:** Udipi B. Jayaram **Costume Designer:** Puneeth Rajkumar

Jodidar Vishwanath has made a model community of his village and the surrounding villages. His wife Meenaxi keeps up his ideals. They have three sons who do not respect their parents' values. Meenaxi dies of grief and Vishwanath, bereft of mental peace, goes on a pilgrimage.

When he returns he finds all his good works undone by his sons. He reprimands them and tries to rectify their mistakes, but is opposed by a liquor baron and his allies. He overcomes them and brings back prosperity to his village.

माया मेमसाब

हिंदी/रंगीन/169 मिनट

निर्माता निर्देशकः केतन मेहता **पटकथा लेखकः** सीतान्शु यशचन्द्र, केतन मेहता **मुख्य अभिनेताः** फारुख शाह **मुख्य अभिनेत्रीः** दीपा साही **सह-अभिनेताः** राज बब्बर, शारुक खान, रघुवीर यादव **बाल अभिनेताः** मनीश नागपाल **छायाकारः** अनूप जोतवाणी **ध्वनि आलेखकः** इन्द्रजीत नियोगी **संपादकः** रेणू सलूजा **कला निर्देशकः** मीरा, आशीष लाखिया **संगीत निर्देशकः** हृदयनाथ मंगेशकर **पार्श्व नायकः** कुमार शानु, हृदयनाथ मंगेशकर **पार्श्व नायिकाः** लता मंगेशकर **गीतः** गुलज़ार **वेशभूषाः** मोनिका दत्ता

माया जवान, सुंदर और गंभीर है। हवेली के ह्रासोन्मुख और सामन्त जीवन के अकेलेपन ने उनके मन में उठने वाली इच्छाओं और मोहभ्रमों से उसके मस्तिष्क को बहुत ही अधिक कमज़ोर बना दिया है। उसकी ये इच्छाएं उसे एक युवा डाक्टर की ओर खींच ले जाती हैं।शुरू में, नया जीवन प्रारम्भ करने का जोश और विवाह की ओर उसका झुकाव उसे सुख का बोध देता है परन्तु धीरे-धीरे उसके अस्तित्व की ऊब उसे पुनः प्रभावित करती है। वह उपन्यासों तथा फ़िल्मों, भौतिक फ़िजूलखर्ची और अन्य पुरुष गमन के मोहभ्रमों में पड़ जाती है, जो उसके वैवाहिक जीवन को तुच्छ बना देते हैं।

MAYA MEMSAAB

Hindi/colour/169 min.

Producer/Director: Ketan Mehta **Screenplay Writers:** Sitanshu Yashchandra, Ketan Mehta **Leading Actor:** Farouque Sheikh **Leading Actress:** Deepa Sahi **Supporting Actors:** Raj Babbar, Shahruk Khan, Raghuvir Yadav **Child Artiste:** Manish Nagpal **Cinematographer:** Anoop Jotwani **Audiographer:** Indrajeet Neogi **Editor:** Renu Saluja **Art Directors:** Meera, Ashish Lakhia **Music Director:** Hridaynath Mangeshkar **Male Playback Singers:** Kumar Shanu, Hridaynath Mangeshkar **Female Playback Singer:** Lata Mangeshkar **Lyrics:** Gulzar **Costume Designer:** Monica Dutta

Maya is young, beautiful and enigmatic. The isolation of her decadent and feudal life spawns an intensely inward-looking mind teeming with desires and illusions. These desires attach themselves to a young doctor.

Initially, the excitement of starting a new life and the trappings of marriage make her euphoric, but gradually the monotony of her existence reasserts itself. She turns to the illusions of novels and movies, material extravagance, and adultery, which soon becomes as banal as marriage.

मिस बेटीज चिल्ड्रन

अंग्रेजी/रंगीन/112 मिनट

निर्माता: एन.एफ.डी.सी. ,दूरदर्शन, रुक्स ए.वी. (इंडिया), सितमा लिवोर्नो (इटली) **निर्देशक:** पामेला रुक्स **पटकथा लेखक:** पामेला रुक्स, जेम्स किल्लफ **मुख्य अभिनेता:** डी. डब्ल्यू. मोफेट **मुख्य अभिनेत्री:** जेनी सीग्रव **सह-अभिनेता:** बैरी जॉन, ऋतुराज **सह-अभिनेत्री:** फेथ ब्रुक, प्रतिमा बेदी **बाल कलाकार:** नओमी सूदरलैंड **छायाकार:** वेणु **ध्वनि आलेखक:** श्तान डेविस **संपादक:** रेणू सलूजा **कला निर्देशक:** जाकिर हुसैन **वेश-भूषा डिज़ाइनर:** रोमा ल्वाज़ो, इस्सी सेन्डरसन

फ़िल्म 1936 में दक्षिण भारत में बनाई गई। जेन बेटी, स्कूल में एक आदर्श अंग्रेजी शिक्षका है और वह माबेल फार्सटर के साथ काम करती हैं जो देवालयों में वेश्यावृत्ति के लिए बेची जाने वाली युवतियों को बेचने से बचाने के लिए एक समर्पित मिशनरी है। एक देवालय की वरिष्ठ महिला, कमला देवी मोबेल की सबसे बड़ी विरोधी है। मोबेल की अनुपस्थिति में, एक एन्गलो इंडियन लड़की को उसकी आंटी द्वारा एक देवालय को बेचा जा रहा था। जेन उस लड़की को बचा लेती है। वह अपना नया जीवन शुरु करती है तथा अलन चान्डलर नाम का एक अमरीकी डाक्टर उसका दोस्त बन जाता है। वे प्रेमी बन जाते हैं। चान्डलर की मृत्यु हो जाती है। जेन अपने बच्चों के साथ भारत में ही रहती है।

MISS BEATTY'S CHILDREN

English/colour/112 min.

Producers: NFDC, Doordarshan, Rooks AV (India), Sitma Livorno (Italy) **Director:** Pamela Rooks **Screenplay Writers:** Pamela Rooks, James Killough **Leading Actor:** D.W. Moffet **Leading Actress:** Jenny Seagrove **Supporting Actors:** Barry John, Rituraj **Supporting Actresses:** Faith Brook, Protima Bedi **Child Artiste:** Naomi Sutherland **Cinematographer:** Venu **Audiographer:** Stan Davis **Editor:** Renu Saluja **Art Director:** Vinod Guruji **Music Director:** Zakir Hussain **Costume Designers:** Roma Loiseau, Issy Sanderson

The film is set in South India, in 1936. Jane Beatty, an idealistic English school teacher, works with Mabel Forster, a missionary devoted to saving young girls from being sold into temple prostitution. Mabel's main antagonist is Kamla Devi, a senior temple woman. In Mabel's absence, an Anglo-Indian girl is about to be sold to the temple by her aunt. Jane rescues the child. She begins a new life.

She finds a friend in Alan Chandler, an American doctor. They become lovers. When war breaks out, Chandler is killed. Jane stays on in India with her children.

मुझसे दोस्ती करोगे

हिन्दी/रंगीन/100 मिनट
निर्माता: राष्ट्रीय बाल एवं युवा चलचित्र केंद्र **निर्देशक/पटकथा लेखक:** गोपी देसाई **मुख्य अभिनेता:** अमित फाल्के **सह-अभिनेता:** दीप्ति दवे **छायाकार:** अशोक मेहता **ध्वनि आलेखक:** इन्द्रजीत नियोगी **संपादक:** रेणू सालूजा **कला निर्देशक:** प्रमोद गुरुजी, विनोद गुरुजी **संगीत निर्देशक गीत:** इला अरुण **वेश-भूषा डिज़ाइनर:** शुतापा शिकदर

भारत-पाकिस्तान सीमाक्षेत्र के निकट, रेगिस्तान में बने हुए झुगियों के एक झुंड में आठ वर्ष का बालक गुलु अपनी बहन, माता-पिता और दादा के साथ रहता है। उसके दादा की कहानियां और गीत गुल्लु की सजीव कल्पनाओं को उत्तेजित करते हैं, जिससे वह कभी विजेता सिकन्दर का भरोसेमंद कमाण्डर बन जाता है और कभी सीमा सुरक्षा अधिकारी बन जाता है जो तस्करों को पकड़ता है।

जब गुलु अपनी ख्याली दुनिया के अन्दर-बाहर भटक रहा होता है तो वह गंभीर सूखा-स्थिति के बारे में सुनता है। उसकी बहन की शादी हो जाती है और वह चली जाती है। उसे यह समझ आती है कि बड़े-बूढ़े हमेशा सच नहीं बोलते और ख्याली किले कभी नहीं बनते।

MUJHSE DOSTI KAROGE

Hindi/colour/100 min.

Producer: National Centre of Films for Children and Young People **Director/ Screenplay Writer:** Gopi Desai **Leading Actor:** Amit Phalke **Supporting Actress:** Dipti Dave **Cinematographer:** Ashok Mehta **Audiographer:** Indrajit Neogi **Editor:** Renu Saluja **Art Directors:** Pramod Guruji, Vinod Guruji **Music Director/Lyrics:** Ila Arun **Costume Designer:** Sutapa Sikdar

In a desert-bound cluster of huts, close to the Indo-Pakistan border, lives eight-year-old Gulu with his sister, parents and grandfather. His grandfather's stories and songs fire Gulu's vivid imagination, so that sometimes he is the conquering Alexander's trusted commander, sometimes a border security officer rounding up smugglers.

As Gulu strays in and out of his fantasies, he learns about the wicked hunchback Drought. His sister gets married and goes away. He learns that adults don't always speak the truth, nor do daydreams come true.

नींग नल्ला इरुक्कणम

तमिल/रंगीन/140 मिनट

निर्माता: जी.वी. फ़िल्म्स लि. **निर्देशक/पटकथा लेखक:** वेणु **मुख्य अभिनेता:** निहलगल रवि **मुख्य अभिनेत्री:** बानू प्रिया **सह-अभिनेता:** विशु **सह-अभिनेत्री:** मनोरमा **छायाकार:** एन. बालाकृष्णन **ध्वनि आलेखक:** जे.जी. मणिकम **संपादक:** गणेश कुमार **कला निर्देशक:** सुंदरराजन **संगीत निर्देशक:** एम.एस. विश्वनाथन **पार्श्व गायिका:** चित्रा **गीत:** एन. कमारासन, मुत्तुलिंगम **नृत्य कलाकार:** पूलियूर सरोजा **वेशभूषा डिज़ाइनर:** बाबू

अंजलि, एक गांव की लड़की है जो एक शराबी, मणिकम से इस आशा से शादी कर लेती है कि वह शादी के बाद उसके तौर-तरीके बदल लेगी। परन्तु मणिकम शराब पीना जारी रखता है, उसकी नौकरी छूट जाती है। वह अपनी पत्नी के आभूषण चुरा लेता है और अपने माता-पिता तथा पत्नी की भर्त्सनाओं की ओर कोई ध्यान नहीं देता। जब उसकी मां एक दुर्घटना में लगी आग से मर जाती है तो वह कसम खाता है कि वह शराब को हाथ नहीं लगाएगा, परन्तु तब तक वह बहुत बीमार हो चुका होता है।

मणिकम का ज़िगर और अग्न्याशय खराब हो जाता है और उसे केवल संतुक्त राज्य में उपचार के द्वारा बचाया जा सकता है। अंजलि गलियों में भीख मांग कर पैसा इकट्ठा करती है और दान की सहायता से विशेष कर मुख्य मंत्री के दान से मणिकम को ठीक कर लिया जाता है।

जब वे भारत वापिस आते हैं तो मणिकम पुन: शराब पीने लगता है और अंजलि आत्महत्या कर लेती है। इससे गांव की औरतों का सामूहिक विरोध उठ खड़ा होता है तथा पुरुष वर्ग मृत शरीर के सामने झुक कर कसम खाते हैं कि वे शराब को कभी हाथ नहीं लगाएंगे।

NEENGA NALLA IRUKKANUM

Tamil/colour/140 min.

Producer: G.V. Films Ltd. **Director/ Screenplay Writer:** Visu **Leading Actor:** Nizhalgal Ravi **Leading Actress:** Banupriya **Supporting Actor:** Visu **Supporting Actress:** Manorama **Cinematographer:** N. Balakrishnan **Audiographer:** J.J. Manickam **Editor:** Ganesh Kumar **Art Director:** Sundararajan **Music Director:** M.S. Viswanathan **Male Playback Singer:** S.P. Balasubramaniam **Female Playback Singer:** Chitra **Lyrics:** N. Kamarasan, Muthulingam **Choreographer:** Puliyoor Saroja **Costume Designer:** Babu

Anjalai, a village girl, marries Manickam, a drunkard, hoping she can mend his ways after marriage. But Manickam continues to drink, losing his job, stealing his wife's jewellery, and defying his parents' and wife's reproaches. When his mother dies in an accidental fire he vows that he will not touch liquor, but by then he is very ill.

Manickam is found to have a damaged liver and pancreas and can only be saved by treatment in the United States. Anjalai scrapes up the money by begging in the streets and with the help of donations, especially from the chief minister, and Manickam is cured.

When they come back to India, Manickam gets drunk again and Anjalai kills herself. This shocks the village women into a mass protest and the men vow in a body never to touch liquor.

पद्मा नदीर माझी

बंगला/रंगीन/135 मिनट

निर्माता: पश्चिम बंगाल सरकार

निर्देशक/पटकथा/लेखक/छायाकार/संगीत निर्देशक: गौतम घोष **मुख्य अभिनेता:** रसूल इस्लाम अशाद **मुख्य अभिनेत्री:** रुपा गांगूली **सह-अभिनेता:** उत्पल दत्त **सह-अभिनेत्री:** चम्पा **बाल कलाकार:** इशान घोष **ध्वनि आलेखक:** अनूप मुखर्जी **संपादक:** मलय बनर्जी **कला निर्देशक:** अशोक बोस **पार्श्व गायक:** किरणचन्द्र राय **गीत:** सुनील गांगूली **वेश-भूषा डिज़ाइनर:** नीलंजना घोष **विशेष प्रभाव:** प्रसाद प्रॉडक्शन

फ़िल्म का घटनास्थल महान् नदी पद्मा है। इसके पात्र मांझी हैं जो अपने जीवित रहने के लिए इसके खतरनाक पानी को चुनौती देते हैं।

हुसैन मियां के पास एक बड़ी कार्गो किश्ती तथा मोयना है, जोकि नदी डेल्टा में एक एकान्त महाद्वीप है। महाद्वीप पर जंगल साफ करने के लिए उसने गांव के लोग किराए पर लिए हैं।

एक दिन महाद्वीप एक निवासी, गांववासियों को महाद्वीप से होने वाले खतरे, उसकी मुसीबतों तथा उसके उजड़ने के संबंध मे बताता है। जब तूफान में कुबेर की नौका खो जाती है तो वह मियां के पास काम करने लगता है और मोयना को अपना ही समझता है। जब वह वापिस आता है तो वह एक बदला हुआ व्यक्ति होता है। वह अपने पड़ोसियों का विरोध करता है तथा अपनी साली के प्रेम में अंधा हो जाता है। अन्त में उसे महाद्वीप में भाग जाने के लिए बाध्य होना पड़ता है और वह अपनी साली को साथ ही ले जाता है।

PADMA NADIR MAJHI

Bengali/colour/135 min.

Producer: Govt. of West Bengal **Director/ Screenplay Writer/ Cinematographer/ Music Director:** Goutam Ghose **Leading Actor:** Raisul Islam Ashad **Leading Actress:** Rupa Ganguly **Supporting Actor:** Utpal Dutt **Supporting Actress:** Champa **Child Artiste:** Ishan Ghose **Audiographer:** Anup Mukherjee **Editor:** Moloy Banerjee **Art Director:** Ashoke Bose **Male Playback Singer:** Kiran Chandra Roy **Lyrics:** Sunil Ganguly **Costume Designer:** Neelanjana Ghose **Special Effects:** Prasad Production

The locale of the film is the mighty river Padma. Its characters are the boatmen who challenge its dangerous waters for survival.

Hossain Miyan owns a large cargo boat and Moyna, a remote island in the river delta. He has hired people from the village to clear the forests on the island. One day a settler from the island tells the villagers the danger, hardship and desolation that it holds. When Kuber loses his boat in a storm he works for Miyan and sees Moyna for himself. When he returns, he is a changed man. He antagonises his neighbours and becomes infatuated with his sister-in-law. Finally he is forced to run away to the island and takes his sister-in-law with him.

पसंदा पंडित

बंगला/रंगीन/130 मिनट

निर्माता/वेशभूषा डिज़ाइनर: रतना सेन **निर्देशक/पटकथा/लेखक:** सिबप्रसाद सेन **मुख्य अभिनेता:** सुमित्रा चटर्जी **मुख्य अभिनेत्री:** अन्सुया मज़ूमदार **सह-अभिनेता:** अरुण बंधोपाध्याय **सह-अभिनेत्री:** तृष्णा चक्रवर्ती **बाल कलाकार:** चित्रांगदा बसु **छायाकार:** तरुण दत्ता **संपादक:** उज्जल नदी **कला निर्देशक:** प्रसाद मित्रा **संगीत निर्देशक:** अलोक नाथ डे **पार्श्व गायक:** देवव्रत बिसवास **पार्श्व गायिका:** इन्द्राणी सेन **गीत:** रवीन्द्र नाथ टैगोर

एक पांडित्यपूर्ण विद्वान तथा शिक्षक, प्रशान्त भट्टाचार्य का उसके तीखे स्वभाव के कारण, नाम बिगड़ कर पसंदा पंडित हो गया है, जो अपने छात्रों को निर्दयी दिखाई देता है। वह जमींदार के बेटे सुरेन चक्रवर्ती को पढ़ाने के लिए अपना मूल गांव छोड़ देता है। वह शहर में अध्यापन कार्य शुरु करता है तथा प्रतिमा से शादी कर लेता है। परन्तु प्रतिमा जल्दी ही मर जाती है और अपने पीछे छः वर्षीय बेटी, सबीता को छोड़ जाती है।

वह अपनी बेटी के लिए दूसरी शादी करने की सोचता है परन्तु उसके पड़ोसी उसे गलत समझते हैं। काम पर भी उसे तंग किया जाता है।

पसंदा अपनी नौकरी से इस्तीफ़ा दे देता है और अपने गांव लौट आता है, जहां वह महिलाओं के लिए एक स्कूल चलाता है। इसी बीच, ज़मीदार का बेटा गांव के चुनाव में खड़ा होता है और वह पसंदा का समर्थन चाहता है। पसंदा आत्महत्या करना चाहता है परन्तु सबीता नई हिम्मत के साथ जीवन-यापन करने के लिए उसे मना लेती है।

PASANDA PUNDIT

Bengali/colour/130 min.

Producer/Costume Designer: Ratna Sen **Director/Screenplay Writer:** Sibaprasad Sen **Leading Actor:** Soumitra Chatterjee **Leading Actress:** Anasua Mazumder **Supporting Actor:** Arun Bandopadhyay **Supporting Actress:** Trishna Chakraborty **Child Artiste:** Chitrangada Basu **Cinematographer:** Tarun Dutta **Audiographer:** Sanjay Mukherjee **Editor:** Ujjal Nandy **Art Director:** Prasad Mitra **Music Director:** Aloke Nath Dey **Male Playback Singer:** Debabrata Biswas **Female Playback Singer:** Indrani Sen **Lyrics:** Rabindranath Tagore

Prasanta Bhattacharya, an erudite scholar and a sincere teacher, is nicknamed Pasanda Pundit for his exacting nature, which appears cruel to his students. He leaves his native village rather than tutor the son of Suren Chakraborty the zamindar. He takes up teaching in the city and marries Pratima. But Pratima dies young, leaving a six-year-old daughter, Sabita.

He contemplates a second marriage for the sake of his daughter, but his neighbours misunderstand him and he is driven out of the community. He is also humiliated at work.

Prasanta resigns his job and returns to the village, where he begins to run a school for women. Meanwhile, the zamindar's son is now contesting the village elections and wants Prasanta's support. Prasanta refuses and the candidate wreaks a cruel revenge. Prasanta contemplates suicide, but Sabita convinces him to face life with new vigour.

रेलर-अलिर-दुबारी-बोन

असमिया/रंगीन/99 मिनट
निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक: पुलक गोगोई **मुख्य अभिनेता:** अमिताभ गोगोई **मुख्य अभिनेत्री:** दीपिका शर्मा **सह-अभिनेता:** उपाकुल बार्डोलोई **छायाकार:** आजन बरुआ **संपादक:** पराग **संगीत निर्देशक/गीत:** दशरथ दास **पार्श्व गायक:** कुमार शानु **पार्श्व गायिका:** कविता कृष्णामूर्ति

कार्तिक, एक मोटर मैकेनिक है, जो रेखा से प्रेम करने लगता है, जिसकी मां फुलकन की गृह-स्वामिनी है। एक बार वह रेखा को फुलकन से बचाता है। एक दिन जब कार्तिक और उसके साथी मैकेनिक आगामी चुनावों पर चर्चा कर रहे होते हैं, जिसमें फुलकन उम्मीदवार है, कार्तिक फुलकन के खिलाफ़ अपनी राय बताता है। एक अन्य मैकेनिक, जो फुलकन का समर्थक है, कार्तिक के खिलाफ़ फुलकन को सूचना देता है। फुलकन,कार्तिक पर हमला करता है और फुलकन अपने ड्राईवर को कहता है कि वह अचेतन अवस्था में ही उसे सड़क पर छोड़ दे। परन्तु रेखा चुपके से जीप में से खिसक जाती है और वह और ड्राईवर मिल कर उसे एक सुरक्षित स्थान पर ले जाते हैं।

यद्यपि वह उसकी सहायता के लिए कृतज्ञ है, कार्तिक महसूस करता है कि संसार में उसके जीने का कोई मतलब नहीं रह गया है, जहां उसे कुचला जा सकता है। वह रेल की पटड़ियों पर लेट जाता है।

RELAR ALIR DUBARI BON

Assamese/colour/99 min.

Producer/Director/Screenplay Writer: Pulak Gogoi **Leading Actor:** Amitabh Gogoi **Leading Actress:** Dipika Sarma **Supporting Actor:** Upakul Bordoloi **Cinematographer:** Ajan Barua **Audiographer:** Hiranya Bhattacharya **Editor:** Prag **Music Director/Lyrics:** Dasarath Das **Male Playback Singer:** Kumar Sanu **Female Playback Singer:** Kavita Krishnamoorthy

Kartik, a motor mechanic, falls in love with Rekha, whose mother is mistress to Phukan. On one occasion he protects Rekha from Phukan's harassment. One day, when Kartik and his fellow mechanics are discussing the coming election which Phukan is contesting, Kartik expresses his opinions against Phukan. Another mechanic, a supporter of Phukan, informs against Kartik. Kartik is attacked by Phukan and Phukan tells his driver to leave Kartik's unconscious body on the road. But Rekha sneaks into the vehicle and she and the driver take him to safety.

Although he is grateful for their help, Kartik feels there is no point in living in a world where he can be trampled on. He lies down on the railway tracks.

रोजा

तमिल/रंगीन/137 मिनट

निर्माता: कवितालय प्रॉडक्शान्स **निर्देशक/पटकथा लेखक:** मणि रतनम् **मुख्य अभिनेता:** अरविंद स्वामी **मुख्य अभिनेत्री:** मधुबाला **सह-अभिनेता:** पंकज कपूर **सह-अभिनेत्री:** वैष्णवी **छायाकार:** सन्तोष शिवन **ध्वनि आलेखक:** वी.एस. मूर्ति, लक्ष्मी नारायणन **संपादक:** सुरेश उर्स **कला निर्देशक:** थोत्ता थरानी **संगीत निर्देशक:** ए.आर. रहमान **पार्श्व गायक:** एस. पी. बालासुब्रह्मणियम **पार्श्व गायिका:** चित्रा **गीत:** वैरमुथु **नृत्य कलाकार:** सुंदरम **वेश-भूषा डिज़ाइनर:** एस.एम. नयीम **विशेष-प्रभाव:** सेतू

ऋषि कुमार एक कम्पयूटर-वैज्ञानिक तथा देशभक्त हैं। वह और उसकी पत्नी रोजा कश्मीर जाते हैं, जहां ऋषि को कूट खोलने का काम करना है। आतंकवादियों द्वारा उसका अपहरण कर लिया जाता है। आतंकवादी, ऋषि कुमार के बदले में अपने चीफ़, वसीम खान को छोड़ने की मांग करते हैं। रोजा के प्रयत्नों के कारण, सरकार एक-दूसरे को बदलने के लिए राज़ी हो जाती है। इसी बीच, ऋषि अपने बंदीकर्ताओं को बताता है कि वह एक आतंकवादी के बदले में छूटने पर सहमत नहीं होगा । जब वसीम खान को विनिमय-स्थान पर लाया जाता है, तो ऋषि अपने बंदीकर्ताओं के कब्जे से निकल भागता है। वसीम खां के डिप्टी, लियाकत के साथ एक झड़प में वह लियाकत को मनवा लेता है, और वह अपनी हार मान लेता है तथा ऋषि को जाने देता है।

ROJA

Tamil/colour/137 min.

Producer: Kavithalayaa Productions **Director/Screenplay Writer:** Mani Ratnam **Leading Actor:** Arvindswamy **Leading Actress:** Madhubala **Supporting Actor:** Pankaj Kapoor **Supporting Actress:** Vaishnavi **Cinematographer:** Santosh Sivan **Audiographers:** V.S. Murthy, Lakshminarayanan **Editor:** Suresh Urs **Art Director:** Thotta Tharani **Music Director:** A.R. Rahman **Male Playback Singer:** S.P. Balasubramaniam **Female Playback Singer:** Chitra **Lyrics:** Vairamuthu **Choreographer:** Sundaram **Costume Designer:** S.M. Nayeem **Special Effects:** Sethu

Rishi Kumar and his wife Roja go to Kashmir, where Rishi is abducted by militants. The militants demand the release of their chief Wasim Khan in exchange for Rishi Kumar. Roja pleads with the police, the army and even Wasim Khan for her husband's safe return. Because of her efforts, the government agrees to the exchange.

Meanwhile, Rishi is telling his captors that he will not agree to be released in exchange for a militant. When Wasim Khan is brought to the place of exchange, Rishi excapes from his captors. In an encounter with Liaquat, Wasim Khan's deputy, he convinces Liaquat, who accepts defeat and lets Rishi go.

रुदाली

हिंदी/रंगीन/120 मिनट
निर्माता: एन.एफ.डी.सी., दूरदर्शन **निर्देशक:** कल्पना लाज़मी **पटकथा लेखक/गीत:** गुलज़ार **मुख्य अभिनेता:** राज बब्बर **मुख्य अभिनेत्री:** डिम्पल कपाड़िया **सह-अभिनेता:** अमजद खां **सह- अभिनेत्री:** राखी, गुलजार **बाल कलाकार:** सिद्धार्थ भार्गव **छायाकार:** संतोष शिवन, धर्म गुलाटी **ध्वनि आलेखक:** अश्विन बलसावर **संपादक:** भानुदर दिवाकर **कला निर्देशक:** समीर चन्दा **संगीत निर्देशक/पार्श्व गायक:** भूपेन हज़ारिका **पार्श्व गायिका:** लता मंगेशकर, आशा भौंसले **नृत्य कलाकार:** भूषण लखानदरी **वेशभूषा डिज़ाइनर:** माला डे, सिम्पल कपाड़िया

शनिचरी जब बच्ची ही थी तो उसकी मां उसे छोड़ देती है। फिर भी, वह रो नहीं पाती। स्थानीय ज़मींदार, राम अवतार सिंह, बीमार है और वह रुदाली या व्यावसायिक सियापा करने वाली औरत, भिकनी को बुला भेजता है। जब भिकनी जमींदार के मरने का इंतज़ार करती है तो वह शनिचरी के पास ठहरती है। पहली बार शनिचरी अपनी मुसीबतों के बारे में बताती है। भिकनी उसके न रो सकने पर हैरान होती है और यह कहती है कि वह उसे रुदाली बना देगी। तब, उसे बुलाया जाता है। कुछ दिनों के बाद, शनिचरी को पता चलता है कि भिकनी मर गई है और वह

उसकी मां थी। जब जमींदार मरता है, तो भिकनी की तलाश में एक संदेशवाहक आता है। शनिचरी उसके स्थान पर जाती है और उसके मर जाने की अनुभूति उसे रुदाली बना देती है।

RUDALI

Hindi/colour/120 min.

Producer: NFDC, Doordarshan **Director:** Kalpana Lajmi **Screenplay Writer/Lyrics:** Gulzar **Leading Actor:** Raj Babbar **Leading Actress:** Dimple Kapadia **Supporting Actor:** Amjad Khan **Supporting Actress:** Rakhee Gulzar **Child Artiste:** Siddhartha Bhargava **Cinematographers:** Santosh Sivan, Dharam Gulati **Audiographer:** Ashwin Balsawar **Editor:** Bhanudar Divkar **Art Director:** Samir Chanda **Music Director/Male Playback Singer:** Bhupen Hazarika **Female Playback Singers:** Lata Mangeshkar, Asha Bhosle **Choreographer:** Bhushan Lakhandari **Costume Designers:** Mala Dey, Simple Kapadia

Sanicheri's mother abandoned her and her husband died, yet she is unable to weep. The local landlord is ill and sends for a **rudali** or professional mourner, Bhikni. While Bhikni is waiting for him to die she stays with Sanicheri. For the first time Sanicheri tells her troubles. Bhikni is amazed at Sanicheri's inability to weep but declares that she will make her a **rudali.** She is then called away. A couple of days later Sanicheri learns that Bhikni has died and that she was her mother. When the landlord dies, a messenger comes looking for Bhikni. Sanicheri goes in her place. The realisation of her loss makes her a **rudali.**

सद्यम

मलयालम/रंगीन/165 मिनट
निर्माता: सैवन आर्ट्स फ़िल्म्स **निर्देशक:** शिबी मलयिल **पटकथा लेखक:** एम. टी. वासुदेवन नायर **मुख्य अभिनेता:** मोहनलाल **मुख्य अभिनेत्री:** मधु **सह-अभिनेत्री:** के.पी.ए.सी. ललिता **बाल कलाकार:** कावेरी, चैतन्य **छायाकार/नृत्यकलाकार:** आनंद कुट्टन **ध्वनि आलेखक:** सम्पत ए.वी.एम.आर.आर. **संपादक:** एल. भूमिनाथन **कला निर्देशक:** कृष्णन कुट्टी **संगीत निर्देशक:** जॉनसन **वेश-भूषा डिज़ाइनर:** वज्रमणि

सत्यनाथन एक सज़ा-प्राप्त हत्यारा है जो फांसी पर चढने का इंतज़ार कर रहा है। अनेक पूर्व दृश्यों के द्वारा फ़िल्म में उसकी पुरानी कहानी का पता लगता है। सत्यनाथन अपनी जारज़ता के बार में लोगों के तानों से बचने के लिए घर से भाग जाता है। उसका भरण-पोषण फादर डोमिनिक करते हैं जो उन्हें स्कूल में दाखिल कराते हैं तथा उसकी कलात्मक योग्यताओं को प्रोत्साहित करते हैं। सत्यनाथन होर्डिन्स का पेंटर बन जाता है तथा कालीकट चला जाता है। उसके पड़ोस में दो वेश्याएं रहती हैं जो अपनी तीन युवा भतीजियों को अपने व्यवसाय में लाने की योजना बनाती हैं। सबसे बड़ी, जया को बचाने के लिए, सत्यम उसे घरेलू नौकरानी के रुप में रख लेता है। वह उससे छोटी दोनों लड़कियों को भी कोई न कोई काम देता रहता है।

परन्तु विजतन्, जया को फुसला लेता है, जो उसे एक मॉडल बनाने का दावा करता है। जब वह गर्भवती हो जाती है, वह उसे छोड़ कर चला जाता है और वह निराश होकर अपनी आंटियों के धंधे में शामिल हो जाती है। आंटियां अब छोटी भतीजियों को भी इस धंधे में घसीटने का प्रयत्न करती हैं। जब सत्यम् यह सब सुनता है तो वह पागल हो जाता है और उन्हें मार कर छोटी लड़कियों को वेश्यावृत्ति के धंधे से बचाना चाहता है। जब वह विजयन् को एक दोस्त के साथ देखता है तो उसे भी मार डालता है और तब आत्म-सपर्मण कर देता है।

SADAYAM

Malayalam/colour/165 min.

Producer: Seven Arts Films **Director:** Sibi Malayil **Screenplay Writer:** M.T. Vasudevan Nair **Leading Actor:** Mohanlal **Leading Actress:** Madhu **Supporting Actors:** Nedumudi Venu, Thilakan **Supporting Actress:** K.P.A.C. Lalitha **Child Artistes:** Kaveri, Chaithanya **Cinematographer/Choreographer:** Anandakuttan **Audiographer:** Sampath AVM R-R **Editor:** L. Bhoominathan **Art Director:** Krishnan Kutty **Music Director:** Johnson **Costume Designer:** Vajramani

Sathyanathan is a convicted murderer awaiting his execution. In a series of flashbacks the film reveals his history.

Sathyanathan ran away from home to escape taunts about his illegitimacy. He is brought up by Father Dominic, who enrolls him in a school and encourages his artistic abilities. Sathyanathan becomes a painter of hoardings and goes to Calicut. His neighbours are two prostitutes who plan to initiate their three young nieces into their profession. To save the eldest, Jaya, Sathyanathan employs her as a maid. He also gives odd jobs to the younger girls.

But Jaya is enticed by Vijayan, who claims he will make her a model. When she becomes pregnant, he abandons her and she joins her aunts in desperation. The aunts next make an attempt on the younger nieces. Sathyanathan goes mad when he hears of it and tries to save the younger girls from prostitution by killing them. When he sees Vijayan with a friend he kills them as well, and then surrenders himself.

सरगम

मलयालम/रंगीन/147 मिनट
निर्माता: भवानी **निर्देशक/पटकथा लेखक:** हरिहरण **मुख्य अभिनेता:** मनोज के. जयन, विनीत **मुख्य अभिनेत्री:** अमृता **सह-अभिनेता:** नेडुमुडि वेणु **सह-अभिनेत्री:** उर्मिला उन्नि **बाल कलाकार:** रोशन बिजिली **छायाकार:** शाजी **ध्वनि आलेखक:** स्वामीनाथन, कोदंडपाणि रिकार्डिंग थियेटर **संपादक:** एम.एस. मोनी **कला निर्देशक:** देवन **संगीत निर्देशक:** रवि **पार्श्व गायक:** के. जे. यशुदास **पार्श्व गायिका:** चित्रा **गीत:** युसुफ अली केचेरी **वेशभूषाकार:** नटराजन **विशेष प्रभाव:** मुरुकेश

सुभद्रा तामपुराठी का कुट्टन नाम का एक बेटा है, जिसे मिर्गी पड़ती है। वह झक्की और ज़िद्दी बन गया है क्योंकि इस हालत में उसे न तो कोई प्यार करता है और न ही उसे कोई चाहता है। उसके मित्र, हरि का लालन-पोषण भी सुभद्रा द्वारा ही होता है। हरि, अपने पिता से संगीत सीख कर, एक संगीतज्ञ बन जाता है। वह तंकामणि से प्रेम करने लगता है, जो इसके पिता की शिष्या है।

एक डाक्टर के सुभद्रा को यह सलाह देता है कि कुट्टन शादी के बाद ठीक हो सकता है। सुभद्रा तंकामणि को अपने बेटे की दुल्हन के रूप में देखना चाहती है और हरि को अपने प्यार की कुर्बानी देने के लिए कहती है।

फ़िल्म, हरि के लंबे समय के बाद घर वापिस लौटने से शुरू होती है, जो वापिस आकर कुट्टी को मरा हुआ पाता है, तंकामणि को लकवा मार जाता है और वह गूंगी हो जाती है तथा सुभद्रा मृत्युशय्या पर पड़ी होती है, सुभद्रा बताती है कि कुट्टन को तंकामणि के प्रति हरि के प्यार का पता चल जाता है, वह हरि की तलाश करता है और फिर आत्महत्या कर लेता है। अपनी गलती स्वीकार करते हुए उसे पाप से मुक्ति मिलती है। वह गाती है और हरि भजन को दोहराता है। तंकामणि की आवाज़ लौट आती है।

SARGAM

Malayalam/colour/147 min.

Producer: Bhavani **Director/Screenplay Writer:** Hariharan **Leading Actors:** Manoj K. Jayan, Vineeth **Leading Actress:** Amrutha **Supporting Actor:** Nedumudi Venu **Supporting Actress:** Urmila Unni **Child Artiste:** Roshan Bijili **Cinematographer:** Shaji **Audiographer:** Swaminathan Kodhandapani Recording Theatre **Editor:** M.S. Money **Art Director:** Devan **Music Director:** Ravi **Male Playback Singer:** K.J. Yesudas **Female Playback Singer:** Chitra **Lyrics:** Yusuf Ali Kechery **Costume Designer:** Natarajan **Special Effects:** Murukesh

Subhadra Thampuratty has an epilectic son, Kuttan, and has also brought up Hari, his close friend. Hari becomes a musician, learning from his father. He falls in love with Thankamani, his father's student. A doctor recommends that Kuttan can be cured by marriage. Subhadra fixes on Thankamani as her son's bride and asks Hari to renounce his love.

Hari returns after a long absence to find Kuttan dead, Thankamani mute after a paralytic stroke and Subhadra on her deathbed. Subhadra reveals that Kuttan had realised Hari's love for Thankamani, searched for him, and then killed himself. She is released from her guilt by her confession. She sings a kirtan and Hari takes up the song. Thankamani regains her voice.

श्वेत पाथरेर थाला

बंगला/रंगीन150 मिनट
निर्माता: शंकर गोप **निर्देशक/पटकथा लेखक:** प्रभात राय **मुख्य अभिनेता:** दीपांकर राय **मुख्य अभिनेत्री:** अपर्णा सेन **सह-अभिनेता:** सव्यसाची चक्रवर्ती **सह-अभिनेत्री:** इंद्राणि हलदर **छायाकार:** गिरीश पधिआर **ध्वनि आलेखक:** संजय मुखर्जी **संपादक:** स्वप्न गुहा **कला निर्देशक:** कार्तिक बोस **संगीत निर्देशक:** राहुल देव बर्मन **पार्श्व गायिका:** लता मंगेशकर, कविता कृष्णामूर्ति **गीत:** मुकुल दत्ता

बंदना एक साहसी महिला है जो अपने पति के घर में प्रसन्नतापूर्वक रहती है, यद्यपि वह अपने दिल की बात खोल देती है। जब उसका पति उसे और उसके दूध पीते बच्चे को पीछे छोड़ कर मर जाता है, तो उसके सास-ससुर उसकी मौत के लिए उसे कोसते हैं। उसका अंकल उसे घर वापिस ले आता है।

बंदना एक नौकरी कर लेती है। अपने अंकल की मौत के बाद वह अपने बेटे, अभिरूप के लिए एक घर बनाने का अपना प्रयत्न जारी रखती है। कुछ वर्षों के बाद, वह सुदीप्त सरकार-एक पेंटर से मिलती है और वे एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हो जाते हैं। अभिरूप इस संबंध का विरोध करता है। मां तथा बेटे के संबंधों की गहराई और बढ़ जाती है जब वह उसकी इच्छाओं के विरुद्ध शादी कर लेता है तथा अपने पूर्वजों के घर के अपने हिस्से को बेचकर विदेश चले जाने का निर्णय करता है। बंदना बीमार पड़ जाती है और सुदीप्त की टहल-सेवा से उसका स्वास्थ्य ठीक हो जाता है।

वह एक अनाथालय में चली जाती है। सुदीप्त उसे वहां मिलने जाता है परंतु वह कहती है कि अनाथों के प्रति उसके निःस्वार्थ प्यार ने उसके सभी दुःख-दर्द भुला दिए हैं। उनकी बिदाई के बाद वह अपने बचपन की गुड़िया को नदी में फेंक देती है।

SHWET PAATHARER THAALA

Bengali/colour/150 min.

Producer: Shankar Gope **Director/ Screenplay Writer:** Prabhat Roy **Leading Actor:** Dipankar Dey **Leading Actress:** Aparna Sen **Supporting Actor:** Sabyasachi Chakraborty **Supporting Actress:** Indrani Halder **Cinematographer:** Girish Padhiar **Audiographer:** Sanjoy Mukherji **Editor:** Swapan Guha **Art Director:** Kartick Bose **Music Director:** Rahul Dev Burman **Female Playback Singers:** Lata Mangeshkar, Kavita Krishnamoorthy **Lyrics:** Mukul Dutta.

Bandana is a spirited woman who is happy in her husband's home, although she speaks her mind freely. When her husband dies in an accident, leaving her with her infant son, her parents-in-law blame her for his death. Her uncle takes her home again.

Bandana takes up a job. After her uncle's death she continues to make a home for her son, Abhirup. Years later she meets Sudipta Sarkar, a painter, and they become attached to each other. Abhirup opposes this relationship, and the chasm between mother and son widens when he marries against her wishes and decides to go abroad with the proceeds from selling his share of the ancestral house. Bandana breaks down and is nursed back to health by Sudipta.

She withdraws into an orphanage. Sudipta follows her there, but she says the selfless love of the orphans has made her forget her troubles. After their farewell, she puts her childhood dolls into the river.

सूरज का सातवां घोड़ा

हिंदी/रंगीन/130 मिनट

निर्माता: एन.एफ.डी.सी., दूरदर्शन **निर्देशक:** श्याम बेनेगल **पटकथा लेखक:** शमा ज़ैदी **मुख्य अभिनेता:** रजत कपूर, अमरीश पुरी **मुख्य अभिनेत्री:** राजेश्वरी कौल, पल्लवी जोशी, नीना गुप्ता **सह-अभिनेता:** ललित तिवारी, रिजू बजाज़, रवी झंकल **सह-अभिनेत्री:** मोहिनी शर्मा **छायाकार:** पीयूश शाह **ध्वनि आलेखक:** अश्वनि बलसावर **संपादक:** भानूदास दिवाकर **कला निर्देशक:** नितिश राय **संगीत निर्देशक:** वनराज भाटिया **पार्श्व गायक:** उदित नारायण **पार्श्व गायिकायें:** कविता कृष्णमूर्ति, शुभा जोशी **गीत:** वसंत देव **वेशभूषाकार:** पिया बेनेगल

मानेक मुल्ला एक अविवाहित युवक है जो हर शाम अपने काम के बाद अपने छोटे से कमरे में दोस्तों के साथ बैठक लगाता है। इस पूरी फ़िल्म में वो तीन कहानियां सुनाता है और कहानियों में औरतों से अपने संबंधों के बारे में बताता है।

SURAJ KA SATVAN GHODA

Hindi/colour/130 min.

Producer: NFDC, Doordarshan **Director:** Shyam Benegal **Screenplay Writer:** Shama Zaidi **Leading Actors:** Rajat Kapoor, Amrish Puri **Leading Actresses:** Rajeshwari Kaul, Pallavi Joshi, Neena Gupta **Supporting Actors:** Lalit Tiwari, Riju Bajaj, Ravi Jhankal **Supporting Actress:** Mohini Sharma **Cinematographer:** Piyush Shah **Audiographer:** Ashwin Balsavar **Editor:** Bhanudas Divkar **Art Director:** Nitish Roy **Music Director:** Vanraj Bhatia **Male Playback Singer:** Udit Narayan **Female Playback Singers:** Kavita Krishnamoorthy, Shubha Joshi **Lyrics:** Vasant Deo **Costume Designer:** Piya Benegal

Manek Mulla is a bachelor. After work he holds court in his little room with several of his friends every evening.

The narrative covers two days during which he tells three stories about himself. The stories are discussed by the group for their veracity, what they mean and what moral they lead to.

The stories revolve around Manek's involvement with women. In each case he is separated from the woman. The stories border on the fantastic and surreal and attempt to define love.

स्वरूपम

मलयालम/रंगीन/97 मिनट
निर्माता: पी. टी. के. मोहम्मद **निर्देशक/कला निर्देशक:** के. आर. मोहनन् **मुख्य अभिनेता:** श्रीनिवासन **मुख्य अभिनेत्री:** संध्या राजेन्द्रन **सह-अभिनेता:** आबू सरकार **बाल कलाकार:** अम्बिका, प्रीता **छायाकार:** मधु अम्बत **ध्वनि आलेखक:** टी. कृष्णननुन्नी **संपादक:** वेणु **संगीत निर्देशक:** एल. वैद्यनाथन **पार्श्व गायक:** मनमोहन **पार्श्व गायिका:** लता **गीत:** रवुन्नी

शेखरन् एक मध्यवर्गीय किसान है। एक दिन वह एक बूढ़े व्यक्ति से मिलता है जो उसके प्रतिष्ठित वंश के बारे में बताता, जिसके बारे में शेखरन् अनभिज्ञ था। बूढ़ा व्यक्ति शेखरन् से कहता है कि उसे अपने पूर्वजों के प्रति अवश्य ही सम्मान व्यक्त करना चाहिए। शेखरन्, मुत्तपन में एक प्रार्थनालय का निर्माण करता है और अपने पूर्वजों की आत्मा से तल्लीन हो जाता है।

सभी पारिवारिक कार्यों से उसके मुख मोड़ लेने से उसकी पत्नी अप्रसन्न रहती है और उसके पड़ौसी उसकी ओर शक से देखने लगते हैं। एक धनी व्यक्ति उसके पास आता है और उस परिवार पर काला जादू करने के लिए कहता है, जिसके साथ उसका संपत्ति का झगड़ा है। अपनी समाधि में शेखरन् उस कार्य को करने के लिए तैयार हो जाता है परंतु अचानक उसे लगता है कि उसका अभीष्ट शिकार उसी के अनुरूप ही एक अन्य शिकार की तरह है। इस पाप से स्तब्ध वह स्वयं को प्रार्थनालय में कई दिन तक बंद कर लेता है। बाद में उसकी पत्नी उसे मरा हुआ पाती है।

SWAROOPAM

Malayalam/colour/97 min.

Producer: P.T.K. Mohammed **Director/Screenplay Writer/Art Director:** K.R. Mohanan **Leading Actor:** Sreenivasan **Leading Actress:** Sadhya Rajendran **Supporting Actor:** Abu Circar **Child Artistes:** Ambika, Preeta **Cinematographer:** Madhu Ambat **Audiographer:** T. Krishnanunni **Editor:** Venu **Music Director:** L. Vaidyanathan **Male Playback Singer:** Manoharan **Female Playback Singer:** Latha **Lyrics:** Ravunni

Sekharan is a lower middle-class farmer. One day he meets an old man who tells him of his illustrious ancestry, which Sekharan was unaware of. The old man tells Sekharan he must pay obeisance to his forefathers, in particular Mutthapan. Sekharan builds a chapel to Mutthapan and becomes engrossed by the spirit of his ancestor.

Sekharan's wife resents his withdrawal from all family concerns and his neighbours look on him with suspicion. A rich man comes to him to use black magic on a family with whom he has a property dispute. In his trance Sekharan sets out to do the deed but suddenly realises that his intended victim is another like himself. Numb with guilt he locks himself up in the chapel for days, until his wife finds him dead.

ताहदेर कथा

बंगला/रंगीन/100 मिनट
निर्माताः एम.एफ.डी.सी. **निर्देशक/पटकथा लेखकः** बुद्धदेव दासगुप्ता **मुख्य अभिनेताः** मिथुन चक्रवर्ती **मुख्य अभिनेत्रीः** अन्सुया मजूमदार **सह-अभिनेताः** दीपांकर डे **सह-अभिनेत्रीः** बिदीशा चक्रवर्ती **बाल कलाकारः** देवर्शी भट्टाचार्य **छायाकारः** वेणु **ध्वनि आलेखकः** अनूप मुखर्जी, ज्योति चटर्जी **संपादकः** उज्जल नंदी **कला निर्देशकः** बिसवादेव दासगुप्ता **पार्श्व गायकः** अमर पाल **वेशभूषा डिज़ाइनरः** कुंतला दास गुप्ता **विशेष प्रभावः** प्रसाद फ़िल्म लेबोरेट्री, मद्रास

शिबनाथ मुखर्जी एक स्वतंत्रता सेनानी है जिनके विचारों की वजह से लोगों ने उन्हें पागल करार दे दिया है। वे अभी हाल ही में पागलखाने से छूटे हैं। बिपिन गुप्ता उनकी सहायता से अगला चुनाव जीतना चाहता है। शिबनाथ की पत्नी हेमांगिनी और उसके बच्चे गरीबी की हालत में रहते हैं। हेमांगिनी, विपिन गुप्ता का साथ देने के लिए शिबनाथ की मनाही को नहीं समझती। उसका बेटा ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो उसे समझता है। अंत में हेमांगिनी, विपिन दास से मिलकर शिबनाथ को फिर से जेल भेजने का षड्यंत्र रचती है, परंतु उसका लड़का भौंपू बजा देता है और शिबनाथ सुदूर जंगल में भाग जाता है। एक घुमक्कड़ जादूगर सीधे-सादे ग्रामीणों को चकमा दे रहा होता है। वह जादूगर की हत्या कर देता है और ग्रामीणों को उससे छुटकारा दिलाता है। उसे जंजीरों से जकड़कर पुनः पागलखाने में डाल दिया जाता है।

TAHADER KATHA

Bengali/colour/100 min.

Producer: NFDC **Director/ Screenplay Writer:** Buddhadeb Dasgupta **Leading Actor:** Mithun Chakraborty **Leading Actress:** Anasua Majumdar **Supporting Actor:** Dipankar De **Supporting Actress:** Bidisha Chakrabarty **Child Artiste:** Debarshi Bhattachariya **Cinematographer:** Venu **Audiographers:** Anup Mukherjee, Jyoti Chatterjee **Editor:** Ujjal Nandi **Art Director:** Nikhil Sengupta **Music Director:** Biswadeb Dasgupta **Male Playback Singer:** Amar Pal **Costume Designer:** Kuntala Dasgupta **Special Effects:** Prasad Film Lab, Madras

Shibnath Mukherjee is a freedom fighter whose ideals have earned him the name of madman. He has just been released from a mental asylum by Bipin Gupta. Bipin wants to win the coming elections with his help. Shibnath's wife, Hemangini, and their children live in poverty. Hemangini cannot understand Shibnath's reluctance to join Bipin. His son is the only one to understand him. Hemangini finally conspires with Bipin to confine Shibnath again, but the boy sounds the alarm. Shibnath flees to the far edge of a forest, where a travelling magician is performing tricks on gullible villagers. He kills the magician to free the people from someone who would make them mindless. He is taken back to the asylum in chains.

तेवर मगन

तमिल/रंगीन/145 मिनट

निर्माता/ पटकथा लेखक/ मुख्य अभिनेता/ पार्श्व गायक: कमल हासन **निर्देशक:** बारथन **मुख्य अभिनेता:** गोवतमी **सह-अभिनेता:** शिवाजी गणेशन **सह-अभिनेत्री:** रेवती मेनन **छायाकार:** पी.सी. श्रीराम **ध्वनि आलेखक:** पांडुरंगन **संपादक:** सतीश **कला निर्देशक:** इलयाराजा **पार्श्व नायिका:** एस. जानकी **गीत:** वाली **नृत्य कलाकार:** रघुराम **वेश-भूषा डिज़ाइनर:** सारिका कमल हासन

विदेश में शिक्षित, पेरियासामी तेवर का पुत्र, शक्तिवेल, अपनी सहेली बानू के साथ गांव में लौटता है। शक्तिवेल अपने तथा अपने अंकल, चिन्ना तेवर के बीच लंबी अवधि से चली आ रही दुश्मनी को और बढ़ा देता है। पंचायत में अपने भाई द्वारा की गई बेइज्जती से उसका दिल टूट जाता है और पेरिया तेवर की मृत्यु हो जाती है।

शक्ति अपने नौकर तथा ज़मीदार की बेटी की मार्गाधिकार से शादी पक्की कराके अपने अंकल द्वारा बंद किए मार्गाधिकार को खोल देता है। उसका चचेरा भाई गांव से बाहर तक दूल्हे का पीछा करता है और अपना वचन निभाने के लिए शक्ति लड़की से शादी कर लेता है।

शक्ति का चचेरा भाई उसकी हत्या करने की कोशिश करता है और असफल रहता है। दूसरे प्रयत्न में, वह शक्ति के हाथों मारा जाता है।

THEVAR MAGAN

Tamil/colour/145 min.

Producer/Screenplay Writer/ Leading Actor/Male Playback Singer: Kamal Haasan **Director:** Bharathan **Leading Actress:** Gowthami **Supporting Actor:** Sivaji Ganesan **Supporting Actress:** Revathy Menon **Cinematographer:** P.C. Sriram **Audiographer:** Pandurangan **Editor:** Satish **Art Director:** Ashok **Music Director:** Ilayaraja **Female Playback Singer:** S. Janaki **Lyrics:** Valee **Choreographer:** Raghuram **Costume Designer:** Sarika Kamal Haasan

Periyasamy Thevar's son Sakthivel, educated abroad, returns to his village with his girlfriend Banu. Sakthivel inflames a long-smouldering feud between his father and his uncle, Chinna Thevar. Insulted by his brother in the panchayat, Peria Thevar dies of a broken heart.

Sakthi tries to open a right-of-way blocked by his uncle by arranging a marriage between his servant and the daughter of a land-owner. His cousin hounds the groom out of the village and Sakthi marries the girl himself to keep his word. Sakthi's cousin tries to kill him. In a second attempt, he is killed by Sakthi.

विनया समया

उड़िया/रंगीन/99 मिनट

निर्माता: शंकर गोप **निर्देशक/पटकथा लेखक/कला निर्देशक:** मनमोहन महापात्र **मुख्य अभिनेता:** सरोज पटनायक **सह-अभिनेता:** सच्चिदानंदा रथ **छायाकार:** जहांगीर चौधरी **ध्वनि आलेखक:** नागेन बारिक **संपादक:** रवि पटनायक **संगीत निर्देशक:** शान्तनु महापात्र

अरिन्दम बदलते हुए विश्व में अपने विचारों को सही ठहराने का प्रयत्न करता है। जब वित्तीय संस्थान के प्राधिकारी, जिसमें वह काम करता है, उसे एक झूठा मूल्यांकन प्रमाणपत्र बनाने के लिए कहते हैं, तो वह इस्तीफ़ा दे देता है। उसका पिता तथा भाई पोलीमर उद्योग लगाने में उसकी सहायता करते हैं। अपने कारोबार को सफल बनाने के लिए उसे कुछ अधिकारियों को संतुष्ट करना पड़ता है। यह उसके जीवन का वर्तन-काल है। वह व्यापार के क्षेत्र में काफी आगे बढ़ जाता है और व्यक्तिगत संबंध विकसित करना शुरू कर देता है परंतु इसके साथ ही धीरे-धीरे उन मूल्यों को खो देता है जिन्हें आधार बनाकर उसने अपना जीवन शुरू किया था। उसके पिता ने एक बार उससे कहा था, "जीवन सरल है, इसे जटिल मत बनाओ।"

एक दिन, एक निर्माण परियोजना को हासिल करने के लिए वह एक पड़ौसी राज्य

में जाता है, वह सड़क पर हुई दुर्घटना को देखने के लिए अपनी कार रोकता है। तब वह स्वयं से प्रश्न करता है, "मैं कहां जा रहा हूं? इस गति से, मैं कहां तक जा सकता हूं?"

VINYA SAMAYA

Oriya/colour/99 min.

Producer: Shankar Gope **Director/ Screenplay Writer/Art Director:** Manmohan Mahapatra **Leading Actor:** Saroj Patnaik **Supporting Actor:** Sochidananda Rath **Cinematographer:** Jehangir Chowdhury **Audiographer:** Nagen Barik **Editor:** Rabi Patnaik **Music Director:** Shantanu Mahapatra

Arindam is trying to uphold his ideals in a changing world. When the authorities of the financial institution he works for ask him to fabricate a valuation certificate, he resigns. His father and brother help him set up a polymer industry. In establishing his business he has to satisfy some officials. This is the turning point of his life. He moves higher in the business circles and begins developing personal contacts, but he gradually loses the values he started with. His father has once told him, "Life is simple, don't complicate it."

One day, while driving to a neighbouring state in pursuit of a construction project, he stops his car to look at an accident on the road. He then asks himself, "Where am I going? At this speed, how far can I go?"

कथासार: ग़ैर-कथाचित्र

Synopses: Non-Feature Films

अगर आप चाहें

हिंदी/रंगीन/71 मिनट
निर्माता: शहनाज़ रहीम **निर्देशक/संपादक:** मजाहिर रहीम **पटकथा लेखक:** शहनाज़ रहीम, मुशताक मर्चेंट **मुख्य अभिनेता:** मकरंद देशपांडे **मुख्य अभिनेत्री:** नेहा शरद **सह-अभिनेता:** राजेश खट्टर **सह-अभिनेत्री:** भारती शर्मा **छायाकार:** बशीर अली **संगीत निर्देशक:** इला अरुण

देवा, धरती मां का बेटा है। वह अपने गांव को एक आदर्श गांव में बदलने का सपना देखता है परंतु कई वर्षों के लगातार सूखे से उसके इरादे ध्वस्त हो जाते हैं। वह अपने कई दोस्तों को जीवन-यापन की तलाश में मजबूरी में नगर में बसर करने के लिए जाते हुए देखता है। बाद में उसका बड़ा भाई भी नगर-गमन कर जाता है।

सुभाष और उसकी पत्नी, देवी नगरवासी हैं जो यहां अपना आधार बनाने के लिए लालायित हैं। उन्हें पता चलता है कि सरकार कृषि-विकास के लिए आसान किस्तों पर ऋण देती है। वे इन परियोजनाओं का लाभ उठाते हुए नया जीवन शुरू करने का फैसला लेते हैं।

सुभाष को देवा के विद्वेश का सामना करना पड़ता है, जो गांव वासियों को उसके विरुद्ध भड़काता है। परंतु धीरे-धीरे देवा यह जान जाता है कि उन दोनों का एक ही सपना है और इसके लिए वे एकजुट हो जाते हैं।

AGAR AAP CHAHEIN

Hindi/colour/71 min.

Producer: Shahnaz Rahim **Director/ Editor:** Mazahir Rahim **Screenplay Writers:** Shahnaz Rahim, Mushtaaq Merchant **Leading Actor:** Makrand Deshpande **Leading Actress:** Neha Sarad **Supporting Actor:** Rajesh Khattar **Supporting Actress:** Bharati Sharma **Cinematographer:** Basheer Ali **Music Director:** Ila Arun

Devaa is a son of the soil. He has dreams of turning his village into an ideal one but consecutive years of drought have frustrated his vision. He helplessly watches many of his friends migrate to the city in search of a livelihood. The last straw is the migration of his elder brother.

Subhash and his wife Devi are city dwellers yearning for their roots. They discover that the government offers easy loans for agricultural development. They decided to use the schemes and start a new life.

Subhash faces hostility from Devaa, who incites the villagers against him. But slowly Devaa realises that they both share a common vision. They join hands.

एंटार्क्टिका-ए साइंटिस्ट पैराडाइज़

अंग्रेजी/रंगीन/30 मिनट
निर्माता: आर. कृष्णा मेनन **निर्देशक/छायाकार:** ए. उदयशंकर **संपादक:** के. वी. आर. कृष्णा राव, सिरीश अम्बेदकर, आर. एम. राठौर **संगीत:** रामानुज दासगुप्ता

इस समाचार मैगज़ीन एन्टार्क्टिका में 11वें भारतीय वैज्ञानिक अनुसंधानों को प्रस्तुत करते हुए फ़िल्म में एन्टार्क्टिका में वैज्ञानिक परिणामों में भारतीय रुचि को भी निरूपित किया गया है, जो महाद्वीपीय अपसरण से पूर्व उप-महाद्वीप का एक भाग था।

ANTARCTICA—A SCIENTISTS' PARADISE

English/colour/30 min.

Producer: R. Krishna Mohan **Director/ Cinematographer:** A. Udayashankar **Editors:** K.V.R. Krishna Rao, Sirish Amberkar, R.M. Rathod **Music:** Ramanuj Dasgupta

This news magazine is a coverage of the Eleventh Indian Scientific Expedition to Antarctica. While presenting various scientific researches carried out at the polar region, the film also explains Indian interest in the scientific findings in Antarctica, which was once part of the subcontinent before the continental drift.

बेर

अंग्रेजी/रंगीन/19 मिनट

निर्माता: ओमप्रकाश शर्मा **निर्देशक:** राजगोपाल राव **छायाकार:** इफ्तिकार अहमद **ध्वनि-आलेखक:** जगदेश **संपादक:** एम. सुब्बारामी

भारतीय उपमहाद्वीप का बहुत बड़ा भाग शुष्क और अर्द्धशुष्क क्षेत्रों का है। इन क्षेत्रों में कृषि मुख्यत: वर्षा पर निर्भर करती है जोकि अपर्याप्त और अनिश्चित है। बेर एक ऐसी फ़सल है जिसकी जड़ें गहरी होती हैं और यह भूमि की ऊपरी सतह से आर्द्रता भी ले सकती है। इस प्रकार, यह शुष्क और अर्द्धशुष्क क्षेत्रों के लिए एक आदर्श फ़सल है।

फ़िल्म में बेर उगाने की वैज्ञानिक विधि के प्रचार पर बल दिया गया है और पौधा-संरक्षण, उर्वरक के प्रयोग और विपणन जैसे प्रचालनों की जानकारी दी गई है।

BER

English/colour/19 min.

Producer: Omprakash Sharma **Director:** Rajgopal Rao **Cinematographer:** Iftakhar Ahmed **Audiographer:** Jagadesh **Editor:** M. Subramani

Arid and semi-arid regions constitute a major part of the Indian subcontinent. Agriculture in these areas depends mainly on rainfall which is erratic and scanty. Ber is a crop with a deep root system and can also extract moisture from the top layer of the soil. It is thus an ideal crop for the arid and semi-arid regions.

The film highlights propagation of a scientific method of growing ber and covers operations such as plant protection, fertiliser application and marketing.

चूड़ियां

हिंदी/रंगीन/60 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा/लेखक/गीत: सई परांजपे **मुख्य अभिनेता:** ब्रजभूषण साहनी, चन्दु पारखी **मुख्य अभिनेत्री:** शोभा खोटे, आशा दंडवते **बाल कलाकार:** सई देवधर, नागेश्वर ठाकुर, सचिन शिरके **छायाकार:** हरीश पटेल **संपादक:** नरेन्द्र सिंह **कला निर्देशक:** अजीज दंडेकर, अतुल चावेरे **संगीत निर्देशक:** आनन्द मोडक **पार्श्व गायिका:** विन्नी परांजपे

फ़िल्म में दिखाए गए गांव में, पुरुष वर्ग को अक्सर शराब के नशे में दिखाया गया है। वे अपनी पत्नियों को पीटते हैं और अपने परिवारों की उपेक्षा करते हैं और अपनी मेहनत की कमाई को शराब में उड़ा देते हैं। जब एक बच्चा मर जाता है और उसका पिता, शंकर और अन्य व्यक्ति पब के रूप में इस्तेमाल लाने वाले टीन के बने बाड़े में सायंकालीन महफ़िल को छोड़ने से मना कर देते हैं तो महिलाओं का क्रोध भड़क उठता है। शंकर की मां अपने बेटे को चूड़ियां पहन लेने के लिए कहती है क्योंकि वह अपनी आदत से मजबूर हो गया है।

महिलाएं, एक शिक्षका के नेतृत्व में, गांव में शराबनोशी के विरोध में एक दल बनाती हैं। वे एक व्यक्ति द्वारा अपनी पत्नी को पीटने से मना करती हैं, शराब छोड़ देने के लिए अपने पतियों को बाध्य करने के लिए एकजुट हो जाती हैं तथा पब और शराब निकालने की मशीन बंद कर देती हैं। पुरुष वर्ग पुनः अपने पारिवारिक जीवन में लौट आता है।

CHOODIYAN

Hindi/colour/60 min.

Producer/Director/Screenplay Writer/Lyrics: Sai Paranjpye **Leading Actors:** Brujbhushan Sahani, Chandu Parkhi **Leading Actresses:** Shubha Khote, Asha Dandavate **Child Artistes:** Sai Devdhar, Nageshwar Thakur, Sachin Shirke **Cinematographer:** Harish Patel **Editor:** Narendra Singh **Art Directors:** Ajit Dandekar, Atul Chawere **Music Director:** Anand Modak **Female Playback Singer:** Vinee Paranjpye

In the village shown in the film, the men are often drunk. They beat their wives and neglect their families, spending hard-earned money on drink. When a child dies while his father, Shankar, and the other men refuse to leave the evening session at the tin enclosure that serves as their pub, the women's anger is aroused. Shankar's mother tells her son to wear a bangle because he has been unmanned by his habit.

The women, led by a teacher, form a group to combat alcoholism in their village. They stop a man from beating his wife, unite to force their men to give up liquor and close down the pub and distilling machine. The men take up a family life again.

चुनौती

हिंदी/रंगीन/13 मिनट
निर्माता: सूचना तथा लोक संपर्क महानिदेशक, महाराष्ट्र सरकार **निर्देशक/पटकथा लेखक:** दिनकर चौधरी **छायाकार:** यू. एस. श्रीवास्तव **संपादक:** मोहन राठौर **संगीत निर्देशक:** जानकी

फ़िल्म, एड्स-इसको उत्पन्न करने वाले वाइरस, इसके संक्रमण तथा बचाव के साधनों और इस बीमारी के लक्षणों तथा इसके बढ़ने के आधारभूत तथ्यों के बारे में दर्शकों को शिक्षित करने के लिए बनाई गई है। फ़िल्म में टीका लगाने की सुईयों को जीवाणुहीन बनाने, दान में दिए गए खून में वाइरस के होने की जांच करने, एक ही जीवन-साथी के साथ संभोग करने की पाबंदी और संभोग करने के दौरान उचित सुरक्षा रखने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

CHUNAUTI

Hindi/colour/13 min.

Producer: Director General of Information and Public Relations, Govt. of Maharashtra **Director/Screenplay Writer:** Dinkar Chowdhary **Cinematographer:** U.S. Shrivastav **Editor:** Mohan Rathod **Music Director:** Janki

The film sets out to educate viewers about the basic facts of the Acquired Immune Deficiency Syndrome—the virus which causes it, the means of transmission and prevention, the symptoms and the progress of this disease. It stresses the need for sterilisation of needles, testing of donated blood for the presence of the virus, restriction of intercourse to one partner, and proper protection during intercourse.

गाय की सच्चाई

हिंदी/रंगीन/22 मिनट
निर्माता: क्लाईंब फ़िल्म, एन.सी.वाई.पी.
निर्देशक/पटकथा लेखक/गीत: भीमसेन **ध्वनि आलेखक:** किशन थोरट **संपादक:** वसंत **संगीत निर्देशक:** सुरिन्दर कोहली, भीमसेन **पार्श्व गायक:** मीना गोकुलदास

एक दिन एक गाय चरागाह से लौटते हुए अपना रास्ता भूल जाती है। उसका मार्गदर्शन बुलबुल करती है और वह सही मार्ग पर भागती है क्योंकि उसका बछड़ा उसका इंतज़ार कर रहा होगा और संभवत: वह भूखा भी होगा। एक चीता उसकी घात में बैठा होता है। वह चीते से घर जाने के लिए और अपने बछड़े को दूध पिलाने तथा उससे अंतिम बार मिलने के लिए चीते से कुछ समय मांगती है। वह चीते के पास लौटने का वायदा करती है ताकि वह भूखा न रहे। चीता उसे इस शर्त पर जाने देता है कि वह वापिस आ जाएगी।

वह घर वापिस आकर अपने बछड़े को दूध पिलाती है और उससे विदा लेती है। इस पर बछड़ा आपत्ति करता है। दूसरे जानवर गाय को कहते हैं कि उसे चीते के साथ अपना वायदा निभाने के लिए अपने बछड़े को नहीं छोड़ना चाहिए।

इस बीच चीता, गाय के वापिस लौटने के विचार को छोड़ देता है और उसके खाने के

लिए उसके वास्तविक तौर पर लौटते हुए उसे हैरानी होती है। बछड़ा, जो उसके साथ आता है, अपनी मां के स्थान पर अपने को खाए जाने के लिए कहता है। चीता, उनकी इस चिंता से कि वह भूखा न रहे, प्रभावित होता है और उनको जाने देता है।

GAAYE KI SACHAI

Hindi/colour/22 min.

Producer: Climb Films, N'CYP **Director/Screenplay Writer/Lyrics/ Animator:** Bhimsain **Audiographer:** Krishan Thorat **Editor:** Vasant **Music Directors:** Surindar Kohli, Bhimsain **Male Playback Singer:** Meena Gokuldas

One day a cow loses her way when she is returning from the pastures. She is guided by a nightingale and rushes down the right path because her calf is waiting for her and is probably hungry. She is waylaid by a tiger. She pleads for enough time to go home and feed her calf and say goodbye to him for the last time. She promises to return to the tiger so that he will not go hungry. The tiger lets her go on the condition that she will return.

She comes home to feed her calf and say her farewell. The calf protests. The other animals tell the cow she should not neglect her calf just to keep a promise, but the cow is firm.

Meanwhile the tiger has given up on the cow and is surprised to see her actually returning to be eaten. The calf who has come along asks to be eaten in place of his mother. The tiger is touched by their concern that he should not go hungry and lets them go free.

इन सर्च आफ इंडियन थियेटर

अंग्रेजी/रंगीन/40 मिनट
निर्माता: अरुणधति चटर्जी **निर्देशक/पटकथा लेखक:** अभिजीत चट्टोपाध्याय **छायाकार:** सौमेन्दु रे, गौड़ करमकर, स्वप्न नंदी **संपादक:** अरुण दत्ता **संगीत निर्देशक:** ओरिजनल साऊण्ड ट्रेक

नया रंगमंच, एक ऐसा दल है, जो लोक रंगमंच को एक आधुनिक रंगमंच की भाषा में प्रस्तुत करता है। तनवीर इसका संस्थापक है, वह देहाती कला-निष्पादकों को उनके एकाकीपन से निकाल कर शहरी परिप्रेक्ष्य में उनकी कला को प्रदर्शित करने के लिए नहीं लाता बल्कि अपनी सीमा क्षेत्रों के विस्तार के लिए लाता है।

उनके कलाकारों के विषय भारतीय लोक कथाओं से लेकर बरटोल्ट ब्रेष्ट के नाटकों तक फैले हुए हैं। तनवीर ने नाटकों के विभिन्न साधनों को अपने कलाकारों के लोक उद्‌गम में, उनके अनुभव और निरूपण, उनकी भाषा तथा उनके माधुर्य और उनकी अनुभूति तथा संवेदनशीलता के संदर्भ में, मिलाने का प्रयत्न किया है।

तनवीर अपने नाटक, उन नाटकों के पात्रों के साथ लिखता है, इसलिए पूर्वाभ्यास, नाटक लेखन की सर्जनात्मक प्रक्रिया का एक भाग है। हालांकि नाटकों के पात्र भारत के निचले समुदायों से आते हैं, नया रंगमंच ने उनकी व्यक्तिगत मान-मर्यादाओं की अनुभूति को अपने वश में कर लिया है।

IN SEARCH OF INDIAN THEATRE

English/colour/40 min.

Producer: Arundhati Chatterjee **Director/Screenplay Writer:** Abhijit Chattopadhyay **Cinematographers:** Soumendu Ray, Gaur Karmakar, Swapan Nandy **Editor:** Arun Dutta **Music:** original soundtrack

Naya Theatre is a group that presents folk theatre in a modern theatrical idiom. Habib Tanvir, its creator, has brought these peasant performers out from their isolation, not to transplant their art into an urban context, but to extend its frontiers.

The subjects of their performers range from Indian folk tales to the dramas of Bertolt Brecht. Tanvir has tried to assimilate the varied sources of the plays into the folk origin of his players in terms of their experience and expression, their language and melody, their sense and sensibility.

Tanvir writes his plays with his players, so rehearsals are part of the creative process of playwriting. While the players come from the downtrodden communities of India, Naya Theatre has empowered their sense of personal dignity.

कलरिपयट

अंग्रेजी/रंगीन/35 मिनट

निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक: पी. अशोक कुमार **छायाकार:** सन्नी जोसेफ **ध्वनि आलेखक:** टी. कृष्णानुन्नी **संपादक:** के. आर. बोस **संगीत निर्देशक:** मोहन सितारा

फ़िल्म में केरल की युद्ध-कलाओं का विस्तृत अध्ययन किया गया है। इसमें प्रारंभिक से उच्च अवस्थाओं तक का अभ्यास करने वाले अनेक प्रतिपादकों और विद्यार्थियों को विभिन्न परंपरागत हथियारों का प्रयोग करते हुए, प्रशिक्षण लेते हुए दिखाया गया है। यह कला के पौराणिक उद्गम, केरल के उत्तरी तथा दक्षिणी भागों में कलरिपयट स्कूलों में भिन्नता और कत्थकली तथा वेलकली जैसे शास्त्रीय नृत्य-रूपों पर कला के प्रभाव का पता लगाती है।

KALARIPPAYAT

English/colour/35 min.

Producer/Director/Screenplay Writer: P. Ashok Kumar **Cinematographer:** Sunny Joseph **Audiographer:** T. Krishnanunni **Editor:** K.R. Bose **Music Director:** Mohan Sitara

The film is a comprehensive study of the martial arts of Kerala. It shows a number of exponents and students performing exercises from basic to advanced stages, involving training in the use of traditional weapons. It also explores the legendary origin of the art, the difference between schools of Kalarippayat in the northern and southern parts of Kerala, and the influence the art has had on classical dance forms such as Kathakali and Velakali.

नाक आऊट

तमिल/श्वेत-श्याम, कुछ रंगीन/17 मिनट
निर्माता: बुद्धा पिक्चर्स, बी. लेनिन **मुख्य अभिनेता:** सत्येन्द्रन **सह-अभिनेता:** शिवाजी **छायाकार:** बी. कन्नन **ध्वनि आलेखक:** रोमन सिने सर्विस **कला निर्देशक:** कमला शेखरन **पार्श्व गायक:** परिनमन **गीत:** पट्टीनातर अडिगल **वेश-भूषा डिज़ाइनर:** राजेन्द्रन

संजीवी बाक्सिंग का एक प्रसिद्ध चैम्पियन था जिसने अपने उत्कर्ष काल में अनेक पदक और ट्राफियां जीती हैं। अब वह अपने शहर की गलियों में गरीबी का जीवन बसर कर रहा है। लोग उसे भूल गए हैं और उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता है। इस प्रकार, वह मर जाता है और उसे बिना किसी सम्मान या धार्मिक-रीति से दफ़ना दिया जाता है। कुछ वर्षों के पश्चात् सरकार उसे एक उत्कृष्ट खिलाड़ी के रूप में मानती है और उसकी अनजानी समाधी से कुछ मीटर की दूरी पर उसके सम्मान में एक स्मारक बनाती है।

इस फ़िल्म के निर्माण का उद्देश्य खिलाड़ियों को उनके जीवन-काल में सम्मान तथा आदर-सत्कार दिलवाना है ताकि भविष्य की खिलाड़ी पीढ़ियों को प्रोत्साहित किया जा सके।

KNOCK-OUT

Tamil/B&W, partly colour/17 min.

Producers: Buddha Pictures, B. Lenin **Director/Screenplay Writer/Editor:** B. Lenin **Leading Actor:** Satyendran **Supporting Actor:** Sivajee **Cinematographer:** B. Kannan **Audiographer:** Roman Cine Service **Art Director:** Kamalasekaran **Male Playback Singer:** Parinamam **Lyrics:** Pattinathar Adigal **Costume Designer:** Rajendran

Sanjeevi was a famous boxing champion who had won scores of medals and trophies in his prime. Now he leads an impoverished existence on the streets of his city, forgotten and uncared-for. He dies thus and is buried without honour or ritual. Years later, the government recognises him as an outstanding sportsman and builds a memorial in his honour a few metres away from his unmarked grave.

The aim of the filmmaker is to get athletes honoured and respected in their own lifetimes, so as to inspire future generations of athletes.

लदाख़-द फारबिडन वाइल्डरनेस

अंग्रेजी/रंगीन/52 मिनट
निर्माता: बेदी फ़िल्म्स **निर्देशक:** नरेश बेदी **छायाकार:** नरेश बेदी, राजेश बेदी **ध्वनि आलेखक:** राजेश बेदी **संपादक:** निगेल एशक्रोफ्ट **संगीत निर्देशक:** स्टीव मार्शल

1970 में कुछ भागों को विदेशियों के लिए खोलने से पूर्व, लदाख़ को सामरिक महत्व के सैनिक ठिकानों के कारण तीस वर्ष तक विदेशियों के लिए बंद रखा गया। इस क्षेत्र में समृद्ध तथा विविध वन्य-जीवन है, जिसके बारे में लोग बहुत कम जानते हैं।

फ़िल्म में कारजोक गांव के आस-पास वन्य-जीवन तथा प्रतिकूल पर्यावरण में शताब्दियों के सहभाव से बने असामान्य संबंधों का पता लगाने का प्रयास किया गया है। इसमें, बर्फ में रहने वाले चीते के अप्रत्याशित फुटमान को दर्शाया गया है, जिस पर कई वर्षों तक अध्ययन किया गया है, परंतु उसे न देखा गया और न कभी फ़िल्मों में दिखाया गया है। जैसे ही त्सो मोरारी झील का बर्फ से जमा हुआ धरातल पिघलने लगता है, नंगे सिर के कालहंस झील के महाद्वीप में आ जाते हैं। इससे पूर्व, प्रकृतिवादियों द्वारा इन कालहंसों के प्रजनन को कभी रिकार्ड नहीं किया गया क्योंकि यह तभी होता है जब घाटी बर्फ से ढकी होती है। फ़िल्म में महान शिखाधर पनडुब्बियों के क्रियाकलापों पर भी विस्तार से दिखाया गया है।

LADAKH—THE FORBIDDEN WILDERNESS

English/colour/52 min.

Producer: Bedi Films **Director:** Naresh Bedi **Cinematographers:** Naresh Bedi, Rajesh Bedi **Audiographer:** Rajesh Bedi **Editor:** Nigel Ashcroft **Music Director:** Steve Marshal

The Ladakh region was closed to outsiders for thirty years for strategic military reasons before some parts were opened in 1974. The area has a rich and varied wildlife of which the world knows little.

The film explores the wildlife around the village of Karzok and the unusual relationship forged by centuries of coexistence in a hostile environment. It contains unprecedented footage of the snow leopard, which has been studied for many years but seldom sighted, and very rarely filmed. As the frozen surface of the Tso Morari lake begins to melt, bar-headed geese arrive on the islands of the lake. The breeding of these geese has never before been recorded by naturalists because it occurs while the valley is still snow-bound. There is also a detailed sequence on the activities of the great crested grebe.

नूट्टअनटीनटे साक्षी

मलयालम/रंगीन/28 मिनट
निर्माताः सलम करस्सेरी **निर्देशकः** शशि भूषण **पटकथा लेखकः** एम. एन. करस्सेरी **छायाकारः** ए. वी. थॉमस **ध्वनि-आलेखकः** इरशाद हुसैन **संपादकः** वी. वेणु गोपाल **संगीत निर्देशकः** जी. देवराजन

फ़िल्म में, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के स्थापना वर्ष 1885 में जन्मे स्वतंत्रता सेनानी मोहिदु मौलवी की यादों से भारतीय इतिहास के एक अंश को प्रस्तुत किया गया है। इलायिदतु वीत्तिल मोहिदु अपने पिता से प्रभावित हुए, जोकि एक धार्मिक विद्वान, वक्ता और मलयालम और अरबी भाषाओं के कवि थे, जिन्होंने अपने बेटे को प्रगतिशील शिक्षा दी। मोहिदु, दारूल उलूम मदरसा में प्रधान अध्यापक थे, जिन्होंने धार्मिक शिक्षा को सामाजिक मुद्दों के साथ जोड़ा। उस समय का महत्वपूर्ण मुद्दा 'होम रूल' का था।

मोहिदु मौलवी ने खिलाफ़त आंदोलन में भाग लिया जिसने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से गठजोड़ किया। मोहिदु और अन्य नेताओं ने इसे अहिंसावादी संघर्ष के तौर पर जारी रखने का अनुरोध किया और जब अंग्रेजों ने केरल में उठ खड़े हुए विद्रोह को दबाने के लिए विद्रोहियों पर अत्याचार किए तो उन्होंने 'नागरिक अवज्ञा आंदोलन' शुरू किया।

NOOTTANTINTE SAKSHI

Malayalam/colour/28 min.

Producer: Salam Karassery **Director:** Sasibhooshan **Screenplay Writer:** M.N. Karassery **Cinematographer:** A.V. Thomas **Audiographer:** Irshad Hussain **Editor:** V. Venugopal **Music Director:** G. Devarajan

The film presents a slice of Indian history through the memories of Moidu Maulvi, a freedom fighter born in 1885. Ilayidathu Veettil Moidu was influenced by his father, a religious scholar, orator and poet in Malayalam and Arabic who gave his son a progressive education. Moidu's headmaster at the Darul Uloom Madrassa was a man who linked religious education to social issues. The most significant issue of the time was home rule.

Moidu Maulvi joined the Khilafat movement, which joined hands with the Indian National Congress. Moidu Maulvi and other leaders urged the people to keep the struggle nonviolent and, when the British suppressed the rebellions that broke out in Kerala, reactivated the civil disobedience movement.

पंडित भीमसेन जोशी

हिंदी/रंगीन/76 मिनट

निर्माता/निर्देशकः गुलज़ार **छायाकारः** मनमोहन सिंह **ध्वनि आलेखनः** नरेन्द्र सिंह **संपादकः** सुभाष सहगल

फ़िल्म, पंडित भीमसेन जोशी के जीवन पर है, जिन्होंने रागों के बारे में गहरे अनुभव और अपनी आवाज़ के खिंचाव और लचक के कारण हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की दुनिया में ख्याति प्राप्त की है। अब्दुल करीम खान के मुख्य शिष्य, स्वामी गंधर्व ने उनके संगीत को पराकाष्ठा तक पहुंचा दिया है, परंतु पंडित भीमसेन जोशी ने अपनी संगीत-शैली में कई अन्य संगीतज्ञों के प्रभाव को भी स्वीकार किया है।

संगीतकार को 1972 में पद्मश्री, 1976 में नाटक अकादमी पुरस्कार और 1985 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।

PANDIT BHIMSAIN JOSHI

Hindi/colour/76 min.

Producer/Director: Gulzar **Cinematographer:** Manmohan Singh **Audiographer:** Narender Singh **Editor:** Subhash Sehgal

The film is a biography of Pandit Bhimsain Joshi, who has reigned over the Hindustani classical music scene because of his deep understanding of ragas and because of the range and flexibility of his voice. His music was chiselled to perfection by Swami Gandharva, the chief disciple of Abdul Karim Khan, but Pandit Bhimsain Joshi acknowledges the influence of several other musicians on his style.

The musician received the Padma Shree in 1972, the Sangeet Natak Akademy Award in 1976 and the Padma Bhushan in 1985.

राम के नाम

हिंदी (अंग्रेजी कमेंट्री के साथ)/रंगीन/91 मिनट

निर्माता/निर्देशक/छायाकार/संपादक: आनन्द पटवर्धन **ध्वनि-आलेखक:** परवेज़ मरवांजी **पार्श्व गायिका:** नीला भगत **गीत:** कबीर

अयोध्या में मंदिर-मस्जिद विवाद मुख्य मुद्दा बन जाता है और सरकार द्वारा इस समस्या को सुलझाने में बार-बार मना करने से, धार्मिक-दंगों में हजारों व्यक्ति मर गए हैं। रूढ़िवाद, राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के लिए एक छोटा रास्ता हो गया है। मध्यवर्गीय समाज को मात्र धर्म के नाम पर संतुष्ट किया जा रहा है। गरीबों में, धार्मिक पुनर्जागरण का स्वागत, संदेह से किया जा रहा है।

फ़िल्म में हिंदू आतंकवादियों द्वारा हिंदू पुनरुत्थान के प्रतीक के रूप में राम-मंदिर का जोर-जबरदस्ती निर्माण करने तथा राम के नाम पर धार्मिक अनुदारता तथा नफ़रत फैलने को रोकने के लिए सभी धर्मों को मानने वाले धर्म-निरपेक्ष भारतीयों के प्रयत्नों को चित्रित किया गया है।

RAM KE NAAM

Hindi (with English commentary)/ colour/91 min.

Producer/Director/Cinematographer/ Editor: Anand Patwardhan **Audiographer:** Pervez Merwanji **Female Playback Singer:** Neela Bhagwat **Lyrics:** Kabir

As the temple-mosque controversy at Ayodhya takes centre stage and successive governments refuse to resolve the issue, religious riots have claimed thousands of lives. Fundamentalism has become a short cut to political power and the middle class is fed on pop religion. Among the poor, religious revivalism is greeted with scepticism.

The film documents the attempt by Hindu militants to forcibly construct the Ram temple as a symbol of Hindu resurgence, as well as the efforts of secular Indians of all faiths to prevent the spread of religious intolerance and hatred in the name of God.

द रेक्लूस

हिंदी/रंगीन/30 मिनट
निर्माता/निर्देशक/पटकथा लेखक: अरविंद सिन्हा **छायाकार:** अशीम बोस **संपादक:** रबि रंजन मैत्रा

ध्रुपद की डागर वाणी शैली के वरिष्ठ सदस्य, उस्ताद नसीर अमीनुद्दीन डागर का जन्म 1923 में एक विख्यात संगीतज्ञ-परिवार में हुआ। उनके पिता, महान नसीरूद्दीन खान डागर, इंदौर के होल्कर के मुख्य दरबारी संगीतज्ञ थे।

उस्ताद अमीनुद्दीन डागर और उनके बड़े भाई स्वर्गीय नसीर मोइनुद्दीन डागर ने ध्रुपद शैली को पुनः स्थापित किया, उसे नया रूप दिया तथा लोकप्रिय बनाया जोकि 19वीं शताब्दी के चौथे दशक तक समाप्त हो गई थी।

डागर भाईयों के रूप में एक साथ प्रदर्शन करते हुए, उन्होंने ध्रुपद को उस सम्मान तक पहुंचाया, जो उसे आज प्राप्त है। अब अकेले ही, उस्ताद अमीनुद्दीन डागर अपने मिशनरी उत्साह से ध्रुपद का प्रचार जारी रखे हुए हैं।

THE RECLUSE

Hindi/colour/130 min.

Producer/Director/Screenplay Writer: Arvind Sinha **Cinematographer:** Ashim Bose **Editor:** Rabiranjan Maitra

Doyen of the Dagar Vani style of Dhrupad, Ustad Nasir Aminuddin Dagar was born in 1923 at Indore into an illustrious family of musicians. His father, the great Nasiruddin Khan Dagar, was the chief court musician of the Holkars of Indore.

Ustad Aminuddin Dagar and his elder brother the late Nasir Moinuddin Dagar revived, rejuvenated and popularised Dhrupad, which had almost become extinct by the 1930s.

Performing together as the Dagar Brothers, they raised Dhrupad to the prestige it enjoys today. Now alone, Ustad Aminuddin Dagar continues to propagate Dhrupad with missionary zeal.

साऊन्ड आफ द डाईंग कलरज़

असमिया/रंगीन/47 मिनट
निर्माता: पारन बारबरुआ **निर्देशक/संगीत निर्देशक/पटकथा लेखक:** शेर चौधरी **छायाकार:** मृणाल कांति देव **छवनि-आलेखन:** सी. आनन्द **संपादक:** श्रीकर प्रसाद

फ़िल्म में असम की कुछेक जनजातियों के परंपरागत जीवन-ढंग, बुनाई और धातु, बांस, केन तथा लकड़ी के हस्तशिल्प में उनके कला-कौशल को चित्रित किया गया है। वे जिन वस्तुओं का निर्माण करते हैं, वे रोजमर्रा के जीवन तथा विशेष समारोहों और उत्सवों में इस्तेमाल की जाती हैं, परंतु अब सरकारी अभिकरणों द्वारा उनके निर्यात की गुंजाइश का पता लगाया जा रहा है।

इन जनजातियों के पूर्व-वृत्तों को भी जैसा कि उनके जुबानी इतिहास से पता चलता है, फ़िल्म में बखूबी चित्रित किया गया है।

SOUND OF THE DYING COLOURS

Assamese/colour/47 min.

Producer: Paran Barbarooah **Director/Music Director/Screenplay Writer:** Sher Choudhury **Cinematographer:** Mrinal Kanti Deb **Audiographer:** C. Anand **Editor:** Sreekar Prasad

The film documents the traditional lifestyle of some of the tribes of Assam, and their skills in weaving and in metal, bamboo, cane and wood craft. The things they make are used in daily life and for special ceremonies and celebrations, but the scope for export is now being explored by some government agencies.

The antecedents of the tribes as revealed in their oral history are also highlighted in the film.

सुचित्रा मित्रा

बंगला/रंगीन/58 मिनट
निर्माता: सैलेन सेठ **निर्देशक:** राजा सेन
छायाकार: सौमेन्दु रे

फ़िल्म में सुचित्रा मित्रा का घर पर और उसके कार्य-स्थान पर प्रतिबिंब प्रदर्शित किया गया है, जिसमें एक साहित्यिक परिवार में बिताए गए उनके बचपन, शांति निकेतन में उनकी संगीत-शिक्षा, 19वीं शताब्दी के दुर्दांत पांचवें और छठे दशकों में कलकत्ता के मूलभूत साहित्यिक आंदोलन में उनकी भूमिका, उनके व्यक्तिगत संतापों तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर के गीतों के समृद्ध-संग्रह के प्रति उनके हमेशा बने रहने वाले समर्पण-भाव का पर्दे पर सजीव चित्रण मिलता है।

गायिका के अपने गीत भी उनके जीवन की अपनी अनुभूतियों, झलकियों और वृत्तांतों के ताने-बाने में गूंथे हुए हैं। फ़िल्म में ध्वनि, आवाज़, प्रतिबिंब तथा गीत, हमारे युग के प्रधान कलाकार की हृदयस्पर्शी छाप छोड़ते हैं।

SUCHITRA MITRA

Bengali/colour/58 min.

Producer: Sailen Seth **Director:** Raja Sen **Cinematographer:** Soumendu Ray

The film offers an image of Suchitra Mitra at home and at work, recounting on and off screen a childhood spent in a literary family, her musical education in Shantiniketan, her involvement in the radical cultural movements in Calcutta in the turbulent forties and fifties, her personal agonies, and her dedication throughout to the rich corpus of the songs of Rabindranath Tagore.

The singer's own songs are woven through the narrative, along with her recollections and glimpses of her life. The sounds, voices, images, and above all the songs add up to a moving impression of a major artiste of our times.

सुनो बहु रानी

हिंदी/रंगीन/14 मिनट

निर्माता: ओमप्रकाश शर्मा **निर्देशक:** कृष्ण कपिल **पटकथा लेखक:** सरोजिनी प्रीतम **छायाकार:** सुनील विरमानी **ध्वनि आलेखक:** मनोहरन **संपादक:** पांडुरंग रेवांकर **संगीत निर्देशक:** बरुन कुमार गुप्ता

फ़िल्म में कठपुतलियों के माध्यम से गर्भनिरोधक माला-डी का प्रचार किया गया है और महिलाओं को 21 वर्ष की उम्र से पहले बच्चे न पैदा करने की सलाह दी गई है।

SUNO BAHU RANI

Hindi/colour/14 min.

Producer: Omprakash Sharma **Director:** Krishna Kapil **Screenplay Writer:** Sarojni Pritam **Cinematographer:** Sunil Virmani **Audiographer:** Manoharan **Editor:** Pandurang Revankar **Music Director:** Barun Kumar Gupta

The film promotes through the use of puppets the contraceptive Mala-D, to allow women to postpone having children until the age of twenty-one.

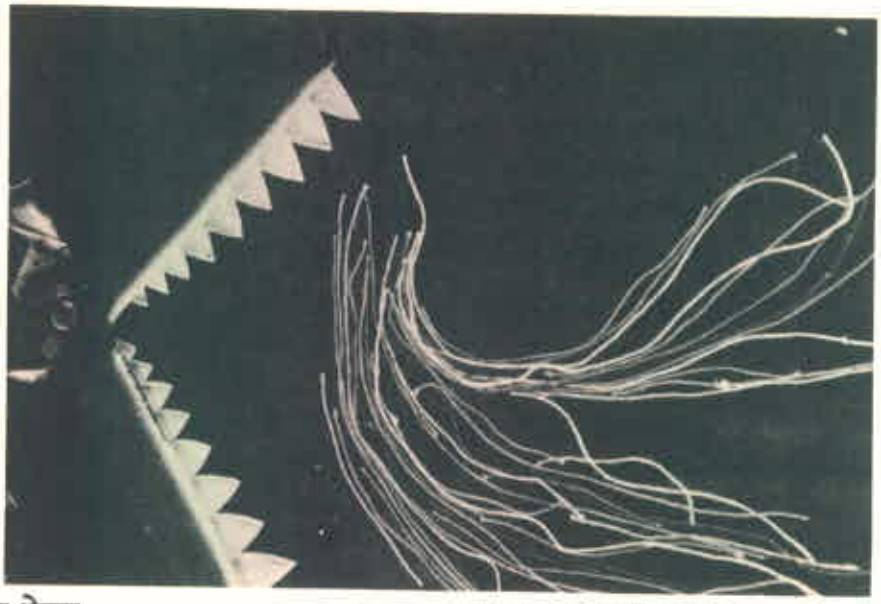

द थ्रेडज

रंगीन/3.5 मिनट

निर्माता: बी. आर. शेंडगे **निर्देशक/कार्टूनकार:** गिरीश राव **छायाकार:** रवि पटेल **संगीत निर्देशक:** के. नारायणन्

इस कार्टून फ़िल्म में विभिन्न रंगों के धागे परस्पर झगड़ते हैं। भय को पेश करते हुए, कैंची उनके अलग-अलग रहने का फ़ायदा उठाती है और धागों को खत्म कर देना चाहती है। धागे, अंततोगत्वा अपनी कमजोरी को पहचान लेते हैं और इक्ट्ठे हो जाते हैं, जिससे एक मजबूत सफेद कपड़ा बनता है, जो शांति का द्योतक है। कपड़ा कैंची के मुंह को ढक देता है और इस प्रकार एकता की आतंकवाद पर विजय होती है।

THE THREADS

Colour/3.5 min.

Producer: B.R. Shendge **Director/Animator:** Girish Rao **Cinematographer:** Ravi Patil **Music Director:** K. Narayanan

The threads of different colour in this animated film fight among themselves. The scissors, representing terrorism, take advantage of their disunity and try to finish the threads. The threads ultimately realise their individual weakness and unite to form a strong white cloth which represents peace. The cloth covers the mouth of the scissors and thus unity overcomes terrorism.

टुवर्डस ज्वाय एंड फ्रीडम

अंग्रेजी/रंगीन/41 मिनट
निर्माता: एच. बी. प्रॉडक्शन **निर्देशक/पटकथा लेखक:** हेमन्ती बनर्जी **छायाकार:** हरि नायर **ध्वनि आलेखक:** पंकज सील **संपादक:** वासुंधरा फाल्के, योगेश माथुर **गायक:** शांति निकेतन के विद्यार्थी **छायाकार:** शांति निकेतन के नृत्य-शिक्षक

शिक्षा पर रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचारों का अनुसंधान कार्य डॉ. एच. वी. मुखर्जी द्वारा **एजुकेशन फार फुलनेस: ए स्टडी आफ द एजुकेशन थाट एण्ड एक्सपेरिमेंट आफ रवीन्द्रनाथ टैगोर** पर प्रकाशित पुस्तक में संकलित किया गया है। फ़िल्म टैगोर, शांतिनिकेतन और पुस्तक द्वारा प्रेरित है। फ़िल्म की शूटिंग वसंत ऋतु में शांतिनिकेतन कैम्पस में की गई।

कक्षाएं वट, आम, और सफेदे के वृक्षों के नीचे या खुले बरामदों में लगाई जाती हैं। दीवारों पर लगे हुए चित्रों तथा उत्कृष्ट प्रतिमाओं से बच्चों का सौन्दर्य बोध जागृत होता है और बढ़ता है। भूगोल का अध्ययन करने के लिए विद्यार्थी नदी का विचरण करते हैं, पत्तों के अध्ययन के लिए जंगलों में जाते हैं तथा मिट्टी के कटाव के बारे में जानकारी प्राप्त करने हेतु तंगघाटी में जाते हैं।

बसंत मेला, पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। बच्चे और बड़े पीले वस्त्र डालते हैं और कैम्पस में नृत्य करते हैं। रंग, गीत तथा नृत्य का दिन एक भव्य नृत्य-नाटिका के अभिनय से समाप्त होता है।

TOWARDS JOY AND FREEDOM

English/colour/41 min.

Producer: H.B. Production **Director/ Screenplay Writer:** Haimanti Banerjee **Cinematographer:** Hari Nair **Audiographer:** Pankaj Seal **Editors:** Vasundhara Phadke, Yogesh Mathur **Singers:** students of Shantiniketan **Choreographers:** dance teachers of Shantiniketan

Rabindranath Tagore's ideas on education were researched and published by Dr. H.B. Mukherji in **Education for Fulness.** The film has been inspired by Tagore, Shantiniketan and the book. It was shot on the Shantiniketan campus during the spring.

The classes are held under the banyans, mango trees or eucalyptus, or on open verandahs. The children's aesthetic sense is awakened and enhanced by the wall frescoes and the exquisite sculptures. The students wander in the river to study geography, enter the woods to study leaves and clamber down a ravine to learn about erosion.

The spring festival is a vital part of the curriculum. The children and adults, dressed in yellow, dance through the campus. The day of colour, song and dance culminates in a gorgeous dance drama.

वांगला-ए गारो फेस्टीवल

अंग्रेजी/रंगीन/60 मिनट
निर्माता/निर्देशक: बप्पा रे **छायाकार:** विवेक बनर्जी **ध्वनि आलेखक:** संजय चटर्जी **संपादक:** शान्तनु भौमिक

वांगला, मेघालय की गारो जाति का सबसे बड़ा त्यौहार है, जो सभी फसलों की कटाई के समय पड़ता है। गारो का जीवन फसल की बोआई तथा कटाई के मुख्य कृषिपरक समारोहों के चारों ओर घूमता है।

यह समारोह भव्य तथा शानदार होता है जिसमें सभी परिवार और गांव इक्ट्ठे होते हैं। यह प्रत्येक परिवार की आग तथा बल्ली की धार्मिक-रीतियों से शुरू होता है और धीरे-धीरे जोर पकड़ता है। फिर बड़े-बड़े ढ़ोलों, बांसुरियों, नगाड़ों तथा घड़ियालों के साथ नृतकों के जुलूसों के व्यापक समूह में बदल जाता है।

नृतक, कौड़ियों के बने गले के हारों, घनेश के पंखों तथा दुपट्टों से सजे हुए होते हैं।

यह फ़िल्म प्रकृति के साथ व्यक्तियों की परस्पर क्रिया का दृश्यात्मक विवरण प्रस्तुत करती है।

WANGALA—A GARO FESTIVAL

English/colour/60 min.

Producer/Director: Bappa Ray **Cinematographer:** Vivek Banerjee **Audiographer:** Sanjoy Chatterjee **Editor:** Shantanu Bhowmick

Wangala is the biggest festival of the matrilineal Garos of Meghalaya, coinciding with the harvest of all the crops. The life of the Garos centres around the chief agricultural functions of sowing and reaping the harvest through the Garos' slash-and-burn cultivation.

The festival is grand and splendorous, a coming together of families and villages. It begins with the individual family ritual of the fire and the pole. Gradually it builds up to a massive array of processions of dancers with large drums, flutes, horn trumpets and gongs. The dancers are adorned with cowrie head necklaces, hornbill features and sashes.

The film is a visual account of the individual's interaction with nature.